रूस की लोक कथाऐं–2

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Roos Ki Lok Kathayen-2 (Folktales of Russia-2)
Cover Page picture : Kremlin Star, Moscow
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Russia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

रूस की लोक कथाऐं-2 7

1 मधुमक्खी ज़ ज़ क्यों करती है 9

2 चॉद में एक लड़की 13

3 सफेद बतख 19

4 बहिन अल्योनुष्का और भाई इवानुष्का 29

5 मार्या मोरेवना 38

6 गरीब आदमी के रूबल 63

7 बतखों का बॅटवारा 75

8 फ़ेया का रथ 87

9 रुसलन और लुडमिला 92

10 पाताल की ज़ारेवनाज़ 102

11 ज़ार सुलतान की कहानी 136

12 बदकिस्मत वासिली 175

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

रूस की लोक कथाऐं–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

सारा रूस देश बहुत ठंडा है पर इसका उत्तरी हिस्सा तो बहुत ही ठंडा है। इसका उत्तरी हिस्सा टुण्ड्रा[1] कहलाता है और इसके साइबेरिया[2] नाम के क्षेत्र में आता है। यहॉ के कोणधारी वन बहुत मशहूर हैं। रूस की पूरी आबादी केवल चालीस मिलियन है और साइबेरिया की जनसंख्या तो बहुत ही कम है।

इस देश में समय के ग्यारह क्षेत्र हैं यानी इसके पूर्वी और पश्चिमी सीमा के समय में दस घंटे का अन्तर रहता है। जैसे कैनेडा और उत्तरी अमेरिका में समय के छह छह क्षेत्र हैं सो उनके पूर्वी और पश्चिमी समयों में पॉच पॉच घंटे का अन्तर है में चार घंटे का। जब रूस के पूर्वी सीमा पर शाम के छह बजे होते हैं तो इसकी पश्चिमी सीमा पर सुबह के आठ बजे होते हैं। डे लाइट सेविंग टाइम[3] भी जो कुछ देशों में दिन की रोशनी बचाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है वह यहॉ केवल मार्च **2011** से अक्टूबर **2014** तक ही इस्तेमाल किया गया था। उसके बाद इसे ख़त्म कर दिया गया। इस तरह से यह देश करीब करीब आधी दुनियॉ घेरे हुए है।

इसकी दूसरी ख़ास बात यह है कि इस देश में सब तरह की जलवायु पायी जाती है सिवाय उष्ण जलवायु[4] के। वह भी इसलिये कि इसका कोई हिस्सा उष्ण जलवायु के क्षेत्र में आ ही नहीं सकता।

रूस के तीन मुख्य शहर हैं – मास्को, सेन्ट पीटर्सबर्ग और व्लाडीवोस्टक[5]। इसमें दो नदियॉ बहुत प्रसिद्ध हैं – यूराल और वोल्गा। यूराल नदी यूराल पहाड़ से निकलती है और उत्तर में आर्कटिक सागर में जा कर गिरती है।[6] वोल्गा नदी यूरोप से आती है और रूस के काफी बड़े हिस्से से गुजरती हुई कैस्पियन सागर में गिर जाती है। इसमें दो मुख्य पहाड़ हैं – यूराल पर्वत और अल्टाई पर्वत। इसमें एक बहुत पुरानी मुख्य रेलवे लाइन जाती है जिसका नाम है ट्रान्स साइबेरियन रेलवे[7]। यह पूर्व से ले कर पश्चिम तक पूरे साइबेरिया में जाती है। यह दुनियॉ की सबसे लम्बी रेलवे लाइन है और अभी भी फैलती जा रही है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है जिसको रूस पूरे यूरोप को बेचता है।

तुम सोच रहे होगे कि रूस तो उत्तरी अमेरिका से बहुत दूर है पर ऐसा नहीं है। उत्तरी अमेरिका की एक स्टेट अलास्का जो कैनेडा देश के सुदूर पश्चिम में है और रूस का सुदूर पूर्वी किनारा जो अलास्का के पास है उनमें आपस में सबसे कम दूरी केवल ढाई मील है। इस तरह से रूस और उत्तरी अमेरिका तो भारत के दो गॉवों से भी ज़्यादा पास हैं।

---

[1] Tundra

[2] Siberia – is a district of Russia and its a region too which stretches from its Ural River in the West to Mongolia in the East.

[3] Daylight Saving Time (DST)

[4] Tropical Climate

[5] (1) Moscow is the capital. (2) St Petersburg (later known as Petrograd and Leningrad) is a port city on Baltic Sea. It is a European kind of most modern city of Russia. (3) Vladivostok

[6] Ural River comes out from Ural Mountains and falls in Arctic Sea in North.

[7] Trans-Siberian Railway is a network of railways connecting Moscow to Vladivostok with the Russian Far East and the Sea of Japan. With a length of 5,772 miles (9,289 kms), it is the longest railway line in the world. There are connecting branch lines into Mongolia, China and North Korea. It has connected Moscow with Vladivostok since 1916, and is still being expanded.

रूस की लोक कथाओं की एक पुस्तक हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं जिसमें कुछ लोक कथाऐं पुस्तकों[8] से ली गयी थीं और कुछ इन्टरनैट से। आशा है कि यह पुस्तक तुम्हें बहुत पसन्द आयी होगी।

अब यह दूसरी पुस्तक तुम्हारे हाथों में है — "रूस की लोक कथाऐं-2"। इसमें भी कुछ लोक कथाऐं पुस्तकों[9] से ली गयी हैं और कुछ इन्टरनैट से। आशा है कि यह पुस्तक भी तुम लोगों को उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी कि पहली वाली आयी थी। तो लो पढ़ो रूस की कुछ और लोक कथाऐं और आनन्द लो उनका।

संसार के सात महाद्वीप

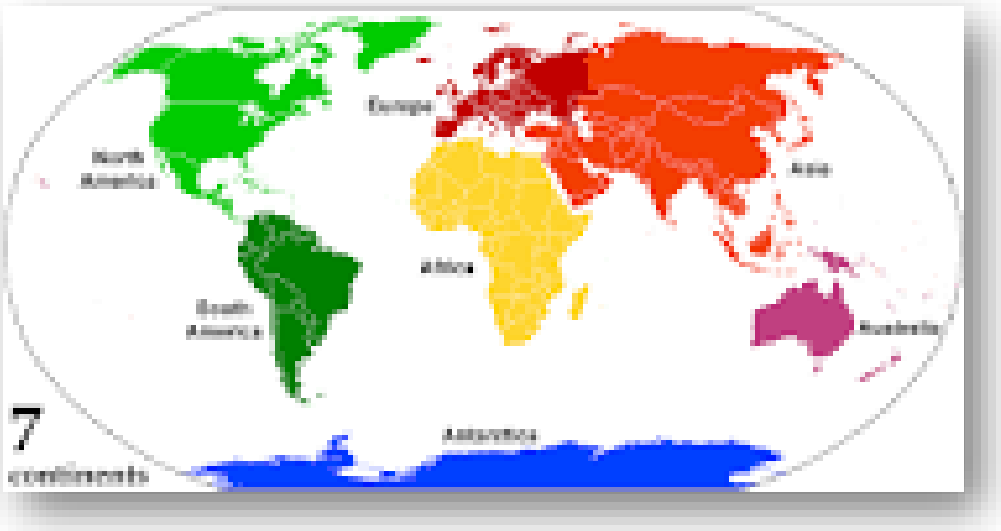

[8] Taken from the books -- (1) "Russian Folk-tales", Translated by James Riordan. OUP. 2000.
(2) "Russian Folk-tales", Translated by Robert Chandler. Random House. 1980.

[9] Taken from the books --
(1) "Russian Folk-tales", Translated by James Riordan. OUP. 2000.
(2) "Russian Folk-tales", Translated by Robert Chandler. Random House. 1980.

1 मधुमक्खी ज़ ज़ क्यों करती है[10]

यह लोक कथा एशिया के रूस देश के साइबेरिया[11] हिस्से में कही सुनी जाती है। यह बहुत पहले की बात है कि साइबेरिया के दक्षिण में स्थित अल्टाई पहाड़[12] पर एक सात सिर वाला राक्षस रहता था जिसका नाम था डैलबीजैन[13]।

वह इतना लम्बा था जितना कि किसी बड़े जंगल में उगने वालों पेड़ों में सबसे लम्बा पेड़। जब वह चलता था तो उसके पैरों के निशान इतने बड़े बनते थे कि जब उसके पैरों से बने गड्ढों में बारिश का पानी भर जाता था तो वे तालाब और झील जैसे दिखायी देते थे।

जब वह भूखा होता था तो उसके पेट के गुड़गुड़ाहट की आवाज बिजली की कड़क जैसी लगती थी। जब डैलबीजैन भूखा होता था तो बहुत सारे लोग उसके पास रहना पसन्द नहीं करते थे क्योंकि उसकी सबसे बड़ी कमजोरी भूख थी। उस समय उसको जो भी मिलता वह उसी को खा लेता था।

---

[10] How the Bee Got His Bumble – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=123
Retold and written by Mike Lockett.

[11] Siberia is an extensive geographical region, consisting of almost all of North Asia. Siberia has been part of Russia since the 17th century

[12] Altai Mountain is in Russia

[13] Delbegen – name of the 7-headed demon

वह कमर से नीचे झुक जाता और हिरन भालू और दूसरे जंगली जानवरों को खाने के लिये ढूँढने के लिये अपने हाथों से पेड़ों को हटाता। वह अपनी उँगलियाँ झीलों और नदियों के पानी में डाल कर खाने के लिये वहाँ से कुछ मछलियाँ निकालता।

लोगों का ऐसा विश्वास था कि डैलबीजैन ने कभी अपने पुराने दिनों में एक दो आदमी भी खाये थे।

एक दिन डैलबीजैन को कहीं से किसी बड़ी स्वादिष्ट चीज़ की खुशबू आयी। जब उसने इस खुशबू के लिये हवा में सूँघने की कोशिश की तो उसकी नाक से निकली हवा से जंगल के बहुत सारे पेड़ इधर उधर हिल गये।

वह उस खुशबू के पीछे पीछे चल दिया। यह खुशबू उसको एक खोखले पेड़ के पास ले गयी जिसमें शहद था। बस उसने वह पेड़ जड़ सहित उखाड़ा और उसका सारा शहद इस तरह पी गया जैसे बच्चे कैन्डी खाते हैं। फिर उसने वह पेड़ भी चबा लिया और उसको भी खा गया।

फिर उसने एक मधुमक्खी को अपनी उँगली के इशारे से बुलाया और उससे बोला — "मुझे मीठी चीज़ें बहुत अच्छी लगती हैं। जाओ और दुनियाँ के हर जीव को काटो और देखो किस जीव का माँस सबसे मीठा है।

जब तुमको पता चल जाये तो मेरे पास आ कर मुझे बताना। अब मैं अपना अगला खाना वही खाऊँगा जिसका मॉस सबसे ज़्यादा मीठा होगा।"

यह सुन कर वह मधुमक्खी राक्षस का हुक्म मानने चली गयी। उसने सबसे पहले एक कुत्ते को काटा। फिर उसने एक बिल्ली को काटा पर उन दोनों में से किसी का भी मॉस मीठा नहीं था।

फिर उसने एक गाय को काटा और एक घोड़े को काटा। उन का मॉस ठीक था पर मीठा नहीं था। फिर उसने सूअर खरगोश बकरे आदि बहुत सारे जंगली जानवरों को काटा। उनमें से कुछ के मॉस खुशबूदार तो जरूर थे पर उनमें से किसी का भी मॉस मीठा नहीं था।

फिर उसने एक आदमी को काटा। वह खुशी से चिल्ला कर बोली — "ओह तुम्हारा मॉस तो बहुत मीठा है। मैं अभी जा कर डैलबीजैन से कहती हूँ कि तुम्हारा मॉस दूसरे बहुत सारे जानवरों से बहुत मीठा है। वह अगली बार तुमको ही खायेगा।"

मधुमक्खी वहॉ से गाती हुई उड़ चली — "आहा आदमी सबसे मीठा है। आदमी सबसे मीठा है।"

आदमी ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के उस सात सिर वाले राक्षस से मत कहना कि मैं मीठा हूँ। मैं तुम्हारे खाने के लिये बहुत सारे फूल उगाऊँगा।

इसके अलावा मैं उस राक्षस की तरह से तुम्हारा सारा शहद भी नहीं लूँगा। मैं हमेशा उतना शहद तुम्हारे घर में छोड़ दूँगा जितना तुम्हारे परिवार के लिये काफी होगा।"

पर मधुमक्खी का गाना नहीं रुका। वह तो बस गाती ही रही गाती ही रही — "आहा आदमी सबसे मीठा है। आदमी सबसे मीठा है।"

उस आदमी की उसने एक न सुनी और वह यह गाती हुई सीधी राक्षस के पास पहुँची।

आदमी ने उस मधुमक्खी को तुरन्त ही पकड़ लिया और उसकी ज़बान उसके मुँह में से उखाड़ कर उसको छोड़ दिया। मधुमक्खी उड़ती हुई राक्षस के पास पहुँची।

मधुमक्खी को आया देख कर राक्षस ने उससे पूछा — "बताओ मधुमक्खी सबसे ज़्यादा मीठा मॉस किसका है?"

मधुमक्खी कहना चाहती थी कि आदमी का मॉस सबसे मीठा है पर उसके मुँह से केवल "ज़ ज़ ज़ ज़" की आवाज ही निकली। क्योंकि उसकी ज़बान तो आदमी ने पहले ही उखाड़ ली थी।

उसने बेचारी ने यह कहने की बहुत कोशिश की कि आदमी सबसे मीठा है पर उसके मुँह से ज़ ज़ ज़ ज़ की आवाज के अलावा और कुछ निकला ही नहीं। इस तरह मधुमक्खी अब केवल ज़ ज़ ज़ ज़ ही बोलती है और कुछ बोल ही नहीं सकती।

2 चॉद में एक लड़की[14]

रूस के साइबेरिया[15] प्रदेश की एक और लोक कथा। बहुत पहले की बात है कि यह दुखभरी घटना पूर्वी साइबेरिया के ठंडे देश टुंड्रा[16] में हुई थी। साइबेरिया की ठंडी रातों में आज भी कहानी कहने वाले एक छोटी लड़की की कहानी कहते हैं जो बेसहारा हो गयी थी।

यह लड़की एक छोटी सी झोंपड़ी में बिल्कुल अकेली रहती थी। उसके साथ कोई उसकी देखभाल करने वाला नहीं था। उसके पिता के पास एक पतला दुबला बूढ़ा सा घोड़ा था और एक बछड़ा था।

उसके पिता ने वह घोड़ा घर की कुछ चीज़ें खरीदने के लिये बेच दिया था पर बहुत जल्दी ही उसके बेचने से जो खाने का सामान और पैसा आया था दोनों ही खत्म हो गये।

फिर उसने अपना बछड़ा भी बेच दिया। इसके बाद वह खुद भी चल बसा। इस तरह वह लड़की अब बिल्कुल अकेली रह गयी।

---

[14] The Girl in the Moon – a folktale from Siberia, Russia, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=200
Retold and written by Mike Lockett.

[15] Siberia is an extensive geographical region, consisting of almost all of North Asia. Siberia has been part of Russia since the 17th century.

[16] Tundra is the type of biome where the tree growth is hindered by low temperatures and short growing seasons. The word "Tundra" usually refers only to the areas where the subsoil is permafrost or permanently frozen. Permafrost Tundra includes vast areas of Northern Russia and Canada.

लोगों ने पूछा — "अब लड़की का क्या करेंगे? हम उसको भूखा तो नहीं मार सकते।" पर फिर भी किसी ने उसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी नहीं ली।

आखिर गॉव के सरदार ने कहा — "मैं और मेरी पत्नी इस लड़की की जिम्मेदारी लेते हैं। वह हमारे लिये काम करेगी और हम उसके बदले में उसको अपना बचा खुचा खाना दे देंगे।"

यह सुन कर सबको बड़ी तसल्ली हुई। उन्होंने सोचा कि चलो इस लड़की की परेशानी तो किसी तरह अब खत्म हुई। उनको यह सुन कर अच्छा भी लगा क्योंकि उनमें से कोई भी उस लड़की की जिम्मेदारी लेना नहीं चाहता था।

सरदार ने लड़की के पिता का घर बेच दिया और उसके बेचने से जो पैसा आया वह उसने अपने पास उसको खाना खिलाने के बदले में रख लिया। वह लड़की जितना भी खाना खाती उसके बदले में उसको पूरा काम करना पड़ता।

वह खालों के पानी से भरे भारी भारी थैले ले कर जाती। वह आग जलाने के लिये लकड़ी काटती। वह गाय को चारा खिलाती और उसका दूध दुहती। उसको खेत पर भी बहुत भारी भारी काम करना पड़ता।

अगर वह कोई काम नहीं कर पाती तो सरदार से उसको उसके लिये डॉट सुननी पड़ती। सरदार की बेरहम पत्नी उसको मारती और उसको खाने के लिये पूरा खाना भी नहीं देती।

साइबेरिया की एक ठंडी रात को जब बर्फीली हवा सॉय सॉय कर के चल रही थी। जमीन भी इतनी ठंडी थी कि वह कई जगह से चटक गयी थी और कई जगह से ऊपर को उठ गयी थी।

पेड़ों की शाखें ठंड से जम गयीं थीं और हवा के ज़ोर से टूट टूट कर जमीन पर गिरने लगीं थीं। ऐसी ही एक रात को सरदार की पत्नी ने उस लड़की को कुछ और पानी लाने के लिये झील की तरफ भेजा।

ऐसे मौसम में कोई बहादुर से बहादुर आदमी भी साइबेरिया की अँधेरी ठंड में जाने की हिम्मत नहीं करेगा। पर इस लड़की के पास और कोई चारा नहीं था।

सो उस लड़की ने जो फटे कपड़े सरदार की पत्नी ने उसे पहनने के लिये दे रखे थे उन्हीं कपड़ों में जितनी अच्छी तरीके से वह अपने आपको लपेट सकती थी लपेटा।

फिर उसने एक भारी सी ईंट उठायी जो उस बर्फ को तोड़ने के काम आती जो जहाँ से लोग पानी लेते थे उस कुँए के ऊपर जम जाती थी और पानी लेने चल दी।

जब उसने उस ईंट से बर्फ तोड़ा तो पानी उछल कर उसके मुँह पर आ गिरा और वह ठंड से काँप गयी। ठंड उसको काट रही थी और ठंड से उसके बदन में दर्द हो रहा था।

लड़की ने जल्दी से खालें पानी में डुबो दीं और उनको पानी से जितनी जल्दी भरा जा सकता था भर लिया। इस बीच उसने ख्याल रखा कि कहीं उसके दस्ताने न भीग जायें।

फिर उसने वे भारी खालें एक लकड़ी के डंडे पर उठायीं जो उसके कन्धे पर रखा हुआ था। उस डंडे के दोनों किनारों पर एक एक खाल लटका ली। उसने अपना बोझा अपने कन्धे पर ठीक से रखा और दूर अपनी झोंपड़ी की तरफ चल दी।

जब वह जा रही थी कि हवा का एक तेज़ झोंका आया और उसको लगा तो वह तो लड़खड़ा कर वहीं गिर गयी। खालों में जो पानी भरा था वह जमीन पर बिखर गया और तुरन्त ही जम गया।

अगर वह बिना पानी के घर जाती तो उसको मार पड़ती और अगर वह झील पर पानी भरने के लिये दोबारा जाती तो वह ठंड से जम जाती। अब वह क्या करे? वह कहॉ जाये? वह रोने लगी और उसके ऑसू उसके गालों पर जमने लगे।

लडकी ने ऊपर चॉद की तरफ देखा और रो कर बोली — "ओ चॉद, तुम आओ और आ कर मुझे ले जाओ। मुझे अपनी रोशनी की गर्मी दो।

मेरी कोई मॉ नहीं है मेरा कोई पिता नहीं है। मुझे कोई प्यार करने वाला भी नहीं है मेरी कोई देखभाल करने भी वाला नहीं है। मुझे यहॉ से ले जाओ। ओ चॉद आओ।"

चॉद ने नीचे देखा तो उसने उस लड़की के ऑसू देखे। उसने उस लड़की को अनजाने में पहले भी कई बार देखा है कि वह कितनी सुन्दर है।

वह हमेशा ही यह सोचता रहता था कि यह कितनी दुखभरी बात है कि उस लड़की को कितना काम करना पड़ता है। सो चॉद नीचे आया और उसको उठा कर आसमान में ले गया।

इतने में सूरज ने भी उस लड़की की बात सुन ली तो सूरज बोला — "इस लड़की को मुझे दो दो। मैं इसको अपने लिये ले जाना चाहता हूँ।"

कुछ समय तक सूरज और चॉद इस बारे में आपस में बहस करते रहे कि उस लड़की को कौन ले। चॉद बोला — "तुम मुझसे बड़े हो और ज़्यादा ताकतवर हो। तुम मुझे आसानी से हरा सकते हो इसलिये तुम इसको ले जा सकते हो।

पर ज़रा यह तो सोचो कि मैं सारे साइबेरिया की ठंडी रातों में अकेला घूमता हूँ तो यह लड़की मेरे लिये अच्छी साथिन रहेगी। इसके अलावा तुम बहुत गर्म हो तुम उसको अपनी गर्मी से तकलीफ भी पहुँचा सकते हो।"

चॉद की बात से सूरज को यकीन हो गया कि चॉद को ही उस लड़की को रखना चाहिये सो उसने उसको चॉद के पास ही छोड़ दिया। चॉद ने उस लड़की को उठा लिया और अपने साथ ले गया।

साफ रातों में लोग चॉद को आज भी देख सकते हैं। लड़की भी नीचे सब लोगों को देख सकती है। कभी कभी वह लड़की लोगों में अच्छी बातें देखती है तो वह बहुत ज़ोर से मुस्कुराती है और उसका साथी चॉद भी बहुत चमकता है।

पर कुछ रातों में जब वह लड़की लोगों में बुरी बातें देखती है तो उन रातों में वह दुखी हो जाती है और अपना मुॅह छिपा लेती है। उन दिनों चॉद भी जो उसको बहुत प्यार करता है अपना मुॅह छिपा लेता है।

साइबेरिया के गॉवों में लोग इस कहानी को वहॉ की ठंडी रातों में कहते सुनते हैं और चॉद की तरफ इशारा कर के कहते हैं कि वहॉ एक लड़की है जो धरती पर दुखी रहती थी पर अब वह वहॉ खुश रहती है।

3 सफेद बतख[17]

एक बार की बात है कि रूस देश में एक राजकुमार रहता था जिसने एक बहुत सुन्दर राजकुमारी से शादी की थी। पर उसके पास इतना भी समय नहीं था कि वह उसकी तरफ देख सकता या उसकी कोई बात सुन सकता।

या फिर जब वह किसी यात्रा पर जा रहा होता उन हजारों बातों में से जो वह उससे कहना चाहता था केवल दो चार बातों से ज़्यादा कुछ कह ही नहीं पाता था।

उसको अपनी पत्नी को उन लोगों के हाथों मे छोड़ कर जाना पड़ता जो उसको जानते ही नहीं थे। और वह इसके बारे में कुछ कर भी नहीं सकता था।

जैसा कि लोग कहते हैं कोई भी पति पत्नी हाथ में हाथ डाले अपनी सारी ज़िन्दगी नहीं गुजार सकते सो एक बार राजकुमार को कहीं जाना पड़ा तो राजकुमारी बेचारी बहुत रोयी। राजकुमार ने उसको बहुत सारी अक्लमन्दी की बातें बतायीं।

उसने उससे कहा कि वह अपनी मीनार से नीचे न आये, अजनबियों से बात न करे और जो लोग उसकी तारीफ करें उनकी

[17] The White Duck – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book :
"Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.

बात भी न सुने। राजकुमारी ने कहा कि वह वैसा ही करेगी जैसा कि उसने उससे कहा था।

राजकुमार ने उसको विदा कहा और अपनी यात्रा पर चला गया। राजकुमारी ने अपने आपको अपने कमरे में बन्द कर लिया। महीनों बीत गये राजकुमारी किसी से कुछ भी नहीं बोली।

एक दिन जब राजकुमार वापस आने वाला था तो उससे ठीक पहले एक बुढ़िया उसी मीनार के नीचे से गुजरी।

उसकी बड़ी बड़ी सुन्दर ऑखें थी और बहुत ही दयालु चेहरा था। ऐसा राजकुमारी को लगा। पर सचमुच में वह एक बुरी जादूगरनी थी और वह खुद राजकुमारी बनना चाहती थी।

जादूगरनी ने राजकुमारी से कहा — "तुम तो वहॉ बैठे बैठे ऊब गयी होगी। तुम ताजा हवा लेने के लिये कुछ देर के लिये नीचे क्यों नहीं आ जातीं? हम लोग बागीचे में घूमने के लिये जायेंगे तो तुम्हारी उदासी दूर हो जायेगी।"

पहले तो राजकुमारी ने बहाने बनाये पर जब जादूगरनी ने उससे जिद की तो राजकुमारी मान गयी। उसको वहॉ से बागीचा भी बहुत ही ताजा, हरा और ठंडा लगा।

उसने सोचा कि अगर मैं इस बागीचे में थोड़ी देर घूम आऊॅगी तो मेरा क्या नुकसान हो जायेगा। सो वह अपनी मीनार से नीचे उतर आयी।

बागीचे में वसन्त आया हुआ था और वहॉ के तालाब का पानी बिल्कुल साफ था।

जादूगरनी बोली — "आज दिन कितना गर्म है और इस गर्मी में यह पानी कितना अच्छा लग रहा है। चलो इसमें तैरते हैं।"

राजकुमारी बोली — "नहीं नहीं।"

पर उसने फिर उस ठंडे साफ पानी की तरफ देखा और सोचा कि इस ठंडे पानी में थोड़ी देर तैरने से मुझे क्या नुकसान पहुॅच सकता है। यह सोच कर उसने अपने कपड़े उतारे और उस पानी में कूद गयी।

वह जादूगरनी भी पानी में कूद गयी और उसने राजकुमारी की कमर पर थपथपाया और बोली — "अगर तुमको तैरना इतना ही अच्छा लगता है तो तुमको तो बतख होना चाहिये था।"

बस, जादूगरनी के यह कहते ही राजकुमारी तो एक बतख बन गयी और जादूगरनी ने राजकुमारी का रूप रख लिया। उसने राजकुमारी की पोशाक पहनी, उसके गहने पहने और राजकुमारी के कमरे में चली गयी। वहॉ बैठ कर वह राजकुमार के आने का इन्तजार करने लगी।

कुछ ही देर बाद कुत्ता भौंका और घंटी बजी तो वह जादूगरनी दौड़ कर नीचे आयी और आ कर राजकुमार से लिपट गयी। राजकुमार को यह पता ही नहीं चला कि कहीं कुछ गड़बड़ थी। उसने सोचा कि वह उसकी ही पत्नी थी या कोई और।

उधर सफेद बतख बनी राजकुमारी ने तीन अंडे दिये और उनमें से तीन बतख के बच्चे निकले। पहले दो बच्चे तो अच्छे ताकतवर थे पर तीसरा बच्चा कुछ कमजोर, बीमार और छोटा था। उसने अपने तीनों बच्चों की ठीक से देखभाल की।

कुछ हफ्तों में ही वे गोल्डफिश पकड़ना, छोटे छोटे कपड़े इकट्ठा करना, उनसे अपने लिये सुन्दर कोट सिलना, किनारे पर कूदना और घास के मैदानों में घूमना सीख गये।

मॉ उनको बराबर कहती रही — "बहुत दूर मत जाना मेरे बच्चों। वहॉ खतरा है।"

पर तीनों बच्चों ने सुना नहीं। एक दिन वे किनारे पर खेल रहे थे, तो अगले दिन वे राजकुमार के बागीचे में खेल रहे थे और तीसरे दिन तो वह उसके ऑगन में ही जा पहुॅचे।

जादूगरनी को मालूम था कि वे कौन थे। उसने गुर्रा कर अपने दॉत उनमें गड़ा दिये। फिर उसने अपनी सबसे मीठी आवाज में उनको अपने पीछे आने को कहा। उसने उनको कुछ खाने पीने को दिया और फिर उनको बिस्तर में सुला दिया।

इसके बाद वह रसोईघर में गयी और वहॉ अपने नौकरों को अपने चाकू तेज़ करने के लिये, आग जलाने के लिये और पानी गर्म करने के लिये कहा।

दोनों बड़े ताकतवर भाई तो तुरन्त ही सो गये पर उस छोटे भाई को ठंडा लग रहा था। अक्सर उसके भाई उसको अपने पंखों के नीचे सुलाया करते थे पर इस बार उन्होंने इस बारे में सोचा ही नहीं। शायद उनको नींद जल्दी आ गयी थी।

जब आधी रात हुई तो वह जादूगरनी दरवाजे के पास आयी और बोली — "ओ छोटे बच्चों क्या तुम सो गये?"

तो उसको एक बहुत ही धीमी सी आवाज सुनायी दी —

हम सो गये हैं और हम नहीं सोये हैं हम एक अजीब सपना देख रहे हैं
हमको लग रहा है कि हमको मार डाला गया है
आग तो पहले से जल ही रही है तॉबे के बर्तन में पानी भी पहले से ही उबल रहा है
लोहे के चाकू पहले से ही तेज़ किये जा चुके हैं

यह सुन कर जादूगरनी वहॉ से चली गयी।

उसकी आलमारी में एक लाश का एक हाथ रखा था। वह अगर उस हाथ को किसी सोये हुए आदमी के ऊपर रख देती थी तो जो आदमी सो रहा होता था वह फिर कभी नहीं जाग सकता था पर अगर वह हाथ उसके ऊपर रखती जो जाग रहा होता था तो उसके ऊपर वह हाथ काम नहीं करता था।

एक घंटे बाद वह फिर आयी और पूछा — "ओ छोटे बच्चों क्या तुम सो गये?"

उसको फिर से एक बहुत ही धीमी सी आवाज सुनायी दी —

हम सो गये हैं और हम नहीं सोये हैं हम एक अजीब सपना देख रहे हैं
हमको लग रहा है कि हमको मार डाला गया है
आग तो पहले से जल ही रही है तॉबे के बर्तन में पानी भी पहले से ही उबल रहा है
लोहे के चाकू पहले से ही तेज़ किये जा चुके हैं

जादूगरनी ने सोचा कि यह केवल एक ही आवाज क्यों आ रही है?

उसने दरवाजा खोल कर अन्दर झॉका तो देखा कि दो भाई तो गहरी नींद सो रहे थे सो उसने उस लाश के हाथ को उन दोनों भाइयों के ऊपर कर दिया तो वे दोनों तो उसी समय मर गये पर तीसरा भाई एक घंटे बाद ठंड से जम कर मर गया।

इस बीच मॉ बतख ने अपने बच्चों को पुकारा तो उसे उसकी पुकार का कोई जवाब नहीं मिला। उसको कुछ कुछ लगने लगा कि क्या हुआ होगा सो वह उड़ कर सीधी महल के ऑगन में जा पहुॅची।

उसके बच्चे एक लाइन में मरे पड़े थे। वे सब इतने सफेद दिखायी दे रहे थे जैसे सफेद रूमाल और इतने ठंडे थे जितने कि पत्थर। मॉ बतख ने उनके ऊपर अपने पंख फैलाये और रोने लगी —

क्वा क्वा ओ छोटे बच्चो, क्वा क्वा मेरे प्यारे बच्चो
मैं रात को सोई नहीं, मैंने तुमको पीने के लिये अपने ऑसू दिये
मैंने तुमको खाने के लिये सबसे बढ़िया मछली दी
मैंने तुम्हारी हर जरूरत को ध्यान में रखा

ये शब्द राजकुमार के कानों में पड़े तो वह अपनी जादूगरनी पत्नी से बोला — "देखो बाहर एक बतख है जो बात करना जानती है।"

तो उसकी जादूगर पत्नी बोली — "तुमको क्या हो गया है? तुम जरूर ही कोई सपना देख रहे होगे। पहली बात तो बतख वहॉ होनी ही नहीं चाहिये और अगर है भी तो उसको वहॉ से बाहर निकलवा दो।"

सो राजकुमार ने अपने एक नौकर को बुलाया और उससे कहा कि वह उस बतख को वहॉ से बाहर निकाल दे। नौकर ने ऐसा ही किया पर वह बतख उड़ कर फिर वहीं आ गयी और फिर गाने लगी —

क्वा क्वा ओ छोटे बच्चों, क्वा क्वा मेरे प्यारे बच्चों
एक बूढ़ी जादूगरनी एक बेरहम सॉपिन एक बुरी जादूगरनी ने तुमको मार दिया है
उसने तुमको तुम्हारे पिता से अलग कर दिया है
उसने मुझको मेरे पति से अलग कर दिया है
उसने हमको सफेद बतखों में बदल दिया है
वह महल में है जबकि हम तालाब में तैरते हैं

यह सुन कर राजकुमार ने सोचा — "हूँ, मैं बाहर जा कर देखता हूँ कि यह सब क्या है।"

उसने अपने दो नौकरों से कहा कि वे उस बतख को पकड़ कर लायें। पर जब वे उसको पकड़ने के लिये गये तो वह तो उनकी पकड़ में ही नहीं आयी।

यह देख कर राजकुमार उसको पकड़ने के लिये खुद गया तो वह बतख तो खुद ही उसके हाथों में आ गयी। उसने बतख को उसके पंखों से पकड़ लिया।

यह देख कर जादूगरनी ने राजकुमारी को एक तकली[18] में बदल दिया। राजकुमार ने उस तकली को दो हिस्सों में तोड़ दिया। उसने उसका एक हिस्सा अपने कन्धे पर से पीछे की तरफ फेंक दिया और दूसरा हिस्सा अपने सामने की तरफ फेंक दिया और बोला —

ओ मेरे पीछे वाले हिस्से तुम एक सफेद बिर्च का पेड़ बन जाओ
और आगे वाले हिस्से तुम एक सुन्दर लड़की बन जाओ

जैसे ही उसने यह कहा तो उसके पीछे वाला हिस्सा सफेद बिर्च का पेड़ बन गया और आगे वाला हिस्सा एक बहुत ही सुन्दर लड़की बन गया। यह सुन्दर लड़की और कोई नहीं उसकी अपनी पत्नी थी।

वह तुरन्त ही राजकुमार के गले लग गयी और उसको अपनी सारी कहानी सुनायी।

[18] Translated for the word “Spindle”. See its picture above.

अब वे सोचने लगे कि वे किस तरह से अपने बच्चों को ज़िन्दा करें। सो उन्होंने एक मैना[19] पकड़ी। उसकी दोनों टॉगों में उन्होंने शीशे की एक एक नली बॉधी और उसमें से एक नली में उसको "ज़िन्दगी का पानी" लाने के लिये कहा और दूसरी नली में "बात करने वाला पानी" लाने के लिये कहा।

मैना ने वैसा ही किया। उन्होंने बच्चों को ज़िन्दा करने के लिये उनके ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़क किया। उन बच्चों ने अपनी ऑखें खोल दीं।

फिर उन्होंने उनके ऊपर बातें करने वाला पानी छिड़का तो उन्होंने बात करना शरू कर दिया। उसके बाद उन्होंने उनको तीन लड़कों में बदल दिया। माता पिता और उनके तीनों लड़के खुशी खुशी रहने लगे।

जहॉ तक उस जादूगरनी का सवाल था राजकुमार ने उसको दो घोड़ों की पूँछ से बॅधवा दिया और वे घोड़े उसको ले कर खींचते हुए मैदानों में से हो कर भाग निकले।

इस तरह से उसका सिर टूट गया और वह एक कटे हुए पेड़ के तने में बदल गया।

बहुत सारी चिड़ियें उसके मॉस के ऊपर आ कर बैठ गयीं। तेज़ हवाऐं उसकी हड्डियॉ उठा कर ले

[19] Translated for the word "Magpie". See its picture above.

गयीं और अब वहॉ उसका कोई नामो निशान या याद भी नहीं बची है।

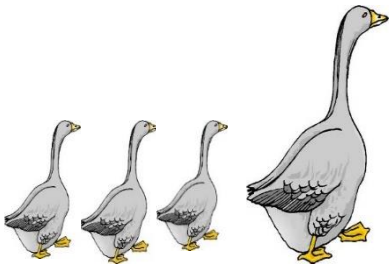

4 बहिन अल्योनुष्का और भाई इवानुष्का[20]

अल्योनुष्का और उसके भाई इवानुष्का के माता पिता नहीं थे और उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं था सो वे गॉव गॉव घूमते और हर रात उनको एक नयी जगह सोना पड़ता था।

यह कहानी गर्मी के मौसम के एक गर्म दिन से शुरू होती है। सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था और दिन बहुत गर्म था। मीलों तक पानी का कोई कुॅआ नहीं था।

इवानुष्का को बहुत पसीना आ रहा था और वह प्यासा भी बहुत था। वह बोला — "बहिन अल्योनुष्का, मुझे बहुत प्यास लगी है।"

अल्योनुष्का बोली — "थोड़ा धीरज रखो भैया। हम लोग जल्दी ही किसी पानी के कुॅए के पास आ जायेंगे।"

कुछ देर बाद वे एक तालाब के पास आ पहुॅचे। उसके पास गायों का एक झुंड चर रहा था। इवानुष्का बोला — "बहिन अल्योनुष्का, मैं तो इस तालाब से पानी पी रहा हूॅ।"

अल्योनुष्का बोली — "नहीं भैया। यहॉ से पानी मत पीना। यहॉ पानी पियोगे तो तुम बछड़ा बन जाओगे।"

[20] Sister Alyonushka and Brother Ivanushka – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book : "Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.

सो वे आगे बढ़ गये। सूरज और गर्म होता जा रहा था और दिन बहुत गर्म था। गर्मी बढ़ती जा रही थी। इवानुष्का को बहुत पसीना आ रहा था और वह प्यासा भी बहुत था।

कुछ दूर चलने के बाद वे एक नदी के पास आये जहॉ बहुत सारे घोड़े घास खा रहे थे। इवानुष्का बोला — "बहिन अल्योनुष्का, मैं यहॉ पानी पीना चाहता हूॅ। मुझे बहुत प्यास लगी है। अब मुझसे और रहा नहीं जाता।"

अल्योनुष्का बोली — "नहीं भैया यहॉ भी नहीं। अगर तुम यहॉ पानी पियोगे तो तुम घोड़ा बन जाओगे।"

सो वे फिर आगे चल दिये। सूरज और गर्म होता जा रहा था। इवानुष्का को बहुत पसीना आ रहा था और वह प्यासा भी बहुत था पर अभी तक कहीं कोई कुॅआ ही दिखायी नहीं दे रहा था।

चलते चलते वे एक झील के पास आये। वहॉ बहुत सारे बकरे घास खा रहे थे।

इवानुष्का बोला — "बहिन अल्योनुष्का, मुझे बहुत प्यास लग रही है अब मैं और नहीं रुक सकता। मैं तो अब यहीं पानी पीना चाहता हूॅ।"

अल्योनुष्का बोली — "नहीं भैया तुम यहॉ पानी मत पियो अगर तुम यहॉ पानी पियोगे तो तुम मेमना[21] बन जाओगे।"

[21] Translated for the word "Kid" – child of a goat

पर इस बार इवानुष्का ने उसकी नहीं सुनी और जा कर झील में से पानी पी लिया। पानी पीते ही वह एक मेमना बन गया।

अल्योनुष्का वहीं बैठ गयी और रोने लगी। वह बकरा चारों तरफ घूम घूम कर में में करने लगा और अपनी बहिन के साथ खेलने की कोशिश करने लगा।

जब अल्योनुष्का काफी रो चुकी तो वह उठी, उसने सिल्क की एक रस्सी उस बकरे के गले में बॉधी और उसको ले कर आगे चली।

एक दिन वह बकरा बिना रस्सी के इधर उधर घूम रहा था कि वह ज़ार[22] के बागीचे में घुस गया। अल्योनुष्का भी उसके पीछे पीछे उस ज़ार के बागीचे में चली गयी।

ज़ार के एक नौकर ने यह सब देखा और जा कर ज़ार को बताया। उसने उससे यह भी कहा कि उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वह लड़की तो परियों की कहानियों की लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

ज़ार ने उसको यह जानने के लिये भेजा कि उससे पूछो कि वह लड़की कौन है।

जब वह नौकर अल्योनुष्का के पास गया और उससे पूछा कि वह कौन है तो वह बोली — "मैं अल्योनुष्का हूॅ। मेरे एक भाई है

[22] Tsar or Tzar – title of the King in Russia before 1917

उसका नाम इवानुष्का है। हमारे माता पिता मर गये हैं और हमारे पास रहने के लिये कोई जगह नहीं है।

एक बार हम मैदानों से गुजर रहे थे कि हम एक झील के पास आये। वहॉ बहुत सारे बकरे चर रहे थे। मेरे भाई ने उस झील का पानी पी लिया और फिर वह एक बकरे में बदल गया।"

नौकर वापस ज़ार के पास गया और जा कर उसको वह सब बताया जो कुछ उस लड़की ने उससे कहा था। ज़ार ने उससे कहा कि वह उस लड़की को और उसके भाई को उसके पास ले कर आये।

जैसे ही उसने अल्योनुष्का को देखा तो वह उसे पसन्द करने लगा। कुछ मिनट बाद ही उसने अल्योनुष्का से शादी के लिये कहा — "तुम मुझसे शादी कर लो। तब तुम सोना और चॉदी पहन सकोगी और फिर जहॉ भी हम जायेंगे तुम्हारा यह बकरा भी हमारे साथ ही रहेगा।"

अल्योनुष्का तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। उसी शाम को उनकी शादी हो गयी और अल्योनुष्का, ज़ार और वह बकरा खुशी खुशी साथ साथ रहने लगे।

वह बकरा बागीचे में कहीं भी जाने के लिये आजाद था। वह ज़ार और अपनी बहिन के साथ उसी मेज पर खाता पीता था जिस पर वे लोग खाते पीते थे।

अच्छे लोग तो ऐसा अच्छा परिवार देख कर बहुत खुश थे पर बुरे लोग यह देख कर बहुत जल रहे थे।

एक दिन ज़ार शिकार खेलने गया तो उसके पीछे से वहॉ एक अजनबी स्त्री आयी। वह एक बुरी जादूगरनी थी पर उसकी जबान बहुत मीठी थी। और जब वह चाहती थी तो वह बहुत सुन्दर बन जाती थी।

वह खुद ज़ार की पत्नी बनना चाहती थी सो उसने एक सुन्दर स्त्री का रूप रखा और अल्योनुष्का को अपने साथ बाहर समुद्र के किनारे घूमने के लिये बुलाया। फिर वह उसको एक पहाड़ की चोटी पर ले गयी। वहॉ जा कर उसने उसकी गर्दन से एक भारी पत्थर बॉध कर उसको समुद्र में धक्का दे दिया।

फिर उस जादूगरनी ने कुछ जादू किया और अपने आपको अल्योनुष्का में बदल लिया। वह वापस महल में चली गयी। सबने सोचा कि यह तो अल्योनुष्का है। उन्होंने उस पर कोई शक नहीं किया। जब ज़ार शिकार से वापस आया तो उसको भी नकली अल्योनुष्का पर कोई शक नहीं हुआ।

केवल एक बात अलग थी और वह यह कि बागीचे में सारे फूल मुरझाने लगे थे, पेड़ सूखने लगे थे और घास भी बहुत कम रह गयी थी।

और इसमें तो कोई शक ही नहीं था कि वह बकरा यह सब जानता था कि ज़ार के पीछे क्या हुआ था। उस दिन से उस बकरे

ने तो खाना पीना ही छोड़ दिया था। वह सारा दिन बस समुद्र के आस पास ही घूमता रहता और रोता रहता।

जादूगरनी को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। अगली बार जब ज़ार शिकार के लिये गया तो उसने बकरे को उसके कानों से पकड़ कर उसे खूब मारा।

जब वह उसको मन भर कर मार चुकी तो उसने उसके सामने अपनी मुट्ठी हिलायी और बोली — " ज़रा तू इन्तजार कर जब तक ज़ार आता है। मैं उससे तेरा गला कटवाती हूँ।"

जैसे ही ज़ार शिकार से वापस आया तो जादूगरनी उसके पास गयी और गुस्सा हो कर बोली — "मुझे तुम्हारा यह बकरा मरवाना है। मैं इसको अब एक ऑख नहीं देख सकती।"

ज़ार को यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि अल्योनुष्का उस बकरे को क्यों मरवाना चाह रही थी क्योंकि वह बकरा तो उसका अपना भाई था, न कि ज़ार का भाई था और अब तक तो वह उसको बहुत प्यार करती रही थी।

वह उसे अपने हाथ से खाना खिलाती, अपने हाथ से पानी पिलाती और जहॉ भी जाती हमेशा उसको अपने साथ रखती और आज वह उसको मरवाने की बात कर रही थी। यह कैसे हुआ।

उसने अपने कन्धे उचकाये और कहा कि वह उसका भाई है वह जो चाहे करे उसकी मर्जी।

जादूगरनी ने नौकरों से कहा कि वे अपने चाकू तेज़ करें, तॉबे का बर्तन साफ करें और बड़ी सी आग जलायें।

बकरे ने महसूस किया कि अब उसकी ज़िन्दगी ज़्यादा नहीं है तो उसने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

वह ज़ार के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी, मैं ज़रा समुद्र के किनारे घूमने जाना चाहता हूॅ। मुझे बहुत प्यास लगी है। मैं अपनी तिल्ली धोना चाहता हूॅ।"

ज़ार ने हॉ कर दी तो बकरा समुद्र के किनारे दौड़ गया और वहॉ जा कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा —

अल्योनुष्का, ओ बहिन अल्योनुष्का
मुझे सहायता चाहिये तुम किनारे पर तैर कर आओ
उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी है उन्होंने एक तॉबे का बर्तन तैयार किया है
उन्होंने लोहे के चाकू तेज़ करवाये हैं बहुत जल्दी ही वे मेरा गला काटने वाले हैं

पानी में से अल्योनुष्का की बहुत ही हल्की सी आवाज आयी —

इवानुष्का, भाई इवानुष्का, एक बहुत बड़ा पत्थर मुझे यहॉ नीचे खींच रहा है
समुद्री घास के फन्दों ने मेरे पैर बॉध रखे हैं, एक सॉप ने मेरा दिल चूस लिया है

वह बकरा फिर रोया और महल वापस चला गया। पर बाद में वह फिर से समुद्र के किनारे वापस जाना चाहता था सो वह फिर से समुद्र के किनारे भागा और फिर ज़ोर से रोया —

अल्योनुष्का, ओ बहिन अल्योनुष्का मुझे सहायता चाहिये तुम किनारे पर तैर कर आओ
उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी है उन्होंने एक तॉबे का बर्तन तैयार किया है
उन्होंने लोहे के चाकू तेज़ करवाये हैं बहुत जल्दी ही वे मेरा गला काटने वाले हैं

पानी में से फिर से अल्योनुष्का की फिर एक बहुत हल्की सी आवाज आयी —

इवानुष्का, भाई इवानुष्का, एक बहुत बड़ा पत्थर मुझे यहॉ नीचे खींच रहा है
समुद्री घास के फन्दों ने मेरे पैर बॉध रखे हैं एक सॉप ने मेरा दिल चूस लिया है

वह बकरा बेचारा फिर बहुत ज़ोर से रोया और वापस महल दौड़ गया। शाम को वह फिर से एक बार, तीसरी बार, समुद्र के किनारे जाना चाहता था।

ज़ार को लगा कि यह सब क्या हो रहा था सो वह बकरे के पीछे पीछे गया। वहॉ उसने बकरे को रो कर कहते हुए सुना —

अल्योनुष्का, ओ बहिन अल्योनुष्का मुझे सहायता चाहिये तुम किनारे पर तैर कर आओ
उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी है उन्होंने एक तॉबे का बर्तन तैयार किया है
उन्होंने लोहे के चाकू तेज़ करवाये हैं बहुत जल्दी ही वे मेरा गला काटने वाले हैं

फिर उसने दूसरी आवाज सुनी —

इवानुष्का, भाई इवानुष्का, एक बहुत बड़ा पत्थर मुझे यहॉ नीचे खींच रहा है
समुद्री घास के फन्दों ने मेरे पैर बॉध रखे हैं, एक सॉप ने मेरा दिल चूस लिया है

बकरा रोता रहा और रोता रहा। उसकी आवाज में दर्द बढ़ता गया और बढ़ता गया।

कि अचानक अल्योनुष्का पानी में से उठ कर ऊपर सतह पर आयी। उसको देख कर ज़ार तुरन्त ही पानी में कूद पड़ा। उसके गले से पत्थर अलग किया और उसको किनारे पर ले आया।

किनारे पर आ कर अल्योनुष्का ने अपनी कहानी ज़ार को सुनायी। तीनों महल वापस गये। अल्योनुष्का के महल में आते ही बागीचे के फूल ताजा हो गये, पेड़ हरे हो गये और घास बहुत सारी और ताजा हो गयी।

बकरा तो इतना खुश हो गया कि वह तो बहुत देर तक कूदता ही रहा। वह तीन बार सिर के बल कूदा और फिर अल्योनुष्का का भाई इवानुष्का बन गया।

उस जादूगरनी को उसी आग में जला दिया गया जिसे वह अल्योनुष्का के भाई बकरे को पकाने के लिये जलवा रही थी। उसकी राख चारों तरफ बिखेर दी गयी।

उसके बारे में फिर किसी ने कभी कोई बात भी नहीं की। ज़ार, अल्योनुष्का और उसका भाई इवानुष्का फिर सब खुशी खुशी रहे।

5 मार्या मोरेवना[23]

मार्या मोरेवना रूस की एक बहुत ही मशहूर कहानी है। तो लो तुम अब इसे पढ़ो हिन्दी में।

एक बहुत दूर जगह में एक बहुत दूर देश में एक आदमी रहता था जिसका नाम था इवान ज़ारेविच[24]। उसके तीन बहिनें थीं – मैरी ज़ारेविच, ओल्गा ज़ारेविच और अन्ना ज़ारेविच[25]।

समय गुजरता गया और उनके माता पिता दोनों मर गये। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने अपने बेटे से कहा — "बेटा तुम अपनी बहिनों को उस पहले आदमी को दे देना जो सबसे पहले उनका हाथ मॉगे। उनको घर पर बिठा कर मत रखना।" इवान ने अपने माता पिता को दफ़न कर दिया।

एक दिन वह अपनी तीनों बहिनों के साथ बागीचे में घूमने के लिये गया।

अचानक एक काला बादल उनके सिर के ऊपर आ गया और उसके साथ ही बड़े ज़ोर का तूफान भी आ गया। इवान बोला — "जल्दी करो बहिनों हम लोगों को जल्दी ही अन्दर चलना चाहिये।"

---

[23] Marya Morevna – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Book :
"Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.

[24] Ivan Tzarevich – the name of a man – Tzarevich means "the child of Tzar"

[25] Mary Tzarevich, Olga Tzarevich ad Anna Tzarevich – the names of the three sisters of Ivan Tzarevich

जैसे ही वे महल में घुसे तो गरज की आवाज सुनायी दी। कमरे की छत फट गयी और एक चमकीला बाज़[26] कमरे में आ गया। वह सीधे फर्श पर गया और एक सुन्दर लड़ने वाले में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान ज़ारेविच। मैं पहले एक मेहमान की तरह से आया था पर अब मैं एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन मैरी ज़ारेविच का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान बोला — "अगर मेरी बहिन चाहती है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" मैरी राजी हो गयी। उस बाज़ ने मैरी से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

घंटों पर घंटे निकलते गये, दिनों पर दिन निकलते गये और फिर एक साल कब निकल गया पता ही नहीं चला।

एक बार फिर इवान और उसकी बहिनें बागीचे में घूमने गये। तो एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर बिजली चमकी। और एक बार फिर इवान अपनी बहिनों के साथ अन्दर महल में चला गया।

[26] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक गरुड़[27] उसमें से अन्दर घुसा। वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक बहुत सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहाँ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन ओल्गा का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले उम्मीदवार को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" ओल्गा राजी हो गयी। उस गरुड़ ने ओल्गा से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इसके बाद तीसरा साल निकल गया। इवान ने अपनी सबसे छोटी बहिन से कहा — "चलो, बागीचे में घूमने चलते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में घूमने चले गये। वे लोग थोड़ी ही देर वहाँ घूमे होंगे कि एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर एक बिजली चमकी। और एक बार फिर इवान अपनी बहिन अन्ना के साथ अन्दर महल में चला गया।

[27] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक रैवन[28] अन्दर आया।

वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया। पहले जो दो लड़ने वाले आये थे वे भी काफी सुन्दर थे पर वे इसके मुकाबले में कुछ भी नहीं थे।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहाँ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन अन्ना का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले दो उम्मीदवारों को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो तुम उससे शादी कर सकते हो। मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

अन्ना राजी हो गयी और उस रैवन ने अन्ना से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इवान अगले पूरे साल अकेला ही रहा सो वह दुखी हो गया। एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी बहिनों से मिल कर आता है। सो वह अपनी बहिनों से मिलने चल दिया। चलते चलते उसको एक बड़ा शानदार कैम्प दिखायी दे गया।

[28] Raven is a crow-like bird. See its picture above.

उस कैम्प की मालकिन मार्या मोरेवना[29] उससे मिलने के लिये बाहर आयी "गुड डे इवान ज़ारेविच। तुम कहॉ जा रहे हो? क्या तुम अपनी मर्जी से ऐसे ही जा रहे हो या फिर तुमको किसी चीज़ की जरूरत है?"

इवान बोला — "मैं एक आजाद आदमी हूॅ। मैं वही करता हूॅ जो मैं चाहता हूॅ।"

मार्या बोली — "तब तुम अन्दर आओ और मेरे साथ कुछ समय रहो।"

इवान खुशी से राजी हो गया। वह वहॉ दो रात रहा। मार्या को उससे प्रेम हो गया तो उन दोनों ने शादी करली। मार्या उसको अपने राज्य ले गयी। वे वहॉ कुछ समय तक खुशी खुशी रहे।

फिर मार्या को लड़ाई को लिये जाना पड़ा। उसने अपना सब कुछ इवान को सौंपा और बस इतना कहा — "तुम जहॉ भी जाना चाहो जाना, तुम जो कुछ भी देखना चाहो देखना पर एक चीज़ तुम कभी नहीं करना और वह यह कि इस भंडारघर का दरवाजा कभी नहीं खोलना।"

अब इवान तो ऐसा ही था जैसे हम सब लोग होते हैं सो जैसे ही मार्या वहॉ से गयी वह तुरन्त ही उस भंडारघर की तरफ भागा गया जिसका दरवाजा मार्या ने उसको खोलने से मना किया था। उसने उसका दरवाजा खोला और अन्दर झॉका।

[29] Marya Morevna – name of the wife of Ivan Tzarevich

वहॉ कोश्चेव लटका हुआ था जिसे कभी मौत नहीं आती[30]। वह वहॉ बारह लोहे की जंजीरों से बॅधा हुआ था।

कोश्चेव उसको देखते ही बोला — "मुझ पर दया करो। मुझे कुछ पीने के लिये दो। मैं यहॉ बिना खाना खाये और बिना पानी पिये दस साल से लटका हुआ हूॅ। मेरा गला तो बिना पानी के बिल्कुल रेगमार[31] हो गया है।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी ले कर आया और उसे पीने के लिये दिया। कोश्चेव ने उसे एक ही घूॅट में पी लिया और बोला — "मुझे एक बालटी से ज़्यादा पानी चाहिये। मुझे एक बालटी पानी और ले कर आओ।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी और ले आया। कोश्चेव उस पानी को भी पी गया। फिर उसने तीसरी बालटी पानी मॉगा। इवान ने उसको तीसरी बालटी पानी भी ला दिया।

जैसे ही उसने वह तीसरी बालटी पानी पिया तो उसकी सारी पुरानी ताकत वापस आ गयी। उसने अपना शरीर एक बार हिलाया और अपनी बारहों जंजीरें तोड़ दीं।

कोश्चेव बोला — "तुम बहुत दयालु हो। पर मुझे डर है कि अब तुम मार्या को फिर कभी नहीं देख सकोगे। तुम उसको उसी तरह नहीं देख सकोगे जैसे तुम अपने कान नहीं देख सकते।"

---

[30] Koshchev the Deathless – he was one of the friends of Baba Yaga

[31] Translated for the word "Sandpaper".

फिर वह हवा का एक झोंका बना और खिड़की से बाहर चला गया। उसने मार्या को ढूँढ लिया और उसको उठा कर अपने घर ले गया।

इवान बहुत रोया बहुत रोया। बाद में उसने अपने ऑसू पोंछे और अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ। दो दिन तक चलने के बाद तीसरे दिन सुबह वह एक बहुत ही बढ़िया महल के पास आया।

उस महल के पास एक ओक का पेड़[32] खड़ा था जिस पर एक चमकीला बाज़ बैठा था। इवान को देखते ही उस बाज़ ने उस पेड़ पर से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

आदमी बन कर वह बोला — "भाई साहब, आप कैसे हैं और दुनियॉ में क्या कुछ नया हो रहा है?"

इतने में राजकुमारी मैरी भी बाहर दौड़ी आ गयी। वह अपने भाई के गले लग गयी और उसका सारा हाल पूछने लगी कि वह कैसा रहा। फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान उसके घर तीन दिन रहा फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

[32] Oak Tree – a kind of large shady tree

बाज़ बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम यहाँ अपनी चाँदी की चम्मच छोड़ते जाइये। इससे हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपनी चाँदी की चम्मच वहाँ छोड़ दी और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। इवान फिर दो दिन चला और तीसरे दिन एक और सुन्दर महल के पास आया। यह महल उस पहले वाले महल से भी ज़्यादा सुन्दर था।

इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ था और इस पेड़ पर एक गरुड़ बैठा था। इवान को देख कर उसने भी वहाँ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

उसने आवाज लगायी — "ओ ओल्गा, जल्दी से बाहर आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

ओल्गा तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और अपने भाई को गले लगा कर उससे उसका हाल पूछा फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान यहाँ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

गरुड़ भी वही बोला जो बाज़ ने उससे कहा था — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपना चॉदी का कॉटा यहॉ छोड़ते जाइये शायद हमें इसकी कभी जरूरत पड़ जाये। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का कॉटा वहॉ छोड़ा और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला तो तीसरे दिन की सुबह को उसको फिर एक महल दिखायी दिया। यह महल उस दूसरे महल से भी ज़्यादा सुन्दर और शानदार था। इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ खड़ा था और इस ओक के पेड़ पर एक रैवन बैठा था।

रैवन ने इवान को देखा तो उसने भी पेड़ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया। वह ज़ोर से बोला — "अन्ना, यहॉ आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

अन्ना तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और भाई को गले लगाया और उससे उसका सारा हाल पूछा और फिर उसको अपना हाल बताया।

इवान यहॉ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

रैवन बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपनी चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा यहॉ छोड़ते जाइये। इसको देख कर हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चॉदी का सुँघनी वाला बक्सा वहॉ छोड़ा और उनको गुड बाई कह कर फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। वह फिर दो दिन चला।

तीसरे दिन की सुबह उसको मार्या मोरेवना मिल गयी। जैसे ही उसने इवान को देखा तो वह बहुत खुश हुई और खुशी के मारे रो पड़ी।

वह बोली — "इवान, तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी? तुमने उस भंडारघर का दरवाजा खोला ही क्यों और कोश्चेव को बाहर निकाला ही क्यों?"

इवान बोला — "मुझे माफ कर दो मार्या। पर अब उस बीती बात पर रोने से क्या फायदा। अब तुम बस मेरे साथ चलो, जल्दी से, इससे पहले कि कोश्चेव आ जाये।"

दोनों तैयार हुए और वहॉ से चल दिये। कोश्चेव उस दिन शिकार के लिये गया हुआ था। वह जब शाम को वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसका घोड़ा ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "अगर तुमको कोई खेत बोना हो, जैसे गेंहू का खेत, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उसके दानों का आटा बनाओ, फिर उस आटे की पॉच ओवन भर कर डबल रोटियॉ बनाओ, फिर उन डबल रोटियों को खाओ तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। उसने जल्दी ही इवान को पकड़ लिया।

उसने इवान से कहा — "मैं तुमको एक बार माफ कर सकता हूॅ क्योंकि तुमने एक बार मुझे पानी पिलाया था। मैं तुमको दोबारा भी माफ कर दूॅगा क्योंकि तुमने मुझे दूसरी बार पानी पिलाया था पर तीसरी बार मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूॅगा।"

कह कर उसने इवान से मार्या को लिया और उसको घर वापस ले आया। इवान बेचारा एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। वह वहॉ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा। कुछ देर बाद वह फिर से मार्या को लाने के लिये चल दिया।

कोश्चेव उस समय बाहर गया हुआ था। "चलो मार्या।"

"पर इवान वह हमको बहुत जल्दी पकड़ लेगा।"

"पकड़ लेता है तो पकड़ लेने दो। हम लोग कम से कम एक दो घंटे तो एक साथ गुजार लेंगे।" और वे दोनों वहॉ से फिर चल दिये।

शाम को जब कोश्चेव घर लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर गया।

कोशचेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

"क्या तुम उसको पकड़ सकते हो?"

"अगर तुमको जौ का खेत बोना हो, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उससे बीयर बनाओ, फिर उसको पी कर धुत हो जाओ फिर सोओ और तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। बहुत जल्दी ही उसने इवान को फिर से पकड़ लिया — "मैंने तुमको

पहले ही कहा था इवान कि तुमको मार्या को देखना इतना ही मुश्किल होगा जितना कि अपने कान देखना।"

इतना कह कर उसने मार्या को उठाया और उसको ले कर घर आ गया और इवान वहाँ फिर वहीं अकेला बैठा रह गया। वह फिर वहाँ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा।

पर एक बार फिर वह मार्या को लेने जा पहुँचा। इत्तफाक से उस बार फिर कोश्चेव शिकार के लिये गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान इस बार तो वह तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

"करने दो पर मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

सो वे फिर तैयार हुए और फिर वहाँ से चल दिये।

पर शाम को लौटते हुए कोश्चेव का घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

कोश्चेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और उसे दौड़ा कर

इवान को बहुत जल्दी ही पकड़ लिया। वहाँ पहुँच कर उसने इवान के छोटे छोटे टुकड़े किये, उनको एक बैरल[33] में भरा,

[33] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons).

बैरल के मुँह को गोंद से बन्द किया, उसको लोहे के छल्लों से बाँधा और समुद्र में फेंक दिया। और मार्या को ले कर चला आया।

उसी समय इवान अपनी जो चाँदी की चीज़ें अपने तीनों जीजाओं के पास छोड़ आया था वे सब काली पड़ गयीं।

उनको काला पड़ते देखते ही वे सब चिल्लाये — "अरे ऐसा लगता है कि इवान के साथ कुछ खराब हो गया है।"

गरुड़ तुरन्त ही नीले समुद्र की तरफ उड़ गया। उसने उसमें से वह बैरल निकाला और उसको किनारे पर ले आया। बाज़ उड़ा और "ज़िन्दगी का पानी" ले आया और रैवन "मौत का पानी" लाने के लिये उड़ गया।

तीनों चिड़ियों ने उस बैरल को तोड़ा, उसमें से इवान के शरीर के सारे टुकड़े निकाले, उनको अच्छी तरह से धोया और फिर से उनको उनकी जगह पर लगा दिया।

रैवन ने उन टुकड़ों पर मौत का पानी छिड़का तो उसके वे सब टुकड़े एक साथ जुड़ गये। बाज़ ने उस शरीर के ऊपर ज़िन्दगी का पानी छिड़का तो इवान ने साँस ली और वह उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "ओह मेरे भगवान, मुझे लगता है कि मैं कई दिनों तक सोता रहा।"

Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

उसके तीनों जीजा एक साथ बोले — "तुम तो कई दिनों से भी ज़्यादा दिनों तक सोते रहते अगर हम न होते। तुम्हारी छोड़ी हुई तीनों चीज़ों ने काली पड़ कर हमें बता दिया कि तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ हो गयी है।

बस हम सब तुमको बचाने भागे और तुम्हें बचा लिया। अब तुम हमारे साथ चलो और कुछ दिन हमारे साथ रहो।"

इवान बोला — "नहीं मेरे जीजा लोगों अभी नहीं, मुझे आज ही जाना होगा, मुझे अभी भी मार्या को ढूँढना है।" और वह मार्या को लाने के लिये फिर चल दिया।

जब उसने मार्या को ढूँढ लिया तो उसने मार्या से कहा — "तुम पहले कोश्चेव को ढूँढो और उससे यह पता लगाओ कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।"

मार्या ठीक समय का इन्तजार करती रही और ठीक मौका मिलते ही उसने उससे यह पूछा कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।

कोश्चेव बोला — "यहाँ से एक तिहाई जमीन पार कर के जमीन के चौथे हिस्से में आग की नदी के उस पार एक बाबा यागा रहती है। उसके पास एक घोड़ी है जो उसको रोज एक बार दुनियाँ घुमाने ले जाती है।

उसके पास और भी बहुत सारे घोड़े घोड़ियाँ हैं। मैंने उसके पास तीन दिन रह कर उसके घोड़े घोड़ियों के चरवाहे का काम

किया था। उस समय मैंने उसका एक भी घोड़ा नहीं खोया था। बस इसी बात से खुश हो कर उसने मुझे अपनी यह बच्ची घोड़ी[34] मुझे इनाम में दे दी थी।"

मार्या ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुमने वह आग की नदी कैसे पार की?"

कोश्चेव बोला — "ओह वह नदी? उसको पार करने के लिये तो मेरे पास एक जादू का रूमाल है।

बस मुझे उसको अपने दाहिने कन्धे के ऊपर केवल तीन बार हिलाने की जरूरत पड़ती है और फिर वह एक ऊँचा पुल बन जाता है। वह पुल उन आग की लपटों को पार कर के वहाँ तक पहुँचने के लिये काफी ऊँचा होता है।"

मार्या ने उसके कहे गये सारे शब्द बखूबी याद कर लिये और फिर उनको इवान को बता दिये।

उसने कोश्चेव का रूमाल भी चुरा लिया। इवान ने उस रूमाल के सहारे वह आग की नदी पार की और बाबा यागा की खोज में चल दिया।

वह काफी दूर तक बिना खाये पिये चलता रहा। अब उसको भूख लग आयी थी। वह खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूँढ रहा था

[34] Translated for the word "Foal". Foal is a below one-year old horse's female child. After one year to three years they are called Colt (male) and Filly (female).

कि तभी उसको समुद्र के ऊपर एक अजीब सी चिड़िया आती दिखायी दी।

उस चिड़िया के साथ उसके कुछ बच्चे भी थे तो इवान ने सोचा कि वह उनमें से एक बच्चे को खा कर अपनी भूख मिटायेगा।

पर वह चिड़िया बोली — "नहीं इवान नहीं। तुम मेरे बच्चे को छोड़ दो एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

इवान ने उसके बच्चे को छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जंगल में उसको शहद की मक्खियों का एक छत्ता मिला तो वह बोला "मैं थोड़ा सा शहद ही खा लेता हूँ।"

रानी मक्खी बोली — "नहीं इवान नहीं। मेरा शहद तो छूना भी मत। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

सो इवान ने शहद भी छोड़ा और आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसको एक शेरनी मिली जो अपने बच्चों के साथ खेल रही थी। उसने कहा "मैं एक शेर का बच्चा ही खा लेता हूँ नहीं तो मैं तो अब भूख से मर ही जाऊँगा।"

शेरनी बोली — "नहीं नहीं इवान। मैं एक दिन तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। मेहरबानी कर के मेरे बच्चे को मत खाओ।"

"ठीक है मैं तुम्हारे बच्चे को नहीं खाता पर तुम अपना वायदा याद रखना।"

इस तरह वह बेचारा भूखा ही घूमता रहा। काफी देर के बाद वह बाबा यागा के घर तक पहुँच सका। उसके घर के चारों तरफ बारह खम्भे लगे हुए थे। उन बारह खम्भों में से एक खम्भे के सिवा सभी खम्भों पर आदमियों की खोपड़ियॉ लगी हुई थीं।

इवान बोला — "गुड डे दादी मॉ।"

"गुड डे इवान। तुम यहॉ क्या कर रहे हो? तुम यहॉ अपनी मर्जी से आये हो या फिर किसी जरूरत से आये हो?"

"मैं आपके पास काम करने के लिये आया हूँ। मुझे आपकी एक छोटी घोड़ी चाहिये।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। पर इसके लिये तुमको ज़्यादा काम करने की जरूरत नहीं है केवल तीन दिन ही काम करने की जरूरत है। अगर तुम मेरी घोड़ियों को ठीक से रखोगे तो तुमको एक घोड़ी मिल जायेगी।

पर अगर तुम मेरी एक घोड़ी को भी खो दोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूँगी और जो मेरा जो यह आखिरी खम्भा खाली पड़ा है उस पर लगा दूँगी। तैयार हो?"

इवान राजी हो गया। बाबा यागा ने उसको कुछ खाना पीना दिया और उसको काम पर लगा दिया।

इवान ने घोड़ियों को बाहर निकाला। उन्होंने अपनी पूँछ हिलायी और घास के मैदान की तरफ भाग गयीं। इससे पहले कि वह उनको देखता वे तो इधर उधर भाग कर चली गयीं।

वह एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। कुछ देर बाद उसको नींद आ गयी। सूरज छिपने वाला था कि तभी वह समुद्र के ऊपर उड़ने वाली अजीब चिड़िया वहाँ आयी और इवान को जगाया।

"उठो इवान उठो। ज़रा देखो तो, तुम्हारी सब घोड़ियाँ तो अपनी घुड़साल में आ भी गयी हैं।"

इवान उठा और वापस घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी सारी घोड़ियाँ तो घुड़साल में खड़ी हैं।

पर उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर चिल्ला रही थी और उनको बुरा भला कह रही थी — "तुम लोग सारी की सारी यहाँ वापस क्यों आ गयीं?"

घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं। सारी दुनियाँ की बहुत सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं थीं और अगर हम वहाँ से न भागते तो वे तो अपनी चोंचों से हमारी आखें ही निकाल लेतीं।"

"कोई बात नहीं कल तुम लोग जंगल की तरफ चली जाना।"

इवान रात को चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने उससे कहा — "तुम अपने आपको ठीक से देखना इवान। अगर

आज रात एक घोड़ी भी वापस नहीं आयी तो कल तुम्हारा यह खूबसूरत सिर मेरे एक खम्भे पर सजा होगा।"

अगले दिन इवान ने सब घोड़ियों को घुड़साल से बाहर निकाला। घोड़ियों ने बाहर निकलते ही अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और फिर से जंगल में काफी अन्दर तक भाग गयीं।

इवान फिर एक पत्थर पर बैठ गया और फिर रोने लगा। रोते रोते वह फिर वहीं सो गया।

वह सारा दिन सोता रहा। जब शाम हुई तो वहाँ एक शेर आया और बोला — "इवान उठो। देखो तुम्हारी घोड़ियाँ घुड़साल में सुरक्षित पहुँच गयीं हैं।"

इवान उठा और फिर घर वापस आया। बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर फिर से चिल्ला रही थी। वह अपनी घोड़ियों पर पहले दिन से भी ज़्यादा गुस्सा थी — "तुम लोग घर वापस क्यों आयीं?"

बेचारी घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं? सारी दुनियाँ के जंगली जानवर हमको फाड़ खाने के लिये वहाँ आ गये थे।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है ठीक है। कल तुम लोग नीले समुद्र की तरफ भाग जाना।"

रात को इवान चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने इवान से कहा — "इवान इन घोड़ियों का ध्यान रखना। अगर तुमने एक भी घोड़ी खोयी तो तुम्हारा यह सुन्दर सिर मेरे उस बारहवें खम्भे पर टँगा होगा।"

इवान ने फिर घोड़ियॉ घुड़साल से बाहर निकालीं। बाहर निकलते ही उन्होंने सबने अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और नीले समुद्र की तरफ भाग गयीं। वहॉ जा कर वे नीले समुद्र में गायब हो गयीं।

इवान फिर एक एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। रोते रोते वह फिर सो गया।

जब शाम हो गयी तो वहॉ एक शहद की मक्खी भिनभिनाती आयी और इवान से बोली — "इवान, जाओ घर जाओ। हमने तुम्हारी सब घोड़ियॉ घुड़साल में भेज दी हैं।

पर ध्यान रखना कि अब तुम बाबा यागा के सामने नहीं आना। वह तुमको देख नहीं पाये। तुम घुड़साल में घोड़ियों के चारे के बर्तन के पीछे छिप जाना।

वहॉ पर एक बहुत ही गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी है जो हमेशा गोबर में लेटी रहती है। तुम उस घोड़ी को चुरा लेना, और वह भी आधी रात के बाद और उसको ले कर भाग जाना।"

इवान उठा और घुड़साल की तरफ चल दिया और घोड़ियों के खाने के बर्तन के पीछे जा कर छिप गया।

उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों को फिर से डॉट रही थी — "तुमको फिर से वापस आने की क्या जरूरत थी?"

घोड़ियॉ बोली — "हम कुछ भी नहीं कर सके। वहॉ उतनी सारी शहद की मक्खियॉ थी जितनी कभी तुमने ज़िन्दगी भर में नहीं देखी होंगी। वे हमारे ऊपर सब तरफ से उड़ उड़ कर आ रही थीं और हमारी हड्डियों तक काटने की कोशिश कर रही थीं।"

यह सुन बाबा यागा सोने चली गयी। आधी रात को इवान ने वह गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी उठायी और उस पर चढ़ कर आग की नदी की तरफ दौड़ गया।

वहॉ जा कर उसने अपना रूमाल अपने दॉये कन्धे के ऊपर तीन बार हिलाया तो वहॉ एक बहुत ऊॅचा पुल खड़ा हो गया।

इवान ने वह पुल पार किया फिर दो बार उस रूमाल को अपने बॉये कन्धे के ऊपर हिलाया तो वह पुल तो वहीं रहा पर वह बहुत ही पतला हो गया था।

अगली सुबह बाबा यागा ने देखा कि उसकी एक बच्ची घोड़ी गायब थी। वह गुस्से में आग बबूला हो कर तुरन्त ही अपनी लोहे की ओखली में कूदी, अपने मूसल से उसको चलाया और अपनी झाड़ू से अपना रास्ता साफ करती हुई दौड़ गयी।

वह आग की नदी पर आयी तो सामने उसको पुल दिखायी दिया। उसने सोचा — "कितना शानदार पुल है।" और यह कह कर वह उस पुल के ऊपर दौड़ गयी।

पर यह क्या, वह पुल तो बीच में ही टूट गया। बाबा यागा उस आग की नदी में सिर के बल गिर पड़ी और एक बहुत ही दर्द भरी मौत मारी गयी।

इवान ने उस बच्ची घोड़ी को घास के मैदान में घास खिला कर मोटा किया। कुछ ही दिनों में वह बहुत ही बढ़िया घोड़ी हो गयी। इवान एक बार फिर मार्या के पास गया।

वह तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी और खुशी से बोली — "ओह इवान, तुम अभी ज़िन्दा हो?"

इवान ने फिर उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ वहॉ हुआ था और कहा — "चलो यहॉ से चलें।"

मार्या बोली — "पर इवान मुझे डर लगता है। अगर कहीं कोश्चेव हम लोगों को फिर से पकड़ ले तो। और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दे तो।"

इवान बोला — "नहीं इस बार वह ऐसा नहीं कर सकेगा। मेरी घोड़ी हवा की रफ्तार से भागती है।"

सो वे दोनों उस घोड़ी पर चढ़े और वहॉ से भाग लिये।

शाम को कोश्चेव जब घर वापस लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "पता नहीं। इस बार इवान के पास एक नया घोड़ा है जो मुझसे भी ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

कोश्चेव चिल्लाया — "नहीं। मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता।"

यह तो मुझे पता नहीं कि कोश्चेव अपने घोड़े पर कितने घंटे या कितने दिन तक उसके पीछे भागा पर आखीर में उसने इवान को पकड़ ही लिया।

कोश्चेव अपने घोड़े से जमीन पर कूदा और इवान को अपनी तलवार से मारने ही वाला था कि इवान की घोड़ी ने उसको बहुत ज़ोर से लात मारी और उसका सिर छोटे छोटे टुकड़े हो कर बिखर गया। इवान ने उसको फिर अपना एक मोटा सा डंडा मार कर खत्म कर दिया।

फिर उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी, कोश्चेव का शरीर उसमें जलाया और उसकी राख को चारों तरफ बिखेर दिया। मार्या कोश्चेव की घोड़ी पर चढ़ी, इवान अपनी घोड़ी पर चढ़ा और दोनों वहॉ से चल पड़े।

पहले वे रैवन के घर गये, फिर गरुड़ के घर गये और फिर बाज़ के घर गये। तीनों महलों में उनका ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

उसकी बहिनों ने कहा — "इवान, हमको तो लगा था कि अब हम तुमको देख ही नहीं पायेंगे। पर अब हमको पता चल गया कि तुमने यह यात्रा क्यों की थी। सारी दुनियॉ में तुम्हारी पत्नी जैसी सुन्दर और कोई लड़की तो हो ही नहीं सकती।"

वह अपनी इन तीनों बहिनों के साथ कुछ कुछ दिन रहा। बहुत सारी दावतें खायीं और फिर अपने राज्य की तरफ चल दिया वहॉ उसने मार्या के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज किया।

6 गरीब आदमी के रूबल[35]

बहुत साल पहले ज्यू[36] लोग अपने देश से निकाल दिये गये थे सो वे दुनियॉ के कई देशों में जा कर बस गये। पर वे जहॉ भी रहे अपने रीति रिवाजों को मानते रहे जैसे कि उनकी धार्मिक किताब टोरा[37] में लिखे हुए थे।

टोरा के रीति रिवाज "टैन कमान्डमेन्ट्स"[38] पर आधारित थे। इन दस नियमों में से खास कर के एक नियम सब लोगों को मानना जरूरी था, चाहे वह गरीब हो या अमीर, कि सबको सातवॉ दिन यानी शनिवार का दिन पवित्र रखना होता था।

वे उस दिन कोई काम तो करते ही नहीं थे बल्कि बुरा काम तो बिल्कुल ही नहीं करते थे।

यह बहुत साल पहले की बात है कि रूस में एक बार एक ज्यू किसान अपने उस पवित्र दिन को सायनागौग[39] जा रहा था। जब वह गॉव के रास्ते से गुजर रहा था तो उसने जमीन पर कुछ चमकती हुई चीज़ पड़ी देखी।

---

[35] The Poor Man's Ruble – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=26
Retold and written by Mike Lockett.

[36] Jews – the people who lived in Israel, Palestine etc regions. Christ was a Jew.

[37] Torah is the religious book of Jews, as the Bible is of Christians.

[38] Ten Commandments – which God gave to Moses to follow on Mount Sinai

[39] Synagogue is the religious place for Jews, such as temples for Hindu, Church for Christians, Mosque for Muslims etc…

उस दिन यानी पवित्र दिन के नियम के अनुसार लोगों को कोई काम नहीं करना होता था, वह दिन बस उनके आराम का दिन होता था।

पर उसके दिमाग में यह आया ही नहीं कि जो कुछ उसने देखा उसके बारे में जॉच पड़ताल करना कोई काम था सो उसने अपने जूते की तली से वहॉ की थोड़ी सी मिट्टी हटायी तो उसको एक पत्थर दिखायी दिया। और फिर वह पत्थर हटाया तो वहॉ उसको सोने के रूबल[40] का एक थैला मिला।

एक पूरा थैला भर के रूबल? वह घुटनों के बल बैठ गया और उसमें से उसने एक सिक्का निकाला। उस सिक्के के ऊपर बहुत सारी धूल जमी हुई थी। शायद वे सिक्के बहुत पुराने होंगे।

सच तो यह था कि वे गड़े हुए सिक्के देखने में इतने पुराने लग रहे थे कि उसको यह विश्वास हो गया कि वे कभी बहुत पुराने समय में गाड़े गये होंगे और उनका मालिक यानी जिसने उनको वहॉ गाड़ा होगा वह उनको वहॉ गाड़ कर भूल गया होगा।

उसके लिये यह भी ठीक था कि वह दूसरा नियम भी मान रहा था कि "तुम चोरी नहीं करोगे" सो वह किसी की चोरी नहीं कर रहा था। उसने वह थैला उठा लिया।

भगवान ने उसको उसके विश्वास का कितना अच्छा इनाम दिया। इतने सारे रूबल तो उसको एक बहुत ही अमीर आदमी बना

[40] Ruble - name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA etc…

देंगे बजाय इसके कि वह अपनी सारी ज़िन्दगी एक गरीब किसान की तरह गुजार दे।

वह इन पैसों से एक ज़्यादा बड़ी जमीन खरीद सकता था, बहुत सारे लोगों को अपना काम करने के लिये नौकरी पर रख सकता था। वह उससे एक नया घर खरीद सकता था, नये अनाजघर खरीद सकता था, अपनी पत्नी के लिये बढ़िया कपड़े खरीद सकता था, और और भी बहुत कुछ खरीद सकता था।

पर उन सिक्कों को वहॉ से खोद कर निकालना और उनको घर ले जाना तो बहुत सारा काम हो जाता। पर उसको भगवान पर पूरा विश्वास था।

वह सचमुच में चाहता था कि वह पैसा उसको मिल जाये इसलिये उसको यह भी विश्वास था कि जब वह पवित्र दिन खत्म हो जायेगा तब भी वह पैसा वहीं रहेगा।

बहुत से लोगों के लिये यह समझना कितना मुश्किल है कि उस किसान ने ऐसा क्यों किया पर उसने उस पैसे को वहीं सड़क के किनारे छोड़ दिया और वह सायनागौग चला गया।

जब उसका पवित्र दिन यानी शनिवार का दिन खत्म हो गया, यानी शनिवार की रात को, उस किसान ने एक फावड़ा लिया और जल्दी जल्दी उन रूबल को वहॉ से निकालने के लिये चला।

जब वह अपनी उस खास जगह पर पहुँचा जहाँ उसने वे रूबल छोड़े थे तो उसने देखा कि वहाँ तो केवल एक ही रूबल पड़ा रह गया है बाकी का वह थैला तो वहाँ से गायब है। यह देख कर वह खुद तो दुखी हो ही गया और उसकी आत्मा भी बहुत दुखी हो गयी।

उसके मुँह से निकला — "क्या भगवान अपने ऊपर विश्वास रखने वालों को इस तरह का इनाम देता है?"

यह तो किसी के लिये भी कितना बेरहमी का पल था कि एक पल तो वह अपने आपको अमीर समझ ले और दूसरे ही पल गरीब समझ ले।

उस किसान ने उस रूबल को कस कर अपने हाथ में पकड़ लिया और गुस्से में भर कर अपनी पत्नी को यह बताने के लिये घर चल दिया कि आज उसके साथ क्या हुआ।

सब कुछ सुन कर उसकी पत्नी ने कहा — "भगवान उनको इनाम देते हैं जिनको उनमें विश्वास होता है। क्योंकि तुमने पवित्र दिन भगवान के नियम याद रखे हैं इसलिये भगवान तुम्हारे अच्छे कामों का अच्छा इनाम समय आने पर जरूर देंगे।"

पर उसके शब्दों ने पति पर कोई मरहम नहीं लगाया। फिर भी वह तुरन्त ही अपने मजदूरों के पास चला गया ताकि वह अपने उस अकेले सिक्के को भी भूल सके जो उसकी अच्छी किस्मत थी।

पर पत्नी उस सिक्के को नहीं भूली। वह सिक्का उसने अपने पास रखा हुआ था और वह उसको अक्सर देख लेती थी। जब भी वह उस सिक्के को देखती उसी समय वह भगवान से प्रार्थना करती कि भगवान उसके पति को उसके भगवान में विश्वास रखने का इनाम जरूर दें।

एक दिन उसने वह सिक्का उस जगह से उठाया जहाँ वह उसको रखती थी और एक अमीर व्यापारी को दिया कि वह उसको उसके लिये किसी दूर जगह पर उसके फायदे के लिये लगा दे।

वह उस सिक्के से कोई ऐसी चीज़ भी खरीद सकता था जिसको बेच कर वह कोई ऐसी चीज़ खरीद सकती थी जिससे उसके पति को कोई फायदा पहुँचता।

उस अमीर व्यापारी ने अपने सफर के दौरान बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ें देखीं। अपने पैसे से और दूसरों के पैसे से उसने सिल्क, तेल, मसाले खरीदे जो बहुत फायदे में बेचे जा सकते थे। पर इस बीच उसको उस स्त्री के दिये गये रूबल का बिल्कुल ध्यान ही नहीं आया।

पर जब वह घर लौटने के लिये अपने जहाज़ पर चढ़ रहा था तब उसको उस स्त्री के दिये हुए उस एक रूबल की याद आयी।

पर अब तो उससे कुछ भी खरीदने के लिये बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि समुद्र में बहुत ज़ोर से ज्वार आ रहा था और वह उसके जहाज़ को समुद्र में दूर लिये जा रहा था।

उसने कुछ खरीदने के लिये इधर उधर देखा भी जो वह उस स्त्री के लिये ले कर जा सके तो उसने देखा कि बन्दरगाह पर एक आदमी तीन बिल्लियॉ बेचने की नाकाम कोशिश कर रहा है।

वह वहीं अपने जहाज़ से चिल्लाया — "तुम एक बिल्ली कितने की दोगे?"

वह आदमी भी जमीन पर से चिल्लाया — "तीनों बिल्लियॉ केवल एक रूबल की हैं।"

यह सुन कर व्यापारी ने वह रूबल वहीं से उछाल कर जमीन पर फेंक दिया और अपने जहाज के एक नौकर को रस्सी से बॅधा एक थैला नीचे करने को कहा।

उस जमीन वाले आदमी ने वे तीनों बिल्लियॉ उस थैले में डाल दीं, जहाज़ वाले आदमी ने वह थैला जहाज़ पर खींच लिया और जहाज़ उसके घर की तरफ चल पड़ा।

इस तरह उस व्यापारी ने उस स्त्री के एक रूबल की तीन बिल्लियॉ खरीद लीं। उस चलते हुए जहाज़ पर उन तीन बिल्लियों का क्या होगा यह तो बाद में सोचने की बात थी।

कुछ पलों बाद जैसे ही जहाज़ उस बन्दरगाह से बाहर निकल कर आया मौसम और बहुत खराब हो गया। उसने अभी तक उन बिल्लियों के बारे में सोचा तक नहीं था कि वह उनका क्या करेगा। व्यापारी ने वह बिल्लियों वाला थैला अपने बिस्तर पर रखा हुआ था।

मौसम खराब होने की वजह से जहाज़ बहुत ज़ोर से इधर उधर हिल रहा था और साथ में घर के रास्ते से काफी भटक भी गया था। तूफान की वजह से लहरें ऊँची हो रही थीं और उनसे समुद्र का पानी जहाज़ में आ रहा था।

जहाज़ को तैरते रखने के लिये वह व्यापारी भी अपने जहाज़ के लोगों के साथ साथ बराबर काम कर रहा था। वह भी जहाज़ में से समुद्र का पानी निकाल रहा था जो तूफान की वजह से उसमें घुस रहा था।

हवाओं के शान्त होने से ठीक पहले एक आखिरी लहर आयी और उसने जहाज़ को एक चट्टान की तरफ फेंक दिया जिससे टकरा कर उस जहाज़ में एक तरफ को एक छेद हो गया पर जहाज़ चट्टानों के सहारे पानी से ऊपर ही खड़ा रहा, डूबा नहीं।

जहाज़ पर काम करने वाले और वह अमीर व्यापारी अगली सुबह का इन्तजार कर रहे थे कि उन्होंने कुछ छोटी छोटी नावें किनारे पर चलती देखीं।

उन्होंने सोचा था कि शायद वे नावें उनको वहाँ से निकलने में सहायता करेंगी पर उनकी यह खुशी बहुत जल्दी ही डर में बदल गयी जब उन्होंने उनको बन्दूक दिखा कर अपनी नावों में आने के लिये मजबूर किया। ये नावें वहाँ के खलीफा[41] की थीं।

[41] A Caliph (Caliph is pronounced as Khalifah in Arabic) is a person a political and religious successor to the Islamic prophet, Muhammad (Muhammad ibn ʿAbdullah), and a leader of the entire Muslim community.

खलीफा के आदमी उनको अपनी नावों में भर कर किनारे पर ले गये और वहॉ से वे उनको खलीफा के महल के नीचे वाले हिस्से के एक सीलन भरे कमरे में ले गये। वहॉ ले जा कर उन्होंने उस कमरे में उन सबको बन्द कर दिया।

वह थैला भी जिसमें वे तीन बिल्लियॉ अभी भी बन्द थीं उस अमीर व्यापारी और मल्लाहों के साथ उनके कमरे में डाल दिया गया। उस कमरे का दरवाजा बन्द होने से पहले ही अँधेरे में उस व्यापारी ने वह थैला खोला और उन कॉपती बिल्लियों को सहलाया।

खलीफा उस टापू पर बड़ी बेरहमी से राज करता था। उसको इन अजनबियों पर एक खास गुस्सा था।

असल में जब खलीफा छोटा था तब वहॉ जहाज़ों का स्वागत हुआ करता था। पर यह सब तब बदल गया जब एक दिन एक जहाज़ कुछ छोटे छोटे जानवरों को ले कर वहॉ आया और उनको उस टापू पर छोड़ गया। वे जानवर उस टापू पर जंगली तरीके से घूमने लगे।

वे जानवर बालों वाले थे। उनकी नाक नुकीली थी और उनके दॉत भी इतने तेज़ थे कि करीब करीब किसी भी चीज़ में घुस सकते थे। वे अपने चार पैरों पर इतना तेज़ भागते थे कि उनको पकड़ना नामुमकिन सा था। वे दिन रात खाते थे और सब जगह गन्दा करते थे।

कोई भी डबलरोटी ओवन में से निकलने के बाद कुछ पल भी मेज पर रखी नहीं रह सकती थी क्योंकि इतने में ही वे वहॉ आ जाते और रसोइये की आफत आ जाती। खलीफा को खाना देने से पहले ही वे खाना जूठा कर जाते।

इसलिये खलीफा ने यह नियम बना दिया कि जिन मेहमानों को नहीं बुलाया गया है उनको उसके टापू पर न आने दिया जाये। और यदि वे आ भी जायें तो उनको एक खास कमरे में बन्द कर दिया जाये और उनको उन्हीं जानवरों से परेशान करवाया जाये।

ये जानवर अॅधेरे में और ज़्यादा भयानक लगने लगते थे क्योंकि लोगों को यह ही पता नहीं चलता था कि उनके आस पास क्या घूम रहा है।

वे मेहमान जो इनके काटने और इनकी आवाजों से पागल नहीं हो जाते थे वे अपने रिश्तेदारों से खलीफा को अपने उस अॅधेरे और भयानक कमरे से निकलने के लिये काफी सारा पैसा दिलवाते थे।

सो ऐसे ही कमरे में यह अमीर व्यापारी और उसके मल्लाह उन तीन बिल्लियों के साथ बैठे हुए थे।

खलीफा के आदमियों ने उस कमरे में भी वे छोटे छोटे जानवर छोड़ दिये थे। उन छोटे छोटे जानवरों के पैरों के घूमने की आवाज सारे कमरे में सुनी जा सकती थी।

तभी एक बड़ा आदमी चिल्लाया क्योंकि उनमें से एक जानवर उसके सिर पर से निकल गया था। वह आदमी फिर चिल्लाया

क्योंकि अबकी बार व्यापारी के हाथ से एक बिल्ली छूट कर निकल भागी थी और उसने उस जानवर को मार दिया था जो उस आदमी के सिर पर हो कर भागा था।

सारी रात बिल्लियॉ दावत उड़ाती रहीं और लोग आराम करते रहे। वे लोग आपस में पास पास बैठे रहे जिससे कि वे उन तीनों बिल्लियों की सुरक्षा में उस नमी वाले कमरे की ठंडक से बचे रहे।

जब खलीफा के नौकरों ने सुबह उस कमरे का दरवाजा खोला तो खलीफा को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसके वे मेहमान गुस्सा थे और भूखे थे पर किसी को भी उन जानवरों ने काटा नहीं था।

पर जब दिन के उजाले में उस अमीर व्यापारी और उसके मल्लाहों ने यह देखा कि वे छोटे जानवर तो चूहे और चुहिया ही थे तो कोई भी डर से कॉप नहीं रहा था बल्कि वे सब बहुत ज़ोर से हॅस पड़े।

खलीफा को यह देख कर और भी ज़्यादा खुशी हुई कि उसको अपने टापू की परेशानी का हल मिल गया था। खलीफा ने उन सबसे उनके साथ अपने बुरे बर्ताव की माफी मॉगी और उनको आजाद कर दिया।

खलीफा के नौकरों ने उनके टूटे हुए जहाज़ की मरम्मत करने में उनकी सहायता की। खलीफा ने उस व्यापारी से ठीक से व्यापार भी

किया और उसका सामान वहाँ बिकवा कर उन सबका फायदा भी करवाया।

उसने व्यापारी की तीनों बिल्लियाँ तीन सोने के सिक्के से भरे थैले दे कर खरीद लीं।

जब वह व्यापारी घर लौट कर आया तो वह सीधा उस स्त्री के घर गया जिसने उसको एक रूबल धन कमाने के लिये दिया था। उसने उस स्त्री को उसके पति के सामने बताया कि किस तरह उसके एक रूबल ने उसकी जान बचायी।

वह स्त्री अपने पति की तरफ देख कर मुस्कुरायी और बोली — "देखा? किस तरह तुम्हारे विश्वास ने एक दयालु आदमी की जान बचायी।"

तब उस स्त्री ने उस व्यापारी को अपनी कहानी सुनायी कि किस तरह से उसके पति को सड़क के पास एक खजाना मिला था पर उसने पवित्र दिन के नियम मानने की वजह से उसे खो दिया था।

फिर भी वह जानती थी कि उस एक रूबल से कुछ अच्छा ही होगा क्योंकि उन्होंने भगवान के नियमों को माना था।

किसान जो व्यापारी के लिये खुश तो था पर फिर भी वह बहुत खुश नहीं था क्योंकि उसकी पत्नी ने उसको उसके खोये हुए खजाने की याद दिला दी थी।

जब पत्नी अपनी कहानी सुना चुकी तो व्यापारी ने ज़ोर से ताली बजायी। उसी समय उस व्यापारी के नौकर घर में आये और वे तीन थैले सोना रख गये जो उसे उन तीनों बिल्लियों के बेचने से मिला था।

किसान ने जब वह सोना छुआ तो उसकी ऑखें ऊपर की तरफ उठ गयीं और उसके मुँह से निकला — "धन्यवाद भगवान।" वह जान गया था कि उसकी पत्नी और एक ईमानदार व्यापारी की सहायता से उसको उसके विश्वास का इनाम मिल गया था।

पर क्या वाकई वे तीनों सोने के सिक्के के थैले उसके भगवान में विश्वास का इनाम था?

7 बतखों का बॅटवारा[42]

रूस की यह लोक कथा एक बहुत ही अक्लमन्दी की और बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है जब एक अमीर रूसी भला आदमी दो किसानों के मकानों के बीच वाले मकान में रहता था।

उनमें से एक किसान के पास इतने सारे रूबल[43] थे कि वह बहुत अच्छी तरह से रह सकता था जबकि दूसरे किसान के पास इतने कम रूबल थे कि वह अपने परिवार का गुजारा भी बहुत मुश्किल से कर पाता था।

गरीब किसान का परिवार भी बहुत बड़ा था और उसका खेत छोटा था। इसके बाद भी उसको जो कुछ भी काम अपने खेत पर करना चाहिये था उसको करने में उसको बहुत देर लग जाती थी।

उसके बच्चे उसकी कोई भी सहायता कराने के लिये बहुत छोटे थे और उसकी पत्नी का सारा दिन उन बच्चों की देखभाल में ही निकल जाता था।

---

[42] Creative Division: the Peasant and the Geese – a folktale from Russia, Asia.
Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=57
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[A version of this story can be found in Jane Yolen's "Favorite Folktales from Around the World".
A more earlier version can be located in "The Runaway Soldier and Other Tales of Old Russia" as told by Fruma Gottschalk in 1946.]

[43] Ruble – name of the Russian currency, such as Rupayaa of India, Dollar of USA…

उसके पास इतना पैसा भी नहीं था कि वह किसी को अपने साथ काम करने के लिये नौकर रख लेता। इसलिये उसको सुबह से ले कर शाम तक काम करना पड़ता। बल्कि कभी कभी तो रात को भी काम करना पड़ता।

हर रोज रात को जब अँधेरा हो जाता तो दोनों पति पत्नी अपनी परेशानियों पर बात करते और उनका हल निकालने की कोशिश करते पर कुछ सोच न पाते।

एक रात पति ने पत्नी से कहा — "अब हमारे पास केवल इतना ही अनाज है कि हम बच्चों को सुबह को उसका दलिया बना कर खिला सकें। बतख को खिलाने के लिये तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

हर हालत में खुश रहने वाली पत्नी बोली — "यह अच्छा है। क्योंकि हमारे पास बतख में डालने के लिये नमक भी नहीं है और न ही उसमें भरने के लिये रोटी है इसलिये हमारे बच्चे अपनी सुबह भरे पेट शुरू करेंगे और हमको कल सुबह तक बतख की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।"

सुबह किसान की पत्नी को एक विचार आया तो वह किसान से बोली — "क्योंकि हमारे पास बतख के लिये खाना नहीं है, नमक और रोटी भी नहीं है तो क्यों न हम उसको अपने पड़ोसी को दे दें। हो सकता है कि वह हमको उसके बदले में ही कुछ दे दे।"

किसान अपनी पत्नी से बोला — "तुम हमेशा की तरह से बहुत ही चतुर हो।" कह कर वह बतख को अपनी बगल में दबा कर अपने अमीर पड़ोसी के पास ले चला।

उसका अमीर पड़ोसी अपने बहुत बड़े घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। उस किसान को आते देख कर बोला — "आओ आओ। मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

उसने सोचा कि उसका गरीब पड़ोसी शायद कुछ पैसे या खाना माँगने आया होगा और उसके लिये वह उसको मना करने वाला था क्योंकि कोई आदमी किसी से पैसे लेकर अमीर नहीं होता।

किसान बोला — "जनाब, मैं आपके लिये एक भेंट ले कर आया हूँ।"

"भेंट? और मेरे लिये? पर तुम तो बहुत गरीब हो। एक गरीब आदमी एक अमीर आदमी को भेंट दे यह ठीक नहीं है।" फिर उसको शर्म आयी कि उसने उस गरीब के बारे में यह सोचा कि वह उससे खाना या पैसा माँगने आया होगा।

अपनी इस शर्म को छिपाने के लिये उसने उस गरीब की भेंट वापस करने की कोशिश करते हुए कहा — "यह तो बहुत छोटी सी बतख है और मेरा परिवार बहुत बड़ा है हम इसका क्या करेंगे।

खाने के लिये मैं हूँ, मेरी एक पत्नी है, दो बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं। यह बतख तो हमारे एक बार के खाने के लिये भी काफी नहीं होगी इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम इसको वापस ले जाओ।"

गरीब किसान मुस्कुरा कर बोला — "जनाब, अगर आप इस बतख को आज रात को ही पकाने का सोचते हों तो मैं आपको बताता हूँ कि इस बतख को सब लोगों में ठीक से कैसे बॉटा जाये ताकि हर एक को इसका काफी मॉस मिल सके। मैं शाम को आ कर आपको यह बताऊँगा कि इस बतख को कैसे बॉटना है।"

वह अमीर आदमी यह सुन कर यह जानने के लिये बहुत ही उत्सुक हो गया कि देखा जाये वह किसान उस एक बतख को उन छह लोगों में कैसे बॉटेगा। सो वह उस बतख को अन्दर ले गया और अपने रसोइये को उसको पकाने के लिये दे दी।

वह वापस लौट कर किसान के पास आया और बोला — "तुम्हारी भेंट के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। आज शाम को हम तुम्हारी बतख खायेंगे। मैं बतख को हम सबमें बॉटने की होशियारी देखने के लिये तुम्हारा इन्तजार करूँगा।"

सो किसान उस बतख को उस अमीर आदमी को दे कर घर चला गया। वह और उसकी पत्नी सारा दिन अपने खेत और बच्चों के काम में लगे रहे और उस बतख को कैसे उस परिवार में बॉटा जाये इसी बात पर विचार करते रहे।

शाम को खेत से आ कर वह किसान दोबारा नहाया और अपनी सबसे साफ कमीज पहनी और ठीक से कपड़े पहन कर उस अमीर आदमी के घर बतख बॉटने के लिये चल दिया।

उस भले आदमी ने किसान के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि वह अपने हाथ मे एक खाली प्लेट और एक तेज़ चाकू लिये खड़ा था।

रसोइये ने बतख को रोटी, अंडे, मसाले और मुशरूम से भर रखा था सो जितनी बड़ी बतख उस किसान ने उस आदमी को दी थी इस समय वह उससे साइज़ में दोगुनी लग रही थी।

मेज पर उस बतख के साथ साथ बहुत सारी सब्जियॉ, सूप और भी बहुत सारा खाने का सामान रखा हुआ था सो अगर वह बतख उस मेज पर न भी होती तो भी वहॉ खाने की कोई कमी नहीं थी।

सच तो यह था कि वहॉ वह खाना देख कर उस किसान के मुँह में पानी भर आया। वहॉ बैठे सभी लोग उस गरीब आदमी के खर्चे पर मजा लूटने के लिये बैठे थे।

उस किसान ने अपना चाकू उठा लिया और उस आदमी से कहा — "आप इस परिवार के सरदार हैं इसलिये आपको इसका सिर मिलना चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख का सिर काट कर आदमी की प्लेट में रख दिया।

फिर उसने उसकी पत्नी से कहा — "आप अपने पति के सामने बैठती हैं इसलिये आपको इसकी पूँछ मिलनी चाहिये।" इतना कह कर उसने उस बतख की पूँछ काटी और उसकी पत्नी की प्लेट में रख दी।

फिर उसने उसके दोनों बेटों से कहा — "तुम दोनों चारों तरफ भागते रहते हो इससे तुम्हारे पैर घिसते हैं इसलिये तुमको बतख के पैरों की जरूरत है।"

इतना कह कर उसने बतख के दोनों पैर काटे और उसके दोनों बेटों को दे दिये।

फिर उसने बतख के दोनों पंख काटे और उनको उस आदमी की दोनों बेटियों की प्लेटों में रखते हुए बोला — "तुम दोनों बिल्कुल देवदूत[44] की तरह लगती हो पर तुम्हारे पास पंख नहीं हैं।

साथ में मुझे यह भी पता है कि जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दोनों उड़ जाओगी और शादी कर लोगी। उस समय के लिये मैं तुमको ये पंख देता हूँ।"

उसके बाद किसान ने तुरन्त खाने के वे कटोरे उठाये जो रसोइये ने वहाँ ला कर रखे थे और उनका खाना बराबर बराबर सबकी प्लेटों में बाँट दिया।

फिर बोला — "अब आप सब देखें कि आप सब लोगों के पास बतख का बराबर का हिस्सा है और प्लेट भर कर खूब खाना है।

और क्योंकि मैं केवल एक गरीब किसान हूँ इसलिये मैं वह ले लेता हूँ जो बच गया है ताकि आप लोगों में इस बात पर झगड़ा न हो कि बचा हुआ कौन लेगा।"

[44] Translated for the word "Angel"

कह कर उसने वहॉ से बतख का सबसे बड़ा हिस्सा, आलू, सब्जियॉ, रोटी आदि उठायीं और दरवाजे की तरफ चल दिया।

एक बतख का इस तरह बॅटवारा देख कर वह भला आदमी और उसका परिवार ज़ोर से ठहाका मार कर हॅसे बिना न रह सके।

आदमी उस किसान से बोला — "यह तो हमारा सबसे अच्छा मनोरंजन था जो हमने बरसों में नहीं किया। मैं तुमको तुम्हारी इस बतख के बदले में जरूर ही कुछ दूॅगा।"

कह कर उसने रूबल भरा एक छोटा सा थैला निकाल कर उस किसान को दे दिया जो उस किसान ने खुशी से ले लिया।

इस तरह वह किसान अपने परिवार के लिये खाना और पैसा दोनों ले कर घर लौटा। इस पैसे से उसने बच्चों के दूध पीने के लिये एक गाय खरीदी और अपना हल चलाने और मशीन घुमाने और गाड़ी खींचने के लिये एक बैल खरीदा।

इन जानवरों की सहायता से अब वह ज़्यादा पैसा कमा सकता था और अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय खर्च कर सकता था।

यह कहानी यहीं खत्म हो सकती थी जैसा कि दूसरी कहानियों में होता है जब तक कि एक आदमी की अच्छी किस्मत देख कर दूसरा कोई आदमी जलने वाला न हो।

सो इस कहानी में यह जलने वाला वह दूसरा अमीर किसान था जो उस भले आदमी के दूसरी तरफ रहता था इसलिये अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

उस अमीर किसान ने उस गरीब किसान की नयी गाय और बैल देखे। उसने यह भी देखा कि उसके खेत भी बहुत अच्छे हो रहे हैं और उसका पड़ोसी हमेशा काम करने की बजाय अब अपने बच्चों के साथ खेल भी रहा है तो एक दिन वह इसका राज़ जानने के लिये उसके पास जा पहुँचा।

उसने उस किसान की पत्नी से बहुत ही बुरे ढंग से पूछा — "तुमको गाय और बैल खरीदने के लिये अचानक ये रूबल कहाँ से मिल गये? क्या तुम्हारे परिवार में कोई मर गया है जो तुमको यह सब पैसे दे गया?"

पत्नी बोली — "हे भगवान नहीं नहीं। आप ऐसा न कहें। हमारे परिवार में कोई नहीं मरा।

मेरे पति ने अपने पड़ोसी भले आदमी को खाने के लिये एक बतख दी थी। वह भला आदमी उस बतख को ले कर इतना खुश हुआ कि उसने हमको एक थैला भर कर रूबल दे दिये। हमने वही पैसा तरीके से खर्च कर के अपनी ज़िन्दगी सुधारी हैं।"

यह सुन कर वह अमीर किसान बहुत परेशान हुआ। वह जल्दी जल्दी घर आया और अपनी पत्नी को अपने पड़ोसी की अच्छी किस्मत के बारे में बताया।

वे दोनों ही उससे जल रहे थे सो दोनों ही किसी ऐसी अच्छी भेंट के बारे में सोचने लगे जिसको वे उस भले आदमी को दे सकें ताकि वह उनको भी सिक्कों का एक थैला दे सके।

उस अमीर किसान ने कहा — "अगर वह अपनी एक पतली सी बतख दे कर उससे एक थैला सिक्के ले सकता है तो हम अपनी पॉचों मोटी बतखें उसको भेंट में दे देंगे। उन बतखों के हमें उससे भी ज़्यादा पैसे मिलेंगे।"

सो उस प्लान के अनुसार उसके अगले दिन ही उस अमीर किसान ने अपने हाथ में एक डंडी ली और वह घर खोला जिनमें वह अपनी बतखें रखता था।

उसने अपनी बतखों के पीछे वह डंडी हिलायी, उनको उस घर में से बाहर निकाला और उन सबको वह उस भले आदमी के घर के दरवाजे पर ले गया।

पहले की तरह से उस भले आदमी ने अपने घर का दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

अमीर किसान बोला — "मैं आपके लिये ये बतखें भेंट ले कर आया हूँ।"

भला आदमी बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुमको मुझे भेंट देनी चाहिये क्योंकि तुम मुझसे गरीब हो।"

अमीर किसान जल्दी से बोला — "पर आपने मेरे पड़ोसी से तो उसकी दी हुई भेंट ले ली है।"

भला आदमी समझ गया कि मामला क्या है। वह जान गया कि यह आदमी उस गरीब आदमी को दिये गये रूबल के थैले से जल रहा है।

सो वह बोला — "ठीक है मैं तुम्हारी भेंट ले तो लेता हूँ और तुमको इसका इनाम भी दे दूँगा पर तुमको इन पॉच बतखों को मेरी छह लोगों के परिवार में न्यायपूर्वक बॉटना पड़ेगा।"

अमीर किसान कुछ सोच कर बोला — "जनाब, मुझे नहीं लगता कि आप इन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक बॉट सकते हैं।"

भला आदमी बोला — "ठीक है तब हम तुम्हारे उस होशियार दोस्त को बुलवाते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वह यह काम अवश्य ही ठीक से करेगा।"

यह कह कर उसने अपना एक नौकर उस गरीब किसान के घर उसको लाने के लिये भेज दिया। नौकर किसान को ले कर जल्दी ही आ गया।

अमीर किसान को अभी भी शर्म आ रही थी कि वह उन बतखों को जैसा कि उस भले आदमी ने उससे कहा था बॉट नहीं पा रहा था। पर उसको इस बात का विश्वास था कि उसका पड़ोसी भी उन पॉच बतखों को छह आदमियों में न्यायपूर्वक नहीं बॉट सकेगा।

भले आदमी ने उस गरीब किसान से कहा — "पिछली बार तुम ने एक बतख को बहुत ही होशियारी से हम छह लोगों में बॉट दिया था। शायद आज तुम ये पॉच बतखें हम छह लोगों में बॉट सको।"

इस पर उस गरीब किसान ने एक बतख उठायी और उस भले आदमी को दे दी और बोला — "आप और आपकी पत्नी का एक जोड़ा है। इस एक बतख को मिला कर आप अब तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसके दोनों बेटों को दे दी और बोला — "तुम दोनों भाई भी एक जोड़ा हो सो इस बतख को मिला कर तुम लोग भी तीन हो गये।"

फिर उसने एक बतख उठा कर उसकी दोनों बेटियों को दे दी और बोला — "तुम दोनों प्यारी बेटियॉ भी एक जोड़ा हो। तुमको भी मैं एक बतख देता हूॅ जिसको मिला कर अब तुम भी तीन हो गयी हो।"

अब उसने बची हुई दो बतखें पकड़ कर ऊपर उठा लीं और बोला — "ये दोनों बतखें भी एक जोड़ा हैं। ये बतखें मैं रख लेता हूॅ जिनको मिला कर मैं भी तीन हो जाऊॅगा।

जनाब, आपने देखा कि अब हर एक तीन तीन का एक सैट हो गया। आपकी पॉच बतखें सबमें बराबर बराबर बॅट गयी हैं।"

उसके बॅटवारे का ढंग देख कर वहॉ बैठे सब लोग फिर ज़ोर से हॅस पड़े – सिवाय उस अमीर किसान के जिसके पास अब पॉच बतखें उन बतखों से कम थीं जितनी कि उसके पास पहले थीं।

भले आदमी ने उस गरीब किसान को रूबल का पहले जैसा एक और थैला दिया। पर वह उस अमीर किसान की तरफ पलटा और उसको भी उसकी बतखों के लिये पैसे दिये ताकि वे तीनों अच्छे दोस्त रह सकें।

8 बायूँ बिल्ले की कहानी या फ्रेया का रथ[45]

हालॅकि यह लोक कथा यूरोप के नौरडिक या नौर्स या स्कैन्डिनेवियन देशों[46] में कही सुनी जाती है फिर भी यह लोक कथा यहॅा रूस की लोक कथाओं में जोड़ दी गयी है क्योंकि यह कथा रूस में भी कही सुनी जाती है।

क्योंकि दोनों क्षेत्र पास पास हैं इसलिये ऐसा लगता है कि यह कथा स्कैन्डिनेवियन देशों से किसी समय रूस पहुॅच गयी है।

प्रेम और सुन्दरता की देवी फ्रेया[47] उस दिन सुबह जल्दी उठ गयी क्योंकि किसी गड़गड़ाहट की आवाज ने उसे जगा दिया था। फ्रेया ने सोचा कि उसका भाई फ्रेयर[48] तो बन्दी बन चुका है और आसगार्ड[49] में रह रहा था और उसने खुद ने एक बड़े ताकतवर देवता ओडिन[50] से शादी कर ली थी तो फिर यह और कौन हो सकता था जो उसको इतनी जल्दी जगा देता।

---

[45] The Tale of Cat Bayun or Goddess Freya's Chariot : a Russian folktale – a folktale from Russia, Asia. Translated from the Web Site : http://www.goddessfreya.info/stories/storyb4.htm

[46] Norse or Nordic or Scandinavian countries are situated in the far North of Europe Continent. They are five – Denmark, Finland, Norway, Sweden and Iceland , an island.

[47] Freya – the goddess of love and beauty in Norse folktales

[48] Freyer – brother of Freya

[49] Asgard pronounced as Aasgaard is the place of Nordic gods

[50] Odin is the most powerful Norse god

लगता है कि यह बिजली का देवता थोर[51] कहीं सुबह सुबह जल्दी जा रहा होगा नहीं तो देवताओं की नगरी में वहॉ के देवता नागरिकों को कौन जगा सकता है?"

कहते कहते वह अपने महल के छज्जे पर आ कर खड़ी हो गयी। वह तो सचमुच ही थोर था। वह अपने बहुत बड़े दो लम्बे बालों वाले बकरों से खींचे गये रथ पर सवार हो कर कहीं जा रहा था।

शाम को उन दो बकरों में से एक बकरा काटा जाने वाला था और खाया जाने वाला था सो वह बकरा बहुत धीरे धीरे चल रहा था और बहुत ही उदास दिखायी दे रहा था।

हालॉकि देवताओं के उस शहर में जितने भी जानवर मारे जाते थे वे बाद में सब ज़िन्दा कर लिये जाते थे पर फिर भी जानवरों को यह खेल पसन्द नहीं था।

फ्रेया ने थोर से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

थोर बोला — "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूॅ। मैं आज मिडगार्ड[52] ड्रैगन पकड़ना चाहता हूॅ।"

यह कहता हुआ थोर तुरन्त ही इन्द्रधनुषी पुल[53] की तरफ चला गया।

---

[51] Thor is the Norse god of Thunder

[52] Asgard pronounced as Aasgaard is the land of Norse gods and Midgard is Earth

[53] Bifrost or Rainbow Bridge which joins Devta's city Asgard to Midgard (Earth)

कुछ देर बाद ही वह बूयान टापू[54] पर बैठा हुआ था। उसने अपना जाल समुद्र में फेंक दिया था और बड़े धीरज से अपने शिकार का इन्तजार कर रहा था।

अचानक उसने एक बड़ी भयंकर आवाज सुनी जो जल्दी ही लोरी में बदल गयी। वह अजनबी गाने वाला इतनी होशियारी से वह लोरी गा रहा था कि थोर को नींद आने लगी।

अचानक फिर से वह भयानक आवाज हुई तो थोर की ऑख खुल गयी। इससे थोर बहुत ही नाराज हो गया। किसने थोर को सुलाने की हिम्मत की? कौन था जो इतनी भयानक आवाज निकाल रहा था।

उसने सोचा कि इस आवाज करने वाले को ढूँढा जाये सो वह जंगल की तरफ चल दिया जिधर से वह आवाज आ रही थी।

काफी देर तक घना जंगल पार करने के बाद थोर एक साफ जगह पर आ गया। वहॉ बीच में एक बहुत बड़ा ओक का पेड़ खड़ा हुआ था।

उस पेड़ की एक बहुत मोटी और मजबूत शाख पर एक बड़ा खूब घने बालों वाला और धारी वाला बिल्ला बैठा हुआ था। उसके नीचे दो नीले बिल्ली के बच्चे गेंद बने सो रहे थे।

---

[54] Buyan Island – in Slavic mythology, Buyan Island is described as a mysterious island in the ocean with the ability to appear and disappear using tides. Three brothers – Northern, Western, and Eastern Winds live there. It figures prominently in many famous myths. Koshchei or Koshchev the Deathless keeps his soul hidden there, secreted inside a needle placed inside an egg in the mystical oak-tree.

वह बिल्ला बहुत धीरे धीरे म्याऊँ म्याऊँ कर के अपने बच्चों को सुलाने के लिये लोरी गा रहा था। वह जादुई बिल्ला जो उस शाख पर बैठा था वह बायूँ[55] था।

थोर उस पर गुर्राया — "तुम क्या समझते हो कि तुम्हारे बच्चे बहुत सुन्दर हैं?"

बायूँ बिल्ले ने हाँ में सिर हिलाया और मुस्कुराया पर उसने गाना बन्द नहीं किया। फिर उसने अपना रंग बदल लिया और अपने बच्चों जैसा नीला हो गया।

थोर उसको धमकी देते हुए बोला — "क्या वह तुम ही थे जिसने मुझे सुलाने की कोशिश की?"

वह बिल्ला अपने तेज़ पंजे दिखाते हुए बोला — "हाँ, वह मैं ही था।"

थोर ने अपनी "ताकत की पेटी" कसी और बिल्ले की तरफ बड़े विश्वास के साथ देखा कि इतने में ही वे बिल्ले के बच्चे जाग गये और खाना माँगने लगे।

बिल्ला बोला — "तुम देख नहीं रहे कि मैं इनको अकेला ही देखने वाला हूँ पिछले वसन्त में मैं एक सुन्दर बिल्ली से मिला था उसी से मेरे ये बच्चे हुए हैं।

उसके बाद इनकी माँ मुझे छोड़ कर चली गयी। अब मुझ अकेले को ही इनकी देखभाल करनी पड़ती है। क्या तुम जानते हो

[55] Bayun – the magic cat

कि अकेले बच्चों को पालना कितना मुश्किल है? क्या तुम मेरे बच्चों की कुछ किस्मत बना सकते हो?"

थोर कुछ सोचते हुए बोला — "शायद।" उसको फ्रेया याद आ गयी। उसने सोचा कि कितना अच्छा रहेगा अगर वह इन प्यारे से नीले बिल्ली के बच्चों को उसको दे दे तो।

अचानक उनकी बात रुक गयी क्योंकि वे बच्चे चिल्ला पड़े थे। बायूँ बिल्ला प्यार से बोला — "सो जाओ मेरे बच्चों सो जाओ। पर ओ ताकतवर थोर, याद रखना। मेरे ये छोटे छोटे बच्चे कोई साधारण गली वाले बिल्ली के बच्चे नहीं हैं।

ये मेरे बच्चे हैं। अगर इनके साथ कुछ भी गलत हुआ तो... बस फिर देख लेना, हॉ।"

थोर बोला — "तुम मुझे ऐसी धमकी कैसे दे सकते हो? बर्फ वाले बड़े साइज को लोग[56] भी जब मेरा नाम सुनते हैं तो डर के मारे कॉप जाते हैं।"

थोर उस बिल्ले को पकड़ने ही वाला था पर वह उसको पकड़ नही सका। बायूँ बिल्ला जमीन पर कूद गया था और एक जादुई चिड़े गमायूँ में बदल कर उड़ गया।

थोर ने मजबूर हो कर पैर पटका, उन दोनों बच्चों को उठाया और अपने रथ की तरफ चल दिया।

[56] Translated for the word "Giant"

9 रुसलन और लुडमिला[57]

यह भी रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है जिसको अलैक्ज़ेन्डर पुशकिन ने रूस की एक लोक कथा के आधार पर एक महाकाव्य के रूप में लिखा था। यह कथा उसी से ली गयी है।

समुद्र के किनारे एक ओक का पेड़ खड़ा था। उसके चारों तरफ एक सोने की जंजीर पड़ी थी। वहॉ एक अक्लमन्द बिल्ला भी था जो उस ओक के पेड़ के चारों तरफ घूमता रहता था। जब वह बॉये को जाता था तो वह एक गीत गाता था।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार कीव के राजकुमार व्लादीमिर ने अपनी बेटी लुडमिला और नाइट रुसलन[58] की शादी के उपलक्ष्य में एक बहुत ही शानदार दावत दी।

लुडमिला के तीन उम्मीदवार और थे – रोगदे, फ़रलाफ़ और रतमीर।[59] वे सब रुसलन से जल रहे थे क्योंकि उसकी शादी लुडमिला से हो रही थी और वे रह गये थे।

---

[57] Ruslan and Ludmila – a folktale from Russia, Asia. By Alexander Pushkin.
Taken from the Web Site : http://stpetersburg-guide.com/folk/ruslan.shtml too.
This is one of the most favorite Russian tales written as an epic poem based on a folktale.
Its English translation in poetry is available at :
http://web.archive.org/web/20060104082442re_/www.sunbirds.com/lacquer/readings/1015

[58] The Prince Vladimir of Kiev (Ukraine) gave a party in the honor of the marriage of his daughter Ludmila and the Knight Ruslan.

[59] Rogday, Farlaf and Ratmir – names of the three other suitors of Ludmila

वे भी वहॉ थे। दावत की सब खुशियॉ घंटों तक चलती रहीं। जब सब कुछ खत्म हो गया तो रुसलन लुडमिला को सोने के कमरे की तरफ ले गया।

कि अचानक आसमान में बिजली चमकी और उसकी कड़क ने उस कमरे के फर्श तक को हिला दिया। एक अजीब सा कोहरा छा गया और उसके अन्दर से कहीं से एक आवाज आयी।

रुसलन अपनी पत्नी को डर के मारे अपने सीने से लगाने के लिये घूमा कि उसने देखा कि उसकी पत्नी तो वहॉ से गायब ही हो गयी थी। उसका तो कहीं पता ही नहीं था।

जब लुडमिला के पिता व्लादीमिर को लुडमिला के गायब होने का पता चला तो वह बहुत गुस्सा हुआ और बहुत चिन्तित हो गया। उसने तुरन्त ही यह शादी तोड़ दी और लुडमिला की शादी उससे करने का ऐलान कर दिया जो उसको ढूँढ कर घर लाता।

तुरन्त ही रुसलन, रोगदे, फ़रलाफ़ और रतमीर चारों ने अपने अपने घोड़े तैयार किये और उन पर सवार हो कर लुडमिला को ढूँढने चल दिये। कुछ दूर तक तो वे साथ साथ गये पर बाद में वे सब अलग अलग हो गये।

रोगदे बहुत ही घबराया हुआ था। बह बड़बड़ाता जा रहा था और उसकी बड़बड़ाहट दूर से भी सुनी जा सकती थी।

वह कह रहा था — "मैं लुडमिला को ले जाने वाले का खून कर दूँगा। मैं उसको मार दूँगा।"

एक बार उसने ऐसा सोच लिया तो जब वह उसको मिल गया तो उसने अपने घोड़े पर सवार हो कर उसका पीछा किया। बहुत जल्दी ही उसका पीछा करते करते उसने उसको एक गड्ढे में धकेल दिया।

उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिसको उसने पकड़ा था और जिसको उसने गड्ढे में धकेला था वह तो उसका प्रतियोगी फ़रलाफ़ था सो वह वहॉ से एक भी शब्द बिना कहे चला गया।

फ़रलाफ़ चारों नाइट्स में से सबसे ज़्यादा कायर था। जब वह गड्ढे में गिरा तो उसने भगवान को धन्यवाद दिया जब उसको वहॉ एक जादूगरनी नैना[60] मिल गयी।

नैना ने फ़रलाफ़ से कहा कि वह दूसरों को लुडमिला को ढूँढने दे। और जब उनमें से कोई भी लुडमिला को ले कर घर वापस आ रहे होगा तब हम उसको उससे रास्ते में ही छीन लेंगे।

रतमीर उस समय लुडमिला को ढूँढने दक्षिण दिशा में जा रहा था कि एक शाम वह एक किले के पास आ निकला जिसमें बहुत सारी सुन्दर सावधान लड़कियॉ रहती थीं। पर उसके बाद उसके बारे में फिर कभी कुछ नहीं सुना गया।

रुसलन का सुन्दर लुडमिला को ढूँढने का काम ठीक चल रहा था। जल्दी ही उसको एक गुफा मिल गयी जहॉ उसको एक बूढ़ा

[60] Witch Naina

जादूगर[61] मिल गया। उस बूढ़े जादूगर ने उसको बताया कि वह एक लड़की का प्यार पाने के लिये जादूगर बना था।

वह इस लड़की को अपनी जवानी के उन दिनों से जानता था जब वह फ़िनलैंड में रहता था। कई साल बाद वह जादू के ज़ोर से उस लड़की का दिल जीतने में सफल भी हो गया था पर तब तक वह बुरी[62] कमजोर और कुबड़ी हो गयी थी।

असल में यह लड़की और कोई नहीं वही जादूगरनी थी जो फ़रलाफ़ को उस गड्ढे में मिली थी जिसमें रोगदे ने उसको गिराया था यानी नैना। उसी समय से फ़िनलैंड का वह रहने वाला अब अकेला ही रह रहा था।

फ़िनलैंड वाले जादूगर ने रुसलन को बताया कि बुरे ओझा चरनोमोर[63] ने ही उसकी पत्नी को उठाया है पर उसने रुसलन को साथ में यह भी विश्वास दिलाया कि वह अपनी कोशिश जारी रखे आखीर में सब कुछ ठीक हो जायेगा। यह सुन कर रुसलन का हौसला बढ़ गया और वह फिर अपने रास्ते चल दिया।

जल्दी ही उसको अपना प्रतियोगी रोगदे मिल गया जिससे उसको लड़ाई करनी पड़ गयी। दोनों अपने अपने घोड़ों पर बैठ कर एक दूसरे से बहुत ज़ोर से लड़े पर आखीर में रुसलन ने किसी तरह

---

[61] Translated for the words “Old Wizard”. Wizard is the masculine word for the feminine word “Witch”.

[62] Translated for the word “Evil”.

[63] Sorcerer Chernomor

से उसको उसके घोड़े से नीचे गिरा दिया और उसको नाइपर नदी[64] में फेंक दिया।

कुछ देर चलने के बाद रुसलन को रास्ते में एक बहुत बड़ा सिर मिला। वह रुसलन को देख कर बहुत ज़ोर से पागलों की तरह से हॅसा और उसकी तरफ बहुत ज़ोर का एक हवा का झोंका फेंका जिससे रुसलन और उसका घोड़ा किसी तरह से बस गिरने से ही बच पाये।

फिर भी ताकतवर नाइट रुसलन किसी तरीके से उसकी जबान में अपना भाला मारने में सफल हो गया जिससे उसकी सॉस कुछ रुक सी गयी। फिर उसने उसको उठा कर एक तरफ को फेंक दिया।

रुसलन एक चमकीली तलवार से उसको फिर से मारना चाहता था जो उसको उस सिर के नीचे मिल गयी थी कि उस सिर ने उसके सामने अपनी हार मान ली और रुसलन से वायदा किया कि वह अब से हमेशा रुसलन का कहना मानेगा। सो रुसलन ने उसको छोड़ दिया।

अब हुआ यह कि वह सिर लुडमिला के उठाने वाले को यानी चरनोमोर को बहुत अच्छी तरह जानता था क्योंकि वह उसका भाई था। चरनोमोर ने उस चमकीली तलवार को हासिल करने के लिये

[64] Dnieper River – pronounced as Niper, a major river of Europe rising from Smolensk, Russia and going through Russia, Belarus, Ukraine to the Black Sea. It is the 4th longest river of Europe.

उसका एक लड़ाई में उसका सिर काट लिया था। वही तलवार अब रुसलन को मिल गयी थी

उस सिर ने रुसलन को यह भी बताया कि चरनोमोर की सारी ताकत उसकी दाढ़ी में थी। अगर वह उसकी दाढ़ी काट देगा तो उसकी ताकत बिल्कुल ही चली जायेगी। यह सुन कर रुसलन सिर को वहीं छोड़ कर वहॉ से भी आगे अपने रास्ते चल दिया।

पर इस सारे समय लुडमिला कहॉ थी? यह तो ठीक है कि नीच चरनोमोर उसको उठा कर ले गया था क्योंकि वह उससे खुद शादी करना चाहता था। सो वह उसको अपने किले में ले गया और वहॉ ले जा कर उसको आराम से रख दिया।

उसके कमरे के बाहर एक जादुई बागीचा था जिसमें लुडमिला आजादी से घूम सकती थी। उस बागीचे में बहुत अच्छे अच्छे पेड़ लगे हुए थे और बहुत सारी सुन्दर सुन्दर चिड़ियें थीं। पर उसको रुसलन की बहुत याद आती थी और वह उसके बिना वहॉ खुश नहीं रह पा रही थी।

जब चरनोमोर ने लुडमिला को अपने से शादी करने के लिये मनाने की कोशिश की तो लुडमिला बहुत नाराज हुई और उस समय में उसने उसका टोप उतार लिया और उसे खुद पहन लिया।

बाद में उसको पता लगा कि अगर वह उसको पीछे से पहनती तो वह तो उसके उस तरह से पहनने पर अदृश्य हो सकती थी।

सो अब जब भी वह चाहती कि चरनोमोर उसको न देखे कि वह कहॉ है तो वह उस टोप को उलटा कर के पहन लेती। और यह वह अक्सर करती।

पर चरनोमोर भी कम नहीं था। वह उसका पीछा नहीं छोड़ने वाला नहीं था। एक बार वह रुसलन का वेश रख कर उससे मिलने गया तो जब लुडमिला ने उसको देखा तो उसने अपना टोप उतार कर फेंक दिया और उससे मिलने के लिये दौड़ पड़ी।

बाद में जब उसे पता चला कि उसके साथ चाल खेली गयी है तो वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ी।

तभी असली रुसलन वहॉ आ गया और अब तमाशा शुरू हुआ।

आते ही उसने लुडमिला के सिर पर टोप उलटा कर के रख दिया ताकि चरनोमोर लुडमिला को न देख सके और वह उससे सुरक्षित रहे।

उसके बाद वह और चरनोमोर दो दिन तक लड़ते रहे। चरनोमोर ने अपनी जादुई ताकतें इस्तेमाल कीं जिससे वह हवा में सौ फीट ऊपर तक लड़ सका। पर रुसलन ने आखीर में अपनी तलवार से उसकी दाढ़ी काट दी। इससे दोनों जमीन पर गिर पड़े।

जैसे ही चरनोमोर की दाढ़ी कटी उसकी सारी ताकत खत्म हो गयी। इस तरह अब वह ताकतवर रुसलन का बराबर का लड़ने

वाला नहीं रह गया था बल्कि वह तो एक मामूली सा आदमी रह गया था।

चरनोमोर को हराने के बाद रुसलन ने तुरन्त ही अपनी पत्नी को ढूँढने की कोशिश की पर यह तो तुमको मालूम ही है कि उसने खुद ने लुडमिला को चरनोमोर का टोप उलटा कर के पहना दिया था ताकि वह चरनोमोर को दिखायी न दे सके पर अब तो वह उसको भी दिखायी नहीं दे रही थी।

इत्तफाक से रुसलन की तलवार लुडमिला के टोप में लग गयी और उसका टोप नीचे गिर पड़ा जिससे लुडमिला उसको दिखायी दे गयी। पर वह अभी भी बेहोश पड़ी थी।

तब रुसलन को अपने दिमाग में उस फ़िनलैंड वाले जादूगर की आवाज सुनायी पड़ी कि लुडमिला तब जागेगी जब वे कीव[65] लौट आयेंगे। सो रुसलन ने लुडमिला को उठाया और घर की तरफ लौट चला।

जब वह वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसको वह कटा हुआ सिर फिर मिला। इस बार तो रुसलन से लड़ने की वजह से जो उसको घाव लगे थे उनकी वजह से वह बिल्कुल मरा सा हो रहा था।

[65] Kiev is the capital of Ukraine.

यह देख कर कि रुसलन उसके भाई को हरा कर आ रहा था उस सिर ने सन्तुष्ट हो कर कि उसको न्याय मिल गया शान्ति से अपनी आखिरी सॉस ली और मर गया।

रुसलन ने उस सिर को तो वहीं छोड़ा और फिर घर की तरफ बढ़ चला। रास्ते में रात हो गयी सो वह रास्ते में ही रुक गया।

जब वह सो रहा था तो कायर फ़रलाफ़ और उस नीच जादूगरनी नैना ने रुसलन को तीन बार तलवार मारी और उसको मरने के लिये वहीं छोड़ दिया। काश वह फ़िनलैंड वाला जादूगर वहॉ अपना जादू करने के लिये होता।

फ़रलाफ़ ने लुडमिला को उठाया और उसको ले कर कीव[66] की तरफ चल दिया। जब वह कीव पहुॅचा तो लोगों ने उनका बहुत खुशी खुशी स्वागत किया। लुडमिला अभी तक बेहोश थी।

और यही नहीं तब तक खानाबदोशों ने भी कीव शहर पर हमला कर दिया था। पर जब यह लड़ाई चल रही थी एक बहुत ही ताकतवर लड़ने वाला वहॉ प्रगट हुआ जो अपने रास्ते में आते हुए सब दुश्मनों को मारता हुआ चला आ रहा था।

यह रुसलन था। फ़िनलैंड वाले जादूगर ने उसको उसके मरने से पहले ही ढूॅढ लिया था और उसको "ज़िन्दगी ओर मौत" के जादुई पानी से ज़िन्दा कर लिया था। बहुत जल्दी ही रुसलन अकेले ने सारे दुश्मनों को हरा कर शहर को बचा लिया।

[66] Kiev is the capital of Ukraine

अब उसने देखा कि उसकी पत्नी तो अभी भी बेहोश पड़ी है। सो रुसलन लुडमिला को उसके कमरे में ले गया और उसको एक जादुई अँगूठी की सहायता से जगाने की कोशिश करने लगा। यह जादुई अँगूठी इसको जादूगर ने दी थी। कुछ पल बाद ही लुडमिला ने आँखें खोल दीं।

इस तरह रुसलन और लुडमिला फिर से मिल गये। राजा व्लादीमिर ने उनकी शादी दोबारा कर दी और फिर वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

10 पाताल की ज़ारेवनाज़[67]

एक बार की बात है कि रूस में एक जगह एक पति पत्नी रहते थे। उनके तीन बेटे थे। उनके तीनों बेटे बड़े हो रहे थे सो उन पति पत्नी ने सोचा कि अब घर में कुछ पोते पोतियॉ खेलने चाहिये।

सो उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे ग्रिगोरी[68] को बुलाया और उससे कहा कि वह बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढे। ग्रिगोरी घर पर ही बहुत खुश था वह शादी भी नहीं करना चाहता था पर उन दिनों बच्चे वही करते थे जो उनसे करने को कहा जाता था।

सो ग्रिगोरी बाहर अपनी पत्नी ढूँढने चल दिया पर उसने उसे ढूँढने में बहुत मेहनत नहीं की। वह एक बहुत ही शर्मीला लड़का था सो वह सारे शहर में एक तरफ से गया और यह सोचते हुए दूसरी तरफ से निकल आया कि उसको किसी ने देखा नहीं।

जब वह पुराने शहर के फाटक से निकल रहा था तो कुछ हॅसती हुई लड़कियॉ उसके पास से निकल गयीं। उसने उनको यह दिखाने की बहुत कोशिश की कि उसका उनसे कोई वास्ता नहीं था। जब वे वहॉ से चली गयीं वह वहॉ से भाग लिया।

---

[67] The Tzarevnas of the Underground Kingdom – a folktale from Russia, Asia.
Tzarevna means “Princess”

[68] Gregory – name of the eldest son of the old couple

शहर से बाहर निकल कर वह एक ऐसी सड़क पर आ गया जहॉ दूर दूर तक कोई दिखायी नहीं दे रहा था। वहॉ आ कर उसको एक बहुत ही डरावना ड्रैगन[69] मिल गया।

तो डर के मारे वह दूसरी तरफ भागने लगा पर ड्रैगन भी उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और उससे बड़ी नम्र आवाज में बोला — "तुम मुझसे डरो नहीं मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा। क्या मैं जान सकता हूॅ कि तुम कहॉ जा रहे हो?"

कुछ पल तो ग्रिगोरी कुछ बोल नहीं सका पर कुछ देर बाद हकलाते हुए बोला — "ओह नहीं नहीं। मैं अपने घर वापस जा रहा हूॅ। मेरे माता पिता मेरी शादी करना चाहते हैं। पर मुझे कोई ठीक सी लड़की ही नहीं मिल रही है।"

ड्रैगन बोला — "तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारा इम्तिहान लेता हूॅ। अगर तुम उस इम्तिहान में पास हो गये तो तुमको पत्नी मिल जायेगी।"

क्योंकि वह ड्रैगन बहुत ही नम्रता से बोल रहा था इसलिये ग्रिगोरी को लगा कि विचार बुरा तो नहीं है सो वह इम्तिहान देने के लिये उसके साथ चल दिया।

चलते चलते वे दोनों एक काले संगमरमर की बड़ी सी चट्टान के पास आ पहुॅचे। ड्रैगन बोला — "अगर तुम इस चट्टान को हटा पाओगे तो तुमको वह मिल जायेगा जो तुम ढूॅढ रहे हो।"

---

[69] Dragon

ग्रिगोरी को वह पत्थर बिल्कुल भी भारी नहीं लग रहा था बल्कि उसको देख कर तो वह अपने आपको बहुत ही ताकतवर महसूस कर रहा था। सो उसने यह बोलते हुए पत्थर हटाना शुरू किया — "ओह इस पत्थर को तो मैं चुटकियों में हटा दूँगा।"

कह कर उसने पत्थर को पहले खींचा फिर उसको धक्का दिया पर वह पत्थर तो हिल कर ही न दिया। यह देख कर वह ड्रैगन से बोला — "चिन्ता न करो। मुझे लग रहा है कि शायद मैं इसको गलत तरीके से हटाने की कोशिश कर रहा हूँ। शायद इसको एक तरफ को धक्का देना पड़ेगा।"

उसने फिर ऐसा ही किया। पत्थर को धक्का लगाते लगाते वह हॉफने लगा, उसकी सॉस तेज़ हो गयी, उसके सिर में हथौड़े बजने लगे, उसका पसीना छूट गया और वह तो बस बिल्कुल बेहोश होने वाला ही हो गया।

यह देख कर ड्रैगन बोला — "अफसोस तुम तो इस इम्तिहान में ही फेल हो गये। तुमको अब पत्नी नहीं मिलने वाली।"

ग्रिगोरी को यह देख कर थोड़ा बुरा लगा कि वह इम्तिहान में फेल हो गया पर दूसरी तरफ यह सोच कर वह खुश भी हुआ कि अब उसको शादी नहीं करने पड़ेगी। यही सब सोचता हुआ वह अपने घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने माता पिता को बताया कि उसके साथ उस दिन क्या हुआ था। उसके माता पिता बहुत ही दुखी हुए पर उन्होंने यह ग्रिगोरी से कहा नहीं।

कुछ दिन बाद उन्होंने अपने दूसरे बेटे मीशा[70] को बाहर भेजने का इरादा किया कि वह भी बाहर जाये और अपने लिये एक पत्नी ढूँढ कर लाये।

मीशा भी वैसा ही महसूस करता था जैसा ग्रिगोरी महसूस करता था। उसको भी घर में बैठे रहना बहुत अच्छा लगता था और ज़िन्दगी को आसान तरीके से जीना अच्छा लगता था। पर उसको भी मालूम था कि उसको भी जाना पड़ेगा।

उसके साथ भी वही हुआ जो ग्रिगोरी के साथ हुआ था। उसको भी सड़क पर वही ड्रैगन मिला जो ग्रिगोरी को मिला था, या फिर शायद दूसरा भी हो सकता था, पर कुछ भी हो उसने भी मीशा से यही कहा कि वह उसका एक इम्तिहान लेगा और अगर वह उसमें पास हो गया तो समझो कि उसको उसकी पत्नी मिल गयी।

पर वह भी रोता हुआ घर वापस आया और रोते हुए अपने माता पिता को बताया कि वह भी वह पत्थर नहीं हटा सका।

माता पिता के मुँह से निकला — "ओह बेचारा मीशा। हम जानते है कि तुमने उस पत्थर को हटाने में अपनी पूरी कोशिश लगा दी होगी। पर खैर अब क्या हो सकता है।"

[70] Misha – name of the second son of the couple.

हालॉकि वे इस बात से पहले की तरह फिर से बहुत ही दुखी हुए फिर भी उन्होंने अपने इस दुख को छिपा कर ही रखा। पर रात को जब उनके बच्चे सो गये तो दोनों इस बारे में बात करने लगे कि अब उन्हें क्या करना चाहिये।

पिता बोला — "यह सब देख कर अब हम इवान[71] को तो उसकी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर नहीं भेज सकते क्योंकि वह तो कोई काम ठीक से करता ही नहीं है। वह तो सारा दिन बस अंगीठी के पास बैठा बैठा सूरजमुखी के फूल के बीज खाता रहता है।

इसके अलावा उसको बाहर भेजना खतरे वाला काम भी तो हो सकता है। क्या पता वह ड्रैगन उससे गुस्सा हो जाये और वह उसको मार दे।"

इसलिये इवान को बाहर नहीं भेजा गया जो इवान को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। उसने अपने माता पिता की बहुत मिन्नतें कीं और उनको बाहर जाने के लिये मना ही लिया सो उनको उसको भी अपनी पत्नी ढूँढने के लिये बाहर भेजना ही पड़ा।

पर अगली सुबह उन्होंने फिर अपना विचार बदल दिया। पर इस बात के लिये अब काफी देर हो चुकी थी क्योंकि इवान तो सुबह ही घर छोड़ कर अपनी यात्रा पर निकल गया था।

उसको भी सड़क पर ड्रैगन मिला। उसने उससे भी पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

[71] Ivan – name of the third and the youngest son of the couple.

इवान बोला — "मेरे भाई शादी करना चाहते थे पर उनको तो पत्नी मिली नहीं अब मेरी बारी है।"

उस ड्रैगन ने अपनी भौंहें उठा कर उससे पूछा — "क्या तुम सचमुच में शादी करना चाहते हो?"

इवान बोला — "क्यों नहीं।"

"तो तुम्हें एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा।"

"ठीक है।"

"पर क्या तुम सचमुच में इम्तिहान पास करना चाहते हो? तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे भाई तो उस इम्तिहान में फेल हो चुके हैं?"

"पर मैं उस इम्तिहान को पास करना चाहता हूँ।"

"तो फिर आओ मेरे साथ।"

दोनों उसी काले संगमरमर की चट्टान के पास आ पहुँचे जहाँ वह ड्रैगन पहले उसके दोनों भाइयों को ले कर आया था। ड्रैगन ने उससे भी उस चट्टान को वहाँ से हटाने के लिये कहा।

इवान ने उस चट्टान में एक ज़ोर की ठोकर मारते हुए कहा — "तुम्हारा मतलब इस चट्टान से है?"

"हाँ तुमने ठीक समझा मेरा मतलब इसी चट्टान से था।"

इवान चट्टान हटाते हुए बोला — "पर मेरे भाई लोग इसको क्यों नहीं हटा सके।" इवान ने देखा कि उस चट्टान के नीचे तो एक गहरी दरार खुली हुई थी।

ड्रैगन बोला — "शायद वे इसको हटाने के लिये काफी ताकत का इस्तेमाल कर रहे थे।"

"देखता हूँ यह कितनी गहरी होगी।" कह कर इवान नीचे जमीन पर झुक कर उसके अन्दर झाँकने लगा। उसने देखा कि उसमें तो बहुत अँधेरा है और वह तो काफी गहरी चली गयी है। क्योंकि उसके अन्दर तो एक खोखली नली चली गयी थी और नीचे जा कर तो वह दिखायी भी नहीं दे रही थी।

यह देख कर इवान काँप गया और एकदम से पीछे हट गया।

उसने ड्रैगन से पूछा — "इसमें अन्दर क्या है?"

"क्या? इसके नीचे? इसके नीचे तो पाताल[72] है और क्या है?"

"मैंने तो इसके बारे में कभी नहीं सुना। क्या है यह?"

"अरे तुमको नहीं पता। दूसरे राज्यों की तरह से वहाँ भी राज्य हैं जैसे "ताँबे का राज्य", "चाँदी का राज्य" और "सोने का राज्य"[73] और हर राज्य में एक एक ज़ारेवना[74] है।"

इवान बोला — "अरे यह तो बहुत अच्छा है। सो जब मैं यह इम्तिहान पास कर लूँगा तो वह लड़की मुझे कहाँ मिलेगी जिससे मुझे शादी करनी है।"

"वह लड़की तुम्हें नीचे मिलेगी। तुम कम से कम एक ज़ारेवना से शादी कर लो।"

---

[72] Translated for the word "Underworld".

[73] Copper Kingdom, Silver Kingdom, Golden Kingdom

[74] Tzarevna – Princess – daughter of the Tzar

"क्या उनमें से एक से शादी? नहीं नहीं कभी नहीं। बहुत बहुत धन्यवाद। मैं पाताल के राज्यों में नहीं जा रहा। मुझे तो वहॉ लोग मार देंगे।"

अचानक ड्रैगन ज़ोर से चिल्लाया — "पर इवान तुम इसी लिये तो यहॉ हो कि तुमको उन्हें आजाद कराना है। वे सब वहॉ पर कैद हैं।"

ड्रैगन की भयानकता को देख कर तो इवान इतना घबरा गया कि वह तो बस यही सोचता रह गया कि किसी तरह से वह सुरक्षित घर पहुॅच जाये।

वह बुड़बुड़ाया — "पहले मैं इसके बारे में सोच लूॅ।"

यह सोचते हुए कि थोड़ी देर में ही ड्रैगन थक जायेगा और वहॉ से चला जायेगा वह वही खड़ा खड़ा उस दरार में से उस खोखली नली को देखता रहा।

उसने देखा कि उस दरार में उस खोखली नली में हो कर चमड़े की एक कुर्सी दो रस्सियों के सहारे नीचे की तरफ लटक रही थी। उसके मुॅह से निकला — "अरे यह क्या है?"

ड्रैगन बोला — "तुम इस चमड़े की कुर्सी में बैठ जाओ और मैं तुमको नीचे उतार दूॅगा। अगर तुमको वहॉ देखने में अच्छा न लगे तो तुम अपनी रस्सी दो बार खींच देना मैं तुमको वापस ऊपर खींच लूॅगा।"

अब तक इस पाताल के बारे में इवान की उत्सुकता काफी जाग चुकी थी सो उसने सोचा कि क्यों न एक बार वहॉ जा कर देखा जाये कि वहॉ क्या है।

सो वह ड्रैगन से बोला — "पर अगर में यह रस्सी दो बार खींचूँ तो तुम मुझको तुरन्त ही ऊपर खींच लेना। ठीक है?"

ड्रैगन ने इवान से वायदा किया कि जैसे ही वह वह रस्सी दो बार खींचेगा तो वह उसको ऊपर खींच लेगा। इवान उस चमड़े की कुर्सी में बैठ गया और ड्रैगन ने वह कुर्सी नीचे उतार दी।

इवान उस कुर्सी में बैठा झूलता हुआ उस खोखली नली के सहारे अँधेरे में नीचे चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि वह अँधेरा कभी खत्म होने पर भी आयेगा भी या नहीं।

नीचे जाते जाते इवान ने आखिरी बार रोशनी के लिये ऊपर देखा यानी रूस का आसमान देखा और फिर सोचा कि पता नहीं अब वह आसमान फिर कभी देखेगा या नहीं।

उस खोखली नली में अब सब कुछ बिल्कुल शान्त हो गया था। उसकी दीवारों में लगे क्रिस्टल चमक रहे थे पर उनसे वहॉ कोई रोशनी नहीं हो रही थी।

उसने चिल्ला कर ड्रैगन से अपने आपको वापस खींच लेने के लिये आवाज लगायी पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ। वह तो यह बिल्कुल ही भूल गया था कि अपने आपको ऊपर खींचने के लिये उसको चिल्लाना नहीं था बल्कि रस्सी को दो बार खींचना था।

उसकी अपनी ही आवाज की गूँज उसको सुनायी दी तो वह और डर गया। उसकी कुर्सी भी बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी। वह अगर उस कुर्सी में ज़रा सा भी हिलता तो उस खोखली नली की दीवार से टकरा जाता।

मिट्टी के ढेले और पत्थर के टुकड़े नीचे गिरने लगते। उसने उनके नीचे गिरने की आवाज सुननी चाही भी पर उसे कुछ सुनायी ही नहीं दिया।

सो जब उसकी कुर्सी झूलती हुई उस खोखली नली से हो कर नीचे जा रही थी उसके मन में एक अजीब सा विचार आया कि यह तो एक जाल भी हो सकता है और वह ड्रैगन तो मुझे कभी भी नीचे गिरा सकता है।

और यह विचार आते ही उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं अपना चेहरा अपनी बॉहों से ढक लिया और यह सोचना शुरू कर दिया जैसे कि वह अपने घर में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ है।

हालॉकि इससे उसका कुछ खास काम नहीं बना पर फिर भी वह कुछ शान्ति महसूस करने लगा। वह सोच रहा था कि पता नहीं ड्रैगन अभी भी उसकी कुर्सी की रस्सी पकड़े वहॉ खड़ा होगा या नहीं। फिर उसने सोचा "जरूर खड़ा होगा क्योंकि नहीं तो वह तो इससे भी कहीं और ज़्यादा तेज़ी से नीचे जा रहा होता।"

जल्दी ही अब उसको सॉस लेने में भी परेशानी होने लगी। उसकी पलकें भारी होने लगी थीं। "मुझे जागते रहना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इस गड्ढे का कहीं कोई अन्त ही न हो।"

धीरे धीरे वह बेहोश सा होने लगा।

जब वह कुछ होश में आया तो उसने धुँधलके में देखा कि वह ठंडे पत्थरों के ऊपर लेटा हुआ है और उस खोखली नली से हरे रंग की रोशनी निकल रही है।

उसने देखा कि वह अभी भी उसी चमड़े की कुर्सी में बैठा हुआ है। उसने उस कुर्सी की चमड़े की पट्टियॉ खोल दीं। अब वह थोड़ा आराम से सॉस ले पा रहा था या हो सकता है कि ऐसा उसको इसलिये महसूस हो रहा हो कि वह अब इस माहौल का आदी हो चुका था।

इवान तॉबे के राज्य में

इवान ने अपना चारों तरफ देखा कि वह वह रास्ता ढूँढ सके जहॉ से वह पाताल में पहुँच पायेगा। जब उसकी ऑखें धुँधलके में देखने की आदी हो गयीं तो उसको उस खोखली नली से निकलते हुए कई रास्ते दिखायी दिये।

उनमें से एक रास्ते के आखीर पर उसको लाल से रंग की रोशनी चमकती दिखायी दी। वह उसी चमकती हुई रोशनी की तरफ चल दिया। जब वह उसके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह

रोशनी तो तॉबे के रंग की थी। कुछ ही देर में वह रास्ता बन्द हो गया और वह बाहर खड़ा नजर आया।

बाहर निकल कर उसने देखा कि वह तो समुद्र के किनारे एक तॉबे के जंगल में चल रहा था। उसने ऊपर आसमान की तरफ देखा पर उसको सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया। केवल भारी भारी बादल ही हल्की हवा में लटके हुए थे और पेड़ों के ऊपर कोहरा छाया हुआ था।

जब वह उस तॉबे के जंगल से बाहर निकला तो उसके सामने तॉबे का बना एक महल खड़ा था। महल का दरवाजा खुला और उसमें से एक बहुत ही सुन्दर ज़ारेवना सीढ़ियॉ उतर कर उसके सामने आयी।

ऐसा लगता था जैसे कि उस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई थी। यहॉ तक कि ज़ारेवना जो कपड़े पहने हुई थी वे कपड़े भी बहुत ही पतले तॉबे के बने हुए थे और जब वह उसके पास आ रही थी तो बड़ी अजीब सी आवाज कर रहे थे। उसके लम्बे लम्बे बाल भी तॉबे के रंग के थे। उसने इवान का बहुत प्यार से स्वागत किया।

"आओ। इस तॉबे के राज्य में तुम्हारा स्वागत है। आओ महल में आओ और मुझे बताओ कि तुम कहॉ से आये हो और कहॉ जा रहे हो।"

इवान के कपड़े और उसके शरीर की खाल भी उसके तॉबे की रोशनी से तॉबे के रंग की हुई जा रही थी। वह उसकी चकाचौंध से कुछ बेहोश सा होता हुआ उसके सामने काफी नीचे तक झुक कर बोला — "प्रिय राजकुमारी जी आप मुझसे कई सवाल पूछ रही हैं और आपने मुझे अभी तक कुछ खाने पीने के लिये तो दिया ही नहीं है।"

यह सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर गयी और इवान के लिये कुछ खाने और कुछ पीने के लिये ले आयी। हालॉकि वहॉ का वह तॉबे के रंग का खाना देखने में बड़ा अजीब सा था पर उसने जितने खाने अब तक खाये थे उन सबमें वह सबसे ज़्यादा स्वादिष्ट था।

उसने सोचा शायद उसके ऊपर जो तॉबे के रंग की रोशनी पड़ रही थी इसी लिये वह उसको ऐसा लग रहा होगा।

लगता है जैसे कि उस ज़ारेवना ने इवान के मन की बात पढ़ ली हो सो वह मुस्कुरा कर बोली — "ऐसा मत सोचना कि यह सब तॉबे के रंग की रोशनी की करामात है। बहुत सारे लोगों ने यह गलती की है और हमारे पानी में तैरने की भी गलती की है।

यह विचार ठीक नहीं है। इस राज्य में हर चीज़ तॉबे की बनी हुई है। यहॉ तक कि अब तो तुम भी तॉबे के बने हुए हो गये हैं।"

यह सुन कर इवान ने अपना चेहरा छू कर देखा तो कॉप गया। वह ठीक कह रही थी। उसकी खाल सख्त और ठंडी हो गयी थी।

"पर मैं धातु का आदमी नहीं बनना चाहता।"

जैसे ही वह यह बोला उसको लगा कि उसकी आवाज भी धातु की आवाज जैसी हो गयी है।

वह हॅस कर बोली — "पर अब तो तुम वैसे बन ही गये हो।"

अचानक ज़ारेवना को लगा कि इवान को धातु का बनने में अच्छा नहीं लग रहा है सो वह फिर बोली — "तुम चिन्ता मत करो इवान। यह बदलाव तो केवल उसी समय के लिये है जब तक तुम यहॉ हो बाद में यह सब खत्म हो जायेगा। यह सब तो जादू का कमाल है।

जब हम लोग ऊपर की दुनियॉ में चले जाते हैं तो हम लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही हो जाते हैं। इसलिये अब तुम यहॉ आराम से बैठो और मुझे अपने बारे में कुछ बताओ। अगर तुम मुझे यहॉ से आजाद कराने आये हो तो मेरा यह जानना बहुत जरूरी है।"

इवान ने पूछा — "आप यहॉ कबसे रहती हैं।"

राजकुमारी ने कुछ दुखी होते हुए कहा — "मुझे किसी और जगह की याद ही नहीं है। मुझे केवल सूरज और चॉद नाम की चीज़ों की भी बहुत धुॅधली सी याद है। पर यह भी अब बहुत पुरानी बात हो गयी।"

तब इवान ने ज़ारेवना को अपने बारे में और ड्रैगन के मिलने के बारे में सब कुछ बताया। उसने उसको यह भी बताया कि वह

अपने लिये एक पत्नी ढूँढने निकला था। उसको बहुत खुशी होगी अगर वह उससे शादी कर लेगी।

राजकुमारी ने जवाब दिया — "नहीं। यह नहीं हो सकता इवान क्योंकि मैं यह जगह तभी छोड़ सकती हूँ जबकि पहले सुनहरी ज़ारेवना यहाँ से आजाद हो जाये।

उसके लिये तुम पहले समुद्र के किनारे वाले जंगल में से जाओ और फिर अँधेरी सुरंग में से हो कर जाओ तो तुम चाँदी के राज्य में पहुँच जाओगे। वहाँ तुमको एक और ज़ारेवना मिलेगी जो मुझसे भी ज़्यादा सुन्दर होगी।"

सो इवान उसे वही छोड़ कर चाँदी के राज्य में जाने के लिये तैयार हुआ। उसके जाने से पहले इस ताँबे के राज्य वाली ज़ारेवना ने उसको उसकी रक्षा के लिये एक ताँबे की अंगूठी दी।

इवान ने उसको इसके लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

इवान चाँदी के राज्य में

इवान सुरंग में चलता रहा तो उसको उस सुरंग के आखीर में एक सफेद रोशनी चमकती दिखायी दी। जैसे जैसे वह उस रोशनी के पास आता गया उस रोशनी की चमक तेज़ और और तेज़ होती गयी। जल्दी ही वह एक बड़ी सी गुफा में खड़ा हुआ था।

उसकी तो छत ही बहुत ऊँची दिखायी देती थी जैसे वह मीलों ऊपर तक हो। उस गुफा की छत से चाँदनी की एक चमकीली किरन सफेद बिर्च के जंगल[75] के ऊपर पड़ रही थी। चाँदी जैसे सफेद समुद्र के किनारे पर एक महल खड़ा था।

गुफा के फर्श पर चाँदी का मुलायम रेत बिखरा पड़ा था। उसकी छत से चमकते हुए पत्थर लटके थे जिनसे रोशनी हो रही थी। आवाजों में वहाँ केवल हवा की और समुद्र के किनारे पर उसकी लहरों के टकराने की ही आवाज हो रही थी।

समुद्र के किनारे एक ज़ारेवना अपनी घोड़ी पर सवार हुई घूम रही थी। इवान को देख कर वह उसकी तरफ घूमी तो घोड़े की कुदान से समुद्र का ठंडा पानी जो इधर उधर बिखरा तो इवान काँप गया।

वह अपने घोड़े की रास पकड़ कर घोड़े को सीधे उसके सामने ले आयी। अपने चेहरे से अपने चाँदी के बाल हटाते हुए वह बोली — "इस चाँदी के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।"

इवान ने सोचा कि जैसे पहले वाली ज़ारेवना ताँबे की बनी थी शायद यह ज़ारेवना चाँदी की बनी हुई होगी। उसने उसको बहुत नीचे तक झुक कर नमस्ते की। उसने भी इवान से पूछा कि वह कहाँ से आया था और कहाँ जा रहा था।

[75] Translated for the words "Silver Birch" tree. See its picture above.

थोड़ा रुक कर वह बोला — "प्रिय राजकुमारी, तुम्हारे सवालों के जवाब देने से पहले मुझे कुछ खाना और पीना चाहिये।"

वह उसको महल के अन्दर ले गयी और उसको कुछ खाने के लिये और शराब पीने के लिये दी। वहाँ खाना चाँदी की तरह सफेद था और शराब भी बिल्कुल चमकती हुई सफेद थी।

जब वह खा रहा था तो उसने अपने हाथों की तरफ देखा। उसने देखा कि उसका ताँबे जैसा रंग तो बिल्कुल ही चला गया था और अब उस रंग की जगह चाँदी का रंग लेने लगा था।

उसने अपने बालों में अपनी उँगलियाँ फिरायीं तो उनमें भी उसको कुछ अजीब सी आवाज सुनायी दी। उसने सोचा "उम्मीद है कि यह सब भी बहुत देर तक नहीं रहेगा।

जब वह खा चुका तो ज़ारेवना से बोला कि वह एक पत्नी की तलाश में था। क्या वह उससे शादी करना पसन्द करेगी।

वह बोली — "अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। तुमको इस अँधेरी सुरंग से जाना पड़ेगा जब तक कि तुम सोने के राज्य में न पहुँच जाओ। वहाँ एक और ज़ारेवना तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पहले तुम्हें उसे आजाद कराना पड़ेगा।"

उसने भी उसको एक चाँदी की अँगूठी दी और कहा — "लो यह चाँदी की अँगूठी लो और देखो इसे हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी रक्षा करेगी।"

इवान ने उससे वह चॉदी की अॅगूठी ली उसको धन्यवाद दिया और अपनी आगे की यात्रा पर आगे बढ़ गया।

इवान सोने के राज्य में

उस अॅधेरी सुरंग में कुछ दूर चलने के बाद इवान को उसके आखिरी हिस्से पर एक सुनहरी रोशनी दिखायी दी। पहले की तरह से जब वह उस सुरंग के आखीर में पहुॅचा तो यह गुफा तो पहली दो गुफाओं से भी बहुत बड़ी थी।

ज़ार के इस राज्य में तो हर चीज़ सोने में नहायी जैसी लग रही थी। एक पल को तो उसको लगा कि वह सूरज देख रहा है पर जब उसने ऊपर देखा तो उसको इस रोशनी में थोड़ी गर्मी तो लगी पर बाहर की दुनियॉ में उसे सूरज कहीं दिखायी नहीं दिया।

पर जब उसने बाद में उसके बारे में सोचा तो उसने देखा कि वह तो पानी के ऊपर धूप की चमक पड़ रही थी। उस रोशनी में तो उसकी अपनी खाल और कपड़े भी सुनहरे लग रहे थे। उस सोने के राज्य में सारी चीज़ें असली सोने की थीं।

ज़ारेवना भी अपने महल के सामने सुनहरी रेत पर खड़ी हुई थी। वह इवान को देख कर बहुत खुश हुई और उसने इवान के सामने सुनहरी खाना और सुनहरे रंग की चमकती शराब रखी।

इवान ने उसको बताया कि वह अपने घर से अपनी पत्नी ढूँढने निकला था। फिर उसने उससे कहा — "अगर तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो तो अभी मेरे साथ चलो।"

यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजकुमारी ने उसे मुस्कुरा कर जवाब दिया — "हॉ मैं तुमसे शादी करूँगी। पर पहले तुम यह सोने की अँगूठी लो और देखो तुम इसको तॉबे की और चॉदी की अँगूठियों के साथ साथ हमेशा पहने रहना। यह तुम्हारी हमेशा रक्षा करेगी। अब हम चलते हैं और अपनी बहिनों को आजाद कराते हैं।"

कह कर वे उसी अँधेरी सुरंग से वापस चल दिये। वे चॉदी के राज्य से गुजरे। वहॉ चॉदी के राज्य वाली ज़ारेवना ने उनका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया और वह भी उनके साथ चल दी। फिर वे तॉबे के राज्य में आये जहॉ से पहली ज़ारेवना भी उनके साथ हो ली।

उसके बाद वे उस जगह आये जहॉ इवान ऊपर से उस खोखली नली से नीचे उतरा था। उसमें चमड़े की कुर्सी अभी भी लटकी हुई थी पर उस खोखली नली का अन्त उसे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

उसको पता ही नहीं था कि उसके दोनों भाई वहॉ खड़े हुए थे। असल में जब इवान कई दिनों तक नहीं लौटा तो उसके माता पिता ने उनको इवान को ढूँढ लाने के लिये भेजा था।

उन्होंने अन्दाज लगाया कि शायद वह यहीं नीचे होगा सो वे वहॉ घंटों खड़े खड़े इस बात की हिम्मत बटोर रहे थे कि वे वहॉ नीचे कैसे उतरें।

बाद में जब उनकी हिम्मत नहीं पड़ी तो उन्होंने एक दूसरे को यह कह कर बहला लिया कि शायद इवान मर गया।

वे लोग वहॉ से जाने ही वाले थे कि तॉबे के राज्य वाली ज़ारेवना उस चमड़े की कुर्सी में चढ़ गयी और उसकी रस्सी को एक हल्का सा झटका दिया।

इवान के भाइयों ने रस्सी हिलती देखी तो उनको लगा कि कोई उनसे नीचे से कुछ कहना चाहता है सो उन्होंने वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी।

जब वह चमड़े की कुर्सी ऊपर आयी तो उसमें तो तॉबे के राज्य की ज़ारेवना बैठी हुई थी। ऊपर आ कर उसने वह कुर्सी फिर से नीचे भेज दी। इस बार चॉदी के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी और फिर सोने के राज्य की ज़ारेवना ऊपर आयी।

आखीर में इवान उस चमड़े की कुर्सी में बैठा। उसके भाइयों ने उसे खींचा पर अब तक वे उस रस्सी को खींचते खींचते थक चुके थे सो वे बहुत धीरे धीरे रस्सी खींच रहे थे।

पर जब उनको यह पता चला कि उस कुर्सी में इवान था तो उनको उससे जलन होने लगी कि इवान वहॉ सफल हो गया था जहॉ वे बुरी तरह फेल हो गये थे।

ग्रिगोरी बोला कि "हम उसकी सहायता क्यों करें।"

मीशा भी बोला "इस तरह से तो सारे गॉव में लोग हमारी हॅसी उड़ायेंगे और हम बदनाम हो जायेंगे।"

सो जब तक इवान आधे रास्ते तक भी नहीं आया था कि उसके आने से पहले ही ग्रिगोरी नीचे झुका और इससे पहले कि ज़ारेवनाऐं उसे रोक सकतीं उसने उस चमड़े की कुर्सी की रस्सी काट दी।

तीनों ज़ारेवनाऐं इवान के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ीं। उन्होंने इवान के भाइयों से बहुत प्रार्थना की कि वे उसको बचा लें पर वे तो उसकी सुनने वाले थे नहीं।

ज़ारेवनाऐं तो बस अब इसी से सन्तुष्ट थीं कि इवान उनकी दी हुई ॲगूठियॉ अभी तक पहने था।

इवान का पाताल से बाहर निकलना

उधर रस्सी के कटते ही इवान उस ॲधेरे खोखली नली में नीचे गिर पड़ा। वह दो दिन तक तो वहॉ से हिल भी नहीं सका। जब वह हिलने डुलने लायक हो गया तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा बैठ गया कि अब वह बाहर जाने का रास्ता कैसे पायेगा।

उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। वह यही समझ नहीं पा रहा था कि वह वहॉ से बाहर जाने के लिये किससे पूछे और अब कौन

सी सुरंग ले। फिर यह सोच कर उसने एक दूसरी ही सुरंग ली कि शायद यही सुरंग उसको वहॉ से बाहर ले जायेगी।

वह सुरंग धीरे धीरे नीची होती जा रही थी। कहीं कहीं तो उस सुरंग की छत इतनी नीची थी कि उसको बहुत झुक कर चलना पड़ रहा था और कभी कभी तो उसको पत्थरों पर घुटनों के बल भी चलना पड़ रहा था।

कुछ देर इस तरह चलने के बाद इवान को लगा कि वह सुरंग कुछ चौड़ी और ऊॅची हो गयी है। जल्दी ही वह एक बहुत ही बड़ी गुफा में खड़ा था। यह गुफा तो उसको किसी दूसरी दुनियॉ का ही हिस्सा लग रही थी।

हालॉकि वहा काफी अॅधेरा था पर फिर भी वह वहॉ ठीक से देख पा रहा था। वहॉ आसमान में बादल बहुत नीचे थे सो वह यह नहीं जान सका कि उस राज्य के आसमान में चॉद या तारे थे या नहीं।

वह वहॉ एक जंगल में दलदल के किनारे खड़ा था। सीलन की गन्ध चारों तरफ उड़ रही थी, हवा ठंडी थी सो वह इधर उधर किसी ऐसी गर्म जगह की तलाश में था जहॉ वह उस ठंड से बच सके। सारे में वहॉ कई रंगों के और कई शक्लों के मुशरूम उगे हुए थे।

सुबह होने के कुछ देर बाद ही इवान को एक बहुत ही छोटा सा बूढ़ा मिला। उसकी बहुत लम्बी सफेद दाढ़ी थी और वह एक पेड़ की अजीब सी शक्ल की जड़ पर बैठा हुआ था।

उसने उस बूढ़े को अपनी सारी कहानी बतायी और पूछा कि वह कैसे मॉ रूस की नम जमीन पर वापस जा सकता है। उस बूढ़े ने अपनी एक उॅगली से पास में लगे ओक के पेड़ों के एक झुंड की तरफ इशारा किया और बोला — "क्या तुम उन ओक के पेड़ों के पीछे खड़ी गोल मीनार देख रहे हो?"

इवान ने उधर देखा जिधर वह बूढ़ा इशारा कर रहा था तो पेड़ों के पीछे उसको एक पतली सी मीनार का ऊपर का हिस्सा वहॉ से झॉकता हुआ दिखायी दे गया। वह बोला "हॉ। मुझे वह मीनार दिखायी दे रही है।"

बूढ़ा आगे बोला — "उस मीनार में एक बहुत ही लम्बा जादूगर[76] रहता है। वह इतना लम्बा है कि उसका सिर तो छत को छूता है। तुम वहॉ चले जाओ वह तुमको बतायेगा कि तुम वापस रूस कैसे पहॅुच सकते हो।"

इवान ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उस लम्बी मीनार की तरफ चल दिया जिसमें वह लम्बा जादूगर रहता था। जब वह उस मीनार के पास पहॅुचा तो उसको लगा कि जो कुछ वह सोच रहा था वह वह नहीं था बल्कि वहॉ तो एक मुलायम सा धुऑ था जो उस मीनार की एक बहुत ही छोटी सी खिड़की से बाहर निकल रहा था।

वह मीनार के और पास गया और वहॉ जा कर उसका दरवाजा खोला तो चॉदी के जाले के कुछ टुकड़े उसके चेहरे पर आ कर

[76] Translated for the word "Sorcerer".

पड़े। इससे उसको लगा कि जैसे वह मकड़ियों के हजारों जालों के बीच चल कर आ रहा हो।

उसने अपने चेहरे से जितने अच्छी तरह से वह साफ कर सकता था वे छोटे छोटे रेशमी जाले के टुकड़े साफ किये और अन्दर जाने से पहले उसने अपनी बहुत ज़ोर से आती हुई छींक को भी रोका जो उन जालों की वजह से उसको आने वाली थी।

खुशकिस्मती से दरवाजा बाहर की तरफ खुला वरना उसको उस मीनार में घुसने में भी बहुत मुश्किल होती। क्योंकि हालॉकि वह मीनार बहुत ऊँची थी पर साथ में वह तंग भी बहुत थी। उसमें घुसने के लिये भी इवान को अपने आपको उसकी दीवार से सट कर ही उसके अन्दर घुसना पड़ा।

जैसे ही वह उस मीनार के अन्दर घुसा तो उसको वहॉ वह जादूगर खड़ा दिखायी दे गया।

उसके अन्दर वह लम्बा जादूगर खड़ा खड़ा अपनी चॉदी जैसी दाढ़ी के बालों को हाथीदॉत की कंघी से कंघी कर रहा था। उसके सिर के बाल उसकी दाढ़ी जितने ही लम्बे थे पर उसकी खोपड़ी पर गंजेपन का एक चमकदार चकत्ता था। शायद यह चकत्ता वहॉ इसलिये था कि उस जगह वह उस मीनार की छत से छूता था।

उसने कत्थई रंग की एक थैले जैसी पोशाक पहन रखी थी जिस पर सारे में चॉदी के बाल लगे हुए थे।

जब उसने इवान को देखा तो उसने अपनी दाढ़ी के बालों में कंघी करना रोक दिया और कंघी को साफ करना शुरू कर दिया। इससे उसके बालों के कई सारे छोटे छोटे बादल खिड़की के बाहर उड़ गये। और बहुत सारे बाल उसके कमरे में भी इधर उधर उड़ने लगे।

कुछ बाल उसके चेहरे के चारों तरफ भी उड़ने लगे जिससे उसके चेहरे का काफी हिस्सा ढक गया। इससे इवान उसका पूरा चेहरा भी एक बार में नहीं देख सका।

इवान से बात करने से पहले जादूगर को अपना गला साफ करने में कई मिनट लग गये। तब कहीं जा कर वह इवान से बड़ी ऊँची आवाज में बोला — "किसी ने रूसी हड्डियों को यहाँ आने के लिये नहीं कहा। वे तो यहाँ अपने आप ही आयी हैं।"

यह सुन कर इवान ने थोड़ा इन्तजार किया कि शायद वह जादूगर कुछ और बोले पर वह और कुछ भी नहीं बोला क्योंकि बदकिस्मती से उसके सिर के सामने जादूगर के बालों का एक बहुत बड़ा बादल आ गया था सो न तो वह कुछ देख ही सका और न ही कुछ बता सका कि वह जादूगर क्या सोच रहा था।

इवान ने उस जादूगर को हँसाने की बहुत कोशिश की जैसे अपनी गर्दन टेढ़ी कर के और उसके चेहरे की तरफ देख कर वह बोला — "हाँ वे अपने आप ही आयी हैं।"

उस लम्बे जादूगर ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और फिर से अपनी दाढ़ी में कंघी करने लग गया।

इवान आगे बोला — "ओ ताकतवर जादूगर। क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मैं वापस अपनी मॉ रूस की नम जमीन पर कैसे पहुँच सकता हू?"

पर वह जादूगर फिर से अपनी कंघी साफ करने लग गया। उसकी कंघी से निकले बालों का बादल काफी तो खिड़की से बाहर उड़ गया पर काफी फिर भी कमरे में भी उड़ता रहा।

कई मिनटों बाद उसने फिर अपना गला साफ किया और अपनी उसी ऊँची आवाज में बोला — "मॉ रूस की नम जमीन पर पहुँचने के लिये तुमको यहॉ से दॉयी तरफ करीब करीब तीस गहरी झील जाना चाहिये।

वहॉ दूर जा कर तुमको एक झोंपड़ी मिलेगी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी होगी। उस झोंपड़ी में एक बूढ़ी जादूगरनी बाबा यागा रहती है।

उस झोंपड़ी में घुसने से पहले तुमको जादू के कुछ शब्द बोलने होंगे। इस बुढ़िया के पास एक गरुड़[77] चिड़ा है जो तुमको मॉ रूस की नम जमीन तक ले जा सकता है।"

इवान ने पूछा — "और वे जादू के शब्द क्या हैं?"

[77] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

ऊपर से आवाज आयी — "तुमको पता चल जायेगा।"

और उस जादूगर ने फिर से अपना गला साफ करना शुरू कर दिया। उसको अपना गला साफ करते करते फिर मिनटों लग गये और इवान बड़ी उत्सुकता से उन जादू के शब्दों को सुनने का इन्तजार करता रहा।

उसको जादूगर के ये शब्द सुन कर बड़ी नाउम्मीदी हुई — "यहॉ बहुत ही खुश्की है।"

यह सुन कर तो इवान का अपना गला भी खुश्क होने लगा था। वह बोला "हॉ यह तो है।" और कुछ ताजा हवा लेने के लिये वह उस मीनार के बाहर निकल आया।

उसकी समझ में यही नहीं आया कि जादूगर के उन "जादू के शब्दों" से उसका क्या मतलब था। शायद उसको कुछ गलती लग गयी होगी क्योंकि वह यह सब कैसे जान सकता था।

फिर उसने सामने की तरफ देखा तो उसको सामने कुछ झीलें दिखायी दीं सो वह वहीं उनके आस पास चक्कर काटता रहा। उसको वहॉ उनके आस पास चक्कर काटते हुए और यह गिनते हुए कि वे वाकई में तीस झीलें थीं कई दिन बीत गये क्योंकि दूर उसको कई और भी झीलें दिखायी दे रही थीं।

उसको यह पता ही नहीं चल पा रहा था कि उसने उन झीलों को ठीक से गिन लिया था या नहीं।

पर हॉ उसको तीस झीलें गिनने के बाद जब तीसवीं झील के किनारे एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी जो मुर्गे की टॉगों पर खड़ी थी तो उसको लगा कि उसने उन झीलों को ठीक ही गिना था।

जब वह उस झोंपड़ी के पास पहुॅचा तो उसने देखा कि वह झोंपड़ी तो घूमे जा रही है घूमे जा रही है। और वह तो बहुत तेज़ी से घूम रही है।

और वह केवल तेज़ी से घूम ही नहीं रही है बल्कि बहुत ज़ोर की चीं चीं की आवाज भी कर रही है। उस चीं चीं की आवाज से तो उसके कान ही फटे जा रहे थे।

उसके घूमने की आवाज और इस चीं चीं की आवाज दोनों ने मिल कर तो उसका सिर बहुत भारी सा कर दिया।

फिर पता नहीं कहॉ से उसके दिमाग में वे जादू के शब्द आ गये जिनको उसे उस झोंपड़ी में घुसने से पहले बोलना था और उसने उनको गाना शुरू कर दिया —

ओ छोटी झोंपड़ी ओ छोटी झोंपड़ी तुम अपना दरवाजा मेरी तरफ करो
और मुझे अन्दर आने दो

अचानक घूमती हुई झोंपड़ी रुक गयी। उसकी आवाज भी धीरे धीरे कम होती गयी और वह एक लम्बी सी चीं की आवाज कर के

रुक गयी। उसकी टॉगें इतनी नीचे को झुक गयीं कि वह झोंपड़ी जमीन से आ कर लग गयी।

अब उसका दरवाजा इवान के सामने था। अचानक एक लम्बी सी उसॉस के साथ उस झोंपड़ी का दरवाजा खुला। इवान सोचने लगा "यह मैंने कैसे किया?" पर फिर उस झोंपड़ी में घुस गया।

अन्दर पहुॅच कर उसने देखा कि बाबा यागा अपनी पुराने ढंग की ईंटों की अॅगीठी पर लेटी हुई है। वह खर्राटे मार रही थी।

उसकी लम्बी नाक छत को छू रही है। पर फिर एक पल में ही उसने अपनी लम्बी नाक इवान की तरफ की और बोली — "मुझे यहॉ किसी रूसी हड्डी की खुशबू आ रही है। तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

इवान ने डर से कॉपते हुए इधर उधर देखा कि वह यह किससे पूछ रही थी। फिर यह समझते हुए कि वह यह उसी से कह रही थी वह हकलाते हुए बोला — "लम्बे जादूगर ने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि मैं आपके गरुड़ पर सवार हो कर अपनी मॉ रूस की नम जमीन पर जा सकूॅ।"

बाबा यागा वहीं से चिल्लायी — "ओ रूसी हड्डी। बाहर बागीचे में जाओ और वहॉ जा कर उस स्त्री को ढूॅढो जो सात दरवाजों की चौकीदार है।

उससे चाभी लो और उन सातों दरवाजों को खोलो। जब तुम आखिरी दरवाजा खोलोगे तो वह गरुड़ अपने पंख फड़फड़ायेगा।

अगर तुम उससे डर नहीं गये तो तुम उसकी पीठ पर बैठ कर उड़ कर वहॉ जा सकते हो। और हॉ मेरे उस पालतू चिड़े के लिये काफी सारा मॉस ले जाना मत भूलना।"

इवान सोच रहा था "कौन सा बागीचा? यह किस बागीचे की बात कर रही है?" क्योंकि वह जानता था कि उसके घर के बाहर तो कोई बागीचा था ही नहीं वहॉ तो केवल जंगल था।

पर यही सोचते सोचते जब वह बाहर निकला तो यह देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि वहॉ से सारी झीलें गायब हो चुकी थीं और वहॉ अब एक बहुत सुन्दर बागीचा था और वह उसमें खड़ा था।

उस बागीचे के चारों तरफ एक बहुत पुरानी दीवार थी जिसमें सात ठोस ओक की लकड़ी के दरवाजे लगे थे। एक बहुत ही भयानक शक्ल वाली स्त्री उन सातों दरवाजों की चौकीदाारी कर रही थी।

हालॉकि उसका तो यह सब देख कर ही दिल डूबने लगा पर फिर उसने सोचा कि अगर मेंने बाबा यागा से बात कर ली और मुझे कुछ नहीं हुआ तो यह स्त्री उससे ज़्यादा बुरी तो नहीं हो सकती।

पर जब वह उसके कुछ फीट पास तक आ गया तो अचानक ही उसने एक बड़ी सी तलवार निकाल ली। उसकी ऑखों में वहशीपना छा गया। यह देख कर इवान का तो जैसे खून ही जम गया।

वह वहीं से चिल्लाया — "बाबा यागा ने मुझसे तुमसे चाभी लेने के लिये कहा है।"

यह सुन कर उस स्त्री ने अपने हाथ से तलवार छोड़ दी और उसका स्वागत किया। वह उसकी यात्रा के लिये कुछ खाना पीना और कुछ और सामान ले कर आयी।

इवान ने बाबा यागा का कहा माना सो वह निडर हो कर गरुड़ की पीठ पर बैठ गया और उससे जितना भी मॉस लिया जा सका उतना मॉस उसके लिये उसने ले लिया।

कुछ समय बाद इवान को भूख लगने लगी तो उसने सोचा कि "मैं उस मॉस में से थोड़ा सा मॉस खा लेता हूँ। हमारे पास तो हम दोनों के लिये जितना मॉस चाहिये उससे कहीं ज़्यादा मॉस है।"

सो उसने उसमें से थोड़ा सा मॉस खा लिया।

जब वे लोग कुछ देर तक उड़ चुके तो गरुड़ ने अपनी बटन जैसी पीली पीली ऑखें इवान की तरफ घुमायीं तो इवान ने उसको कॉपते हाथों से मॉस का एक टुकड़ा खिला दिया। गरुड़ ने भी उसे इवान के हाथों से छीन कर एक ही बार में खा लिया।

उस उड़ान के दौरान ऐसा कई बार हुआ कि जब भी गरुड़ ने उसकी तरफ देखा तभी उसने उसको मॉस खिलाया पर हर बार उसे लगा कि वह गरुड़ तो अपनी तेज़ चोंच से उसका हाथ ही काट लेगा परन्तु ऐसा हुआ नहीं।

जल्दी ही सारा मॉस खत्म हो गया पर रास्ता तो अभी बाकी था। गरुड़ ने फिर इवान की तरफ देखना शुरू किया।

अब इवान को तो मालूम था कि उसके पास जितना मॉस था वह सब खत्म हो गया था सो वह उस पर चिल्लाया — "घूम कर देखो अब सारा मॉस खत्म हो गया। तुम्हारे लिये अब मेरे पास कुछ भी नहीं बचा।"

इस पर गरुड़ ने उसको अपनी तेज़ निगाहों से घूरा। इवान ने भी उसको घूरा पर उसका तो एक एक जोड़ कॉप रहा था।

इवान को लगा कि यह गरुड़ तो पता नहीं कब तक उसको इस तरह से घूरता रहेगा पर उसने देखा कि जल्दी ही उसने अपना मुँह फिरा लिया और इवान ने शान्ति की सॉस ली।

अचानक एक चीं की आवाज के साथ जिससे इवान का खून तो बस जम सा ही गया गरुड़ ने एक बार फिर अपना सिर घुमा कर इवान की तरफ देखा और उसकी गर्दन से मॉस का एक टुकड़ा काट लिया।

इवान ने देखा कि वे उस समय एक खोखली नली में से ऊपर की तरफ उड़ रहे थे। इवान तो इस सबसे इतना डर गया और उसे इतना धक्का लगा कि उसे अपनी गर्दन में से मॉस निकाले जाने का ज़रा भी दर्द महसूस नहीं हुआ।

अब उसको यह लगने लगा कि यह गरुड़ तो उसको टुकड़े टुकड़े कर के खा जायेगा। सो उसने तय किया कि अबकी बार

अगर उसने उसकी तरफ देखा तो वह उसके ऊपर से कूद नीचे पड़ेगा।

उसको सपने में लगा कि वे उस खोखली नली में से दूर बहुत दूर किसी रोशनी की तरफ उड़े जा रहे हैं।

उसने देखा कि जब वे उस नली के आखिरी सिरे पर पहुँचे तो वह गरुड़ काले संगमरमर की चट्टान के पास उतर रहा था।

इवान तुरन्त ही उसकी पीठ से नीचे लुढ़क गया। वह नम घास पर लेट गया और सोचने लगा कि अब तो यह गरुड़ बस उसको खा ही जायेगा।

पर यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसको खाने की बजाय वह उसके गले के मॉस का टुकड़ा जो उसने खा लिया था वापस लाया और इवान से कहा कि वह उसको अपने घाव के ऊपर रख ले। इससे उसका घाव भर जायेगा। इसके बाद वह उसी खोखली नली से हो कर वहॉ से चला गया।

इवान ने ऐसा ही किया। उसका घाव कुछ पलों में ही भर गया।

सूरज की किरनों की गर्मी से इवान के शरीर में कुछ जान सी आयी और उसने अपने अन्दर ताकत महसूस की। जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो सूरज की एक किरन उसकी एक अँगूठी पर पड़ी तब उसे याद आया कि वह कहॉ था और अब कहॉ है।

उसने झुक कर मॉ रूस की नम जमीन को चूमा और देखा कि उसकी खाल और उसके कपड़े सब कुछ सामान्य रंग के हो गये हैं। भगवान की प्रार्थना कह कर वह अपने घर को वापस चल दिया।

घर आ कर उसने देखा कि तीनों ज़ारेवना उसके माता पिता के घर में उसका इन्तजार कर रही थीं। क्योंकि वह ऊपर की दुनियॉ में आ गयी थीं इसलिये उनके ऊपर पड़ा जादू भी टूट गया था।

इवान के माता पिता को बता दिया गया था कि उसके बड़े भाइयों ने उसके साथ क्या किया था। उन्होंने उनको घर से बाहर निकाल दिया।

इवान ने उनसे प्रार्थना की कि वे उसके भाइयों को माफ कर दें और उनको फिर से घर में बुला लें। उसके माता पिता ने उसकी प्रार्थना पर उनको घर वापस बुला लिया।

इवान ने सोने के राज्य वाली ज़ारेवना से शादी कर ली और फिर उनके कई बच्चे हुए। दूसरी ज़ारेवनाओं ने भी शादियॉ कर लीं पर इवान के भाइयों के साथ नहीं। फिर सब खुशी खुशी रहे।

11 ज़ार सुलतान की कहानी[78]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के एक प्रदेश में रात गये तीन बहिनें मोमबत्ती की रोशनी में चरखे पर बैठी बैठी सूत कात रही थीं।

उनमें से सबसे बड़ी बहिन ने अपनी शान बघारते हुए कहा — "अगर मैं ज़ार की पत्नी[79] होती तो मैं उसके लिये बहुत स्वादिष्ट खाना बेक करती। मैं उसके लिये कितना बढ़िया शाही स्वादिष्ट खाना बनाती।"

इस पर बीच वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर लेता तो मैं उसके लिये बहुत ही बढ़िया सोने के तार वाला कपड़ा बुनती।"

इस पर तीसरी सबसे छोटी वाली बहिन बोली — "अगर ज़ार मुझसे शादी कर ले तो मैं ज़ार को एक बहुत सुन्दर और बहादुर बेटा दूँगी।

जैसे ही वह यह कह कर चुकी कि घर का दरवाजा खुला और यह लो उन लड़कियों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ज़ार

[78] The Story of the Tzar Saltan – a folktale from Russia, Asia. By Alexander Pushkin. Taken from the Web Site : https://www.marxists.org/subject/art/literature/children/texts/pushkin/tsar.html

[79] Translated for the word "Tzaritsa" – means he wife of Tzar ot Tsar. Tzar is the title of the King of Russia till 1917.

तो खुद वहीं खड़ा था। उसने दरवाजे से ही उनकी सारी बातें सुन ली थीं।

उसको तो केवल उसकी किस्मत ही वहॉ ले गयी थी। और जो कुछ उसने आखीर में सुना उसको सुन कर तो उसके दिल की धड़कन ही बहुत तेज़ हो गयी।

अन्दर जा कर सुलतान ने उन लड़कियों को नमस्ते की और उन तीनों में से सबसे छोटी वाली बहिन को अपनी पत्नी के लिये चुन लिया कि वही उसकी पत्नी बनेगी और उसे अपने महल ले गया। उसने कहा कि अगले सितम्बर में वह उसको वैसा ही बेटा देगी जैसा कि उसने अभी कहा था।

और तुम दोनों सुन्दर लड़कियों तुम लोग भी अपना घर बिना किसी झिझक के मेरे और मेरी होने वाली पत्नी के साथ चलो। तुममें से एक मेरी शाही कपड़ा बुनने वाली बनेगी और दूसरी मेरा शाही खाना बनाने वाली।"

कह कर ज़ार अपनी होने वाली पत्नी को ले कर आगे आगे चल दिया और दोनों बड़ी बहिनें उनके पीछे पीछे चल दीं।

वहॉ जा कर ज़ार ने बिल्कुल भी समय बर्बाद नहीं किया और उसी शाम को ही उसने सबसे छोटी वाली बहिन से शादी कर ली।

ज़ार सुलतान और उसकी पत्नी मेज पर एक दूसरे के पास बैठे। फिर आये हुए मेहमान उनको बर्फ के समान सफेद हाथी दॉत के काउच तक ले कर उनको रात के लिये अकेला छोड़ गये।

यह सब देख कर कपड़ा बुनने वाली बहिन लम्बी लम्बी साँसें भरने लगी और खाना बनाने वाली बहिन रोने लगी। दोनों के दिल में अपनी छोटी बहिन की खुशकिस्मती के लिये जलन और नफरत भरी थी। वे उसकी खुशी को सहन नहीं कर पा रही थीं।

कुछ ही दिनों में छोटी बहिन को बच्चे की आशा हो गयी।

इन्हीं दिनों लड़ाई छिड़ गयी तो ज़ार सुलतान को लड़ाई के लिये जाना पड़ा। ज़ार सुलतान ने अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपने पीछे उसको अपना और राज्य के वारिस का ठीक से खयाल रखने के लिये कहा।

घर में दुश्मनों से लड़ते हुए छोटी बहिन ने राज्य के वारिस को जन्म दिया। बच्चा बड़ा, सुन्दर और प्यारा था। माँ ने गरुड़ की तरह से उसने उस बच्चे की बहुत सावधानी से देखभाल की और यह खुशी की खबर एक तेज़ घुड़सवार के हाथों ज़ार सुलतान को भेजी।

पर शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी माँ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने मिल कर उस छोटी बहिन को बर्बाद करने का सोचा।

सो उन्होंने उस घुड़सवार को रास्ते में ही पकड़ लिया और उसकी बजाय एक दूसरा घुड़सवार ज़ार सुलतान के पास भेज दिया। उन्होंने उस सन्देश को तो उससे चुरा लिया जो उसको रानी

ने लिख कर दिया था और एक दूसरा सन्देश उसकी जेब में लिख कर रख दिया।

उस दूसरे सन्देश में उन्होंने लिखा — "तुम्हारी पत्नी ने एक डरावने बच्चे को जन्म दिया है जो न तो लड़का ही है और न लड़की ही है। और न ही हमने ऐसा जीव पहले कभी कोई देखा है।"

यह सन्देश पढ़ कर तो ज़ार सुलतान गुस्से से भर गया। वह चिल्ला कर बोला — "इस घुड़सवार को फाँसी चढ़ा दो। किसी पास वाले पेड़ से टाँग कर इसको लटका दो।"

लेकिन फिर अनमनेपन से उसने उसको यह सोच कर वापस भेज दिया कि इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये। वह शहर में तब तक इन्तजार करे जब तक ज़ार सुलतान लड़ाई से वापस घर लौटता है।

जब शहर के दरवाजे तक आया तो शाही कपड़ा बुनने वाली, शाही खाना बनाने वाली और उनकी माँ जो बहुत चालाक और धोखा देने वाली थी तीनों ने उसको खूब शराब पिलायी।

और जब वह शराब पी कर खूब धुत हो गया तो उन्होंने उसका वह सन्देश चुरा लिया जो उन्होंने उसको लिख कर दिया था और वह सन्देश उसकी जेब में रख दिया जो ज़ार सुलतान की पत्नी ने उसको लिख कर दिया था।

वह घुड़सवार लॅगड़ाता लॅगड़ाता राजा के दरबार में इस हुक्म के साथ पहुॅचा "रानी और उसके बच्चे को सुबह होने से पहले पहले गुप्त रूप से डुबो दो।"

अपने राजा के वारिस के लिये और एक नौजवान मॉ और उसके बच्चे के लिये रोते हुए दुखी होते हुए ज़ार के नौकरों ने रानी को उसकी इस बदकिस्मती के बारे में बताया।

सो इस हुक्म का पालन किया गया। रानी और बच्चे को एक ताबूत में बन्द किया गया और उस ताबूत को कस कर बन्द कर के समुद्र में फेंक दिया गया। इस तरह ज़ार का हुक्म बजा लाया गया।

रात में तारे चमक रहे थे गहरे नीले रंग के बादल लम्बी लम्बी सॉसें भर रहे थे। ऊपर नीले आसमान में तूफान के बादल घिरते आ रहे थे। वह ताबूत हवा से समुद्र की लहरों पर ऊपर नीचे झूल रहा था।

रानी उस समय एक विधवा की तरह से दुखी थी जबकि बच्चा बड़ा हो रहा था। इस तरह से उनको घंटों बीत गये। सुबह हो गयी रानी इन्तजार करती रही।

पर उसके बेटे ने लहरों से कहा — "ओ नीली लहरों, तुम जब भी चाहो जहॉ भी चाहो कहीं भी आने जाने के लिये आजाद हो। तुम तो पत्थरों को भी बड़ी आसानी से अपने साथ ले जाती हो। तुम तो पहाड़ों पर भी बाढ़ ला देती हो। तुम तो जहाज़ों को भी आसमान तक उठा देती हो।

मेरी प्रार्थना सुनो ओ लहरों, हमें बचा लो। हमको सूखी जमीन पर ले चलो।"

और लहरों ने उस ताबूत को और उसमें बन्द दो कैदियों को सुरक्षित रूप से समुद्र के रेतीले किनारे पर उतार दिया। मॉ और बेटे ने यह महसूस किया कि अब उनको लहरों के थपेड़े नहीं लग रहे हैं और वे सख्त जमीन पर हैं पर इस ताबूत में से उन्हें निकालेगा कौन?

यकीनन भगवान ही उनकी सहायता करेगा। वह उनको इस तरह नहीं छोड़ेगा। वे बड़बड़ाये "अब हम अपनी इस जेल इस ताबूत को कैसे तोड़ें।"

बेटा अपने पंजों पर खड़ा हुआ और अपने आपको ऊपर तक खींचता हुआ बोला — "मुझे मिल गया।" और उसने अपना सिर उस ताबूत के ढक्कन में मारा तो वह ढक्कन खुल गया और वे दोनों उस ताबूत से बाहर निकल आये। अब मॉ और बेटा आजाद थे।

उन्होंने देखा कि वे लोग एक टापू पर खड़े थे। वहीं उनको एक छोटी सी पहाड़ी दिखायी दे गयी। उसकी चोटी पर एक ओक का पेड़[80] खड़ा था और उनके चारों तरफ समुद्र बह रहा था।

बेटा बोला — "शायद हमको यहॉ कुछ खाना पीना मिल जायेगा।"

[80] Oak Tree is a large shady kind of tree

सो उसने ओक के पेड़ की एक शाख तोड़ी और उसको मोड़ कर अपने गले में पड़ी रेशमी रस्सी की सहायता से उसकी एक कमान बना ली। फिर पास में लगे सरकंडे का एक तीर बनाया और उस टापू पर शिकार की खोज में निकल पड़ा।

चलते चलते वह जैसे ही समुद्र के किनारे आया कि उसने एक चीख की आवाज सुनी। उसको लगा कि कोई परेशान था। उसने चारों तरफ देखा तो उसको एक हंस परेशान सा दिखायी दिया। उसके ऊपर एक काइट चिड़िया अपने पंख फैलाये उड़ रही थी और उसकी चोंच में खून लगा हुआ था।

जबकि हंसिनी बेचारी वहीं पानी में अपने पंख फड़फड़ा रही थी। उसके पंखों की फड़फड़ाहट से पानी इधर उधर उछल रहा था। बेटे ने उस काइट चिड़िया पर अपना तीर चला दिया और वह तीर उसके गले में पूरा घुस गया।

उसके गले से खून बह निकला और वह चिड़िया इस तरह से चीखती हुई समुद्र में गिर गयी जैसे कोई आत्मा नरक में जाती हुई चीखती है।

बेटे ने अपनी कमान नीचे की और हंसिनी की चोंच और पंखों की तरफ देखा तो उसने देखा कि वह हंसिनी बेचारी भी अपने दुश्मन से लड़ते लड़ते बहुत थक चुकी थी।

वह जितनी सादा रूसी भाषा में बोल सकती थी उतनी सादा रूसी भाषा में बोली— "ओ ज़ारेविच[81], मुझको आजाद करने वाले निडर बहादुर, तुम इसलिये दुखी न हो कि मेरी वजह से तुम्हारा तीर समुद्र में चला गया है।

तुम्हारे लिये इसकी यह कम से कम सजा है कि तुमको तीन दिन तक उपवास रखना पड़ेगा। मैं तुम्हारे इस ऐहसान का बदला जरूर चुकाऊँगी। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

और हॉ, यह हंसिनी नहीं है जिसको तुमने आजाद किया है यह तो एक बहुत सुन्दर लड़की है।

और वह जिसे तुमने मारा है, ओ भले नाइट[82], वह काइट चिड़िया नहीं थी वह तो एक जादूगर[83] था। मैं तुम्हारा यह ऐहसान ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी और तुम्हारी मुसीबत के समय हमेशा तुम्हारी सहायता करूँगी। जाओ अब तुम आराम करो सब कुछ अच्छा ही होगा।"

इतना कह कर वह हंसिनी आसमान में उड़ गयी।

उसके जाते ही उन किस्मत के मारे मॉ और बेटा दोनों की ऑखों में नींद आने लगी जैसे कोई उनको जबरदस्ती सुला रहा हो

[81] Tzarevich means "the child of Tzar"

[82] Knight – a knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[83] Translated for the word "Wizard"

और वे दोनों भगवान से अपनी ज़िन्दगी के लिये प्रार्थना करते हुए तुरन्त ही सो गये।

सुबह जब सूरज निकला तो ज़ारेविच को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहॉ उस टापू पर तो शहर फैला पड़ा था। उस शहर के चारों तरफ बर्फ जैसी सफेद एक ऊॅची और चौड़ी मजबूत दीवार खिंची हुई थी। उस शहर में सुनहरे गुम्बद वाले चर्च खड़े हुए थे और बड़े बड़े घर बने हुए थे।

उन सबको देख कर वह ज़ोर से बोला — "मॉ देखो तो।"

बेटे की आवाज सुन कर मॉ भी उठी और उसने भी जब वह शहर देखा तो उसके मुॅह से भी निकला "ओह। यह सब क्या है।"

बेटा बोला — "मॉ अभी तो चीज़ें शुरू हुई हैं। मेरी सफेद हंसिनी ने अभी तो अपना तमाशा दिखाना शुरू किया है।"

यह सब देख कर वे दोनों शहर की तरफ चले। शहर के दरवाजे में घुसे। उसी समय चर्च के घंटे भी इतने ज़ोर से बजे जैसे कोई बिजली कड़कती है कि उनसे कोई मुर्दा भी जाग जाये। फिर वहॉ चर्च के गवैयों ने लौर्ड[84] के गीत गाना शुरू किया।

कुलीन लोग[85] सोने के काम की गयी गाड़ियों में आ रहे थे। सारे लोग उन मॉ बेटा को देख कर बहुत खुश हुए। अपनी मॉ का आशीर्वाद ले कर वह उनकी तरफ शान से बढ़ा और उसी दिन से

[84] Lord word is used here for Jesus Christ

[85] Translated for the word "Noble"

उसने अपने नये राज्य में राज करना शुरू कर दिया। वह शाही सिंहासन पर बैठा और राजकुमार गिडौन[86] के नाम से राज करने लगा।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर अब रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमारे पास ओ राजकुमार बहुत कीमती कीमती फ़र हैं बेचने के लिये। हमारे पास सफेद लोमड़े ओर सैबिल[87] के फ़र हैं। पर अब हमको

[86] Prince Guidon

[87] The sable is a small carnivorous mammal that inhabits forest environments, primarily in Russia from the Ural Mountains.

बहुत देर हो गयी है हमें जाना है। हमारा रास्ता पूर्व की तरफ बूयान टापू[88] से हो कर पूर्व में ज़ार सुलतान के राज्य तक है।"

यह सुन कर राजकुमार गिडौन बोला — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे झुक कर सलाम कहियेगा।"

यहाँ सौदागरों ने राजकुमार को नीचे झुक कर सलाम किया और अपने रास्ते चल दिये और उधर राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे आँखों से ओझल नहीं हो गये।

उसी समय अचानक वह बर्फ जैसी सफेद हंसिनी राजकुमार के सामने प्रगट हुई और बोली — "राजकुमार, तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की।"

हंसिनी बोली — "क्या तुम उड़ना चाहोगे? वह जो समुद्र में जहाज़ जा रहा है उसके भी उस पार। तो एक मच्छर बन जाओ।"

---

[88] Buyan Island – in Slavic mythology, Buyan Island is described as a mysterious island in the ocean with the ability to appear and disappear using tides. Three brothers – Northern, Western, and Eastern Winds live there. It figures prominently in many famous myths. Koshchei or Koshchev the Deathless keeps his soul hidden there, secreted inside a needle placed inside an egg in the mystical oak-tree.

राजकुमार इसके लिये इससे पहले हॉ या ना कहता कि यह कह कर हंसिनी ने अपने दोनों पंख समुद्र के नीले पानी में फड़फड़ाये जिससे राजकुमार सिर से ले कर पैर तक पानी में भीग गया।

पानी में भीग कर तुरन्त ही वह एक मच्छर बन गया और उसने ज़ ज़ करते हुए तेज़ी से इधर उधर उड़ना शुरू कर दिया। वह उस जहाज़ पर जा कर सबकी नजर बचा कर एक छेद में छिप कर बैठ गया।

हवा समुद्र के ऊपर से उड़ती हुई गाती हुई बह रही थी। वे बूयान टापू को पार करते हुए ज़ार के राज्य की तरफ चले जा रहे थे। वह जिस जमीन की इच्छा कर रहा था और जो उसको इतनी प्रिय थी वह उसको दूर और साफ दिखायी दे रही थी।

कुछ देर में वह जमीन भी आ गयी। नाविकों ने वहा जा कर अपने जहाज़ का लंगर डाला। वहॉ के लोगों ने मेहमानों का स्वागत किया और उनको महल की तरफ ले गये।

वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से राजगद्दी पर बैठा था। उसके सिर पर जवाहरातों से जड़ा ताज रखा था। शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज मॉ उसके दॉये बॉये बैठी थीं।

ज़ार ने उनकी तरफ शाही शान से देखते हुए सब सौदागरों को उनकी जगहों पर बिठाया।

फिर उसने उनसे कहा — "ओ सौदागरों तुम लोग बहुत जगहों से घूम कर आ रहे हो। जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

समुद्र में एक टापू था। उसके किनारे बहुत ढालू थे। कभी वह बहुत ही उदास, बिना लोगों का और बिना पेड़ों का हुआ करता था। वहॉ बस केवल एक ओक का पेड़ हुआ करता था।

पर अबकी बार जब हमने उसको देखा तो वहॉ तो एक बहुत बड़ा और आलीशान शहर बस गया। वहॉ तो बहुत बड़े बड़े शाही घर बन गये, सुनहरी गुम्बदों वाले चर्च बन गये, सुन्दर बागीचे बन गये। यह सब तो वहॉ बहुत ही सुन्दर और आश्चर्यजनक हो गया।

वहॉ राजकुमार गिडौन राज करते हैं और उन्होंने आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

ज़ार भी आश्चर्य से बोला — "अगर भगवान ने मेरी ज़िन्दगी थोड़ी सी और बढ़ायी तो मैं उस टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और कुछ समय के लिये इस गिडौन का मेहमान बन कर रहूॅगा।"

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक और धोखेबाज मॉ यह नहीं चाहती थीं कि ज़ार इतनी दूर वहॉ जा कर उस टापू को देखे।

सो खाना बनाने वाली दूसरों की तरफ ऑख मारती हुई बोली — "वाह क्या ही आश्चर्य की बात है कि समुद्र के किनारे एक शहर है। क्या तुमने ऐसा कहीं सुना है? पर यहॉ एक ऐसा आश्चर्य है जिसको किसी को बताया जा सकता है कि एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। यकीनन यह एक आश्चर्य है।"

ज़ार सुलतान को यह वाकई आश्चर्यजनक लगा पर हमारे मच्छर को यह सुन कर गुस्सा आ गया।

उसने अपनी मच्छर वाली ताकत से अपनी आंटी की दॉयी ऑख पर काट लिया। दर्द से वह पीली पड़ गयी और चीख पड़ी। पर वह उस ऑख से फिर कभी देख नहीं सकी।

उसकी बहिन ने, नौकरानियों ने और मॉ ने खुद ने एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते उस मच्छर को भगाने की कोशिश की — "ठहर जा ओ नीच मच्छर।" पर वह वहॉ से बहुत तेज़ी से भाग कर अपने घर चला गया।

दुखी हो कर गिडौन ने एक बार फिर समुद्र के किनारे से समुद्र की तरफ देखा तो अचानक वही बर्फ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हो गयी।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूॅ कि एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। और यह आश्चर्य किसी को बताने के लायक भी है।

कि कहीं एक गिलहरी एक फ़र के पेड़ में रहती है। वह सारा दिन गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है।

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है। पर क्या यह बात मैं यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि ऐसा है?"

हंसिनी बोली — "तुम ठीक कहते हो राजकुमार। यह अफवाह झूठी नहीं है। हालॉकि यह तुम्हारे लिये एक आश्चर्य हो सकता है पर मेरे लिये यह कोई नयी चीज़ नहीं है। तुम दुखी मत हो राजकुमार। मैं तुम्हारा यह छोटा सा काम जरूर करूॅगी।"

यह सुन कर राजकुमार खुशी खुशी घर दौड़ गया। उसने जा कर देखा कि उसके महल का ऑगन तो बहुत बड़ा हो गया है।

उसमें एक फ़र का पेड़ लगा है। उस फ़र के पेड़ पर एक गिलहरी बैठी बैठी गिरियॉ तोड़ रही है और गाती जा रही है।

उसकी हर गिरी का छिलका असली सोने का है और उसकी हर गिरी पन्ने की है जो उसके तोड़ने के बाद इधर उधर गिर रही है। वह आश्चर्यजनक गिलहरी गा रही थी — "वह अपने पैरों की सुन्दर उँगलियों को बड़ी आसानी से हिलाती हुई बागीचे में से हो कर जा रही है।"

वह गिलहरी अपनी पूँछ से सीपी और छोटे छोटे पत्थरों के ढेरों को बिखराती जा रही थी और राजकुमार उसका गाना सुन रहा था। आश्चर्यचकित सा राजकुमार गिडौन बहुत धीरे से फुसफुसाया — "तुमको बहुत बहुत धन्यवाद ओ सुन्दर हंसिनी। भगवान तुमको भी इतना ही आराम और सुख दे जितना तुमने मुझे दिया है।"

उसने उस गिलहरी के लिये क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक घर बनवाया। उसके लिये एक चौकीदार रखा और एक लिखने वाला रखा जो उसकी तोड़ी हुई गिरी के हर छिलके का हिसाब रखता था।

इस तरह राजकुमार का खजाना बढ़ने लगा और साथ में गिलहरी की शान भी।

समुद्र पर हवा चलती रहती। पाल वाली नावें तेज़ी से चलती रहतीं। वे उस टापू से भी आगे निकल जातीं जिस पर यह सुन्दर

शहर बसा हुआ था। उस टापू पर लगी तोपें अपनी आवाजों से उन नावों को किनारे बुलाती रहतीं।

जब वे जमीन पर आ गयीं तो राजकुमार उनमें जाने वाले सौदागरों का मॉस और शराब से मेहमानदारी की और उनसे पूछा — "तुम लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? तुम लोग कहॉ जा रहे हो और कहॉ से आ रहे हो?"

उन्होंने कहा — "हम लोग डौन के स्टैपैस[89] के घोड़े बेचते हुए सात समुद्र की यात्रा कर के आ रहे हैं ओ राजकुमार गिडौन। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम करियेगा।"

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है

[89] Steppes of Don – means the grassland of Don

अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

हंसिनी ने उसको अबकी बार मक्खी बना दिया और वह समुद्र के पार उड़ता चला गया। वह फिर से एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल पड़े। वहॉ सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपन जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक ओर धोखेबाज मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं और उसको मेंढक की निगाहों की तरह से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हो। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ और क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

बहुत दूर एक टापू पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ के सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक है और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों की गिनती लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन

गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा कर के ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको अपना सलाम भेजा है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

X X X X X X X

पर वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली ओर उनकी चालाक धोखेबाज मॉ ज़ार को वह टापू नहीं देखने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो शाही कपड़ा बुनने वाली बोली — "ऐसा झूठ कहॉ है ज़रा बताओ तो। हमने तो ऐसा सुना है कि ऐसी बहुत सारी गिलहरियॉ हैं जो सारा दिन गिरियॉ तोड़ती रहती हैं और पन्नों के ढेर लगाती ही रहती हैं और सोने को इधर उधर फेंकती रहती हैं। मुझे तो इसमें ऐसा कोई आश्चर्य नहीं लगता।

और फिर यह सच है तो भी, और झूठ है तो भी, मुझे इससे अच्छा एक और आश्चर्य मालूम है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहाँ तैंतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर[90] उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं। तुम्हारे लिये यह एक आश्चर्य है पर यह सच है।"

मेहमान सब अक्लमन्द थे सो यह सुन कर वे सब चुप से रह गये। वे उससे कोई बहस नहीं कर सके पर ज़ार इसको देखने के लिये बहुत उत्सुक हो उठा और गिडौन बहुत गुस्सा।

वह तुरन्त ही उठा और अपनी आंटी की बॉयी ऑख पर जा कर वहाँ उसको काट लिया। वह तो पीली पड़ गयी और दर्द के मारे चीख पड़ी। अब तो उसकी उस ऑख से उसको दिखायी भी नहीं पड़ रहा था।

वह गुस्से से चीख पड़ी — "पकड़ लो इस कीड़े को और मार दो इसको।"

[90] Chernomor – the leader of the troops. He is a sorcerer. He is mentioned in the folktale entitled "Ruslan and Ludmilla".

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता देखता चला जा रहा था कि एक बार फिर वह बर्फ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मैं मानता हूँ कि यह एक ऐसा आश्चर्य है जिसको मेरे पास होना चाहिये। तुम मुझे यह बताओ कि यह आश्चर्य क्या है।

समुद्र बिजली से ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ तैंतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे पीछे चल रहे हैं।"

इसके जवाब में हंसिनी बड़बड़ायी — "क्या गिडौन बस यही सब तुमको परेशान कर रहा है? तुम आश्चर्य मत करो। यह तुम्हारे लिये आश्चर्य हो सकता है पर मेरे लिये नहीं।

क्योंकि समुद्र के ये नाइट्स और कोई नहीं मेरे भाई हैं। तुम दुखी मत हो आराम से घर जाओ और इन्तजार करो। तुमको अपने महल के दरवाजे पर मेरे भाई मिल जायेंगे।"

राजकुमार खुशी खुशी अपने घर वापस लौट गया। वह अपनी मीनार पर चढ़ा और समुद्र की तरफ देखने लगा।

लो समुद्र का पानी तो किनारे पर आ गया और उसके बंजर किनारे पर बिखर गया। वहॉ वह एक आश्चर्यजनक दृश्य छोड़ गया।

वहॉ तैंतीस सुन्दर नौजवान बहादुर नाइट्स थे जो चमकीले कपड़े पहने थे और दो दो की लाइन में बड़ी शान से मार्च कर रहे थे। हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर था लम्बा था सुन्दर था और नौजवान था। वे सब इतने एक से थे कि विश्वास नहीं होता था।

चरनोमोर उनका नेता था और वे सब उसके पीछे चल रहे थे। उनका नेता उनको ले कर सबसे पहले शहर के दरवाजे तक गया।

राजकुमार गिडौन भागता हुआ अपने मेहमानों का स्वागत करने गया। लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कौन थे और कहॉ से आये थे सो वे सब उन सबके चारों ओर इकट्ठा हो गये।

नाइट्स का नेता बोला — "राजकुमार, हंसिनी की प्रार्थना पर हम तुम्हारे सुन्दर शहर की रक्षा करने के लिये समुद्र से बाहर आये

हैं। इसको बाद हम हमेशा ही तुम्हारे शहर की रक्षा करने के लिये नीले समुद्र से बाहर आते रहेंगे।

हम तुम्हारे शहर की चहारदीवारी की हमेशा ही चौकीदारी करते रहेंगे। अब हमें जाने दो क्योंकि हमको जमीन पर रहने की आदत नहीं है। पर हम वायदा करते हैं कि हम वापस आयेंगे।"

और वे सब वहॉ से गायब हो गये।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर घूमने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार डैमैस्क[91] के लोहे की तलवारें बेची हैं। चॉदी ओर सोना

[91] Damask

भी बेचा है। हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है अब हमको चलना चाहिये। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व में बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

राजकुमार ने फिर कहा — "ओ भले लोगों, अच्छी हवाऐं आप लोगों को आपके घर जल्दी पहुँचाऐं। जब आप ज़ार सुलतान से मिलें तो उनको मेरी तरफ से बहुत नीचे तक झुक कर सलाम कर दीजियेगा।"

सौदागरों ने राजकुमार को नीचे तक झुक कर सलाम किया और अपनी आगे की यात्रा पर चले गये। राजकुमार दुखी मन से उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

उनके जाने के बाद वह फिर दौड़ा दौड़ा समुद्र के किनारे गया जहॉ उसको वह हंसिनी फिर मिल गयी। उसने उससे कहा — "मेरा दिल दुखी और उदास है। मेरी बस एक ही इच्छा है और वह है अपने पिता से मिलने की। मेरा दिल अपने पिता के लिये बहुत रोता है।"

एक बार हंसिनी ने फिर राजकुमार को ऊपर से नीचे तक भिगो दिया और अबकी बार वह एक भौंरा बन गया। भौंरा बन कर वह समुद्र के पार उड़ता चला गया और वह फिर से उस जहाज़ के एक छोटे से छेद में छिप कर चुपचाप बैठ गया।

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ चला जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार के राज्य की

तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

जहाज़ ने वहॉ जा कर लंगर डाल दिया और नाविक और मेहमान सब महल की तरफ चल दिये। वहॉ ज़ार सुलतान अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनको केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हैं। । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। वहॉ हर सुबह एक नया ही आश्चर्य होता है।

समुद्र बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और बहुत ज़ोर से गरजता है और उसका पानी उसके एक बंजर किनारे पर

बिखर जाता है और वहॉ तेंतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने हैं और बड़ी शान से मार्च कर रहे हैं।

हर एक एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो कर के गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। आपको उनको देख कर ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हैं। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।"

ज़ार सुलतान बोला — "अगर भगवान ने मुझे कुछ उम्र और दी तो मैं इस आश्चर्यजनक टापू को देखने जरूर जाऊॅगा और थोड़े दिन गिडौन का मेहमान बन कर उनके पास रह कर आऊॅगा।"

इस बार वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली लड़कियॉ तो चुप थीं पर उनकी चालाक मॉ चालाकी भरी हॅसी हॅसते हुए बोली — "आप लोग इसे आश्चर्य समझते होंगे पर हम नहीं। बहुत सारे मत्स्य पुरुष[92] सन्तरी की तरह किनारों पर घूमते हैं। इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात है।

[92] Translated for the word "Mermen". It is masculine form of mermaid.

यह सच है या झूठ पर मैं इसमें कोई अजीब बात नहीं देखती। इससे भी ज़्यादा बड़े बड़े आश्चर्य दुनियॉ में मौजूद हैं। और यह बात बिल्कुल सच है।

कहते हैं कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है।

उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है। वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। यह आश्चर्य है पर सच है।"

वहॉ बैठे लोगों को इसी में अपनी अक्लमन्दी लगी कि वे उससे बहस न करें पर ज़ार सुलतान यह सुन कर बहुत ही उत्सुक हो गया और हमारा ज़ारेविच तो बहुत ही गुस्सा हो गया।

उसने सोच लिया था कि वह नानी की ऑख को उसकी उम्र की वजह से नहीं छुएगा सो उसने एक भौंरे की तरह से उसका चक्कर काटा और उसकी नाक पर बहुत ज़ोर से काट लिया। इससे उसकी नाक पर लाल और सफेद निशान पड़ गये।

वह चिल्लायी — "अरे इस खूनी को पकड़ो। इसको जाने मत देना। पकड़ लो इसको। मार दो इसको।"

पर गिडौन तो जल्दी से और शान्ति से वहॉ से अपने घर उड़ गया। वह नीले समुद्र के किनारे किनारे देखता देखता चला जा रहा

था कि एक बार फिर वह बर्फ से सफेद पंखों वाली हंसिनी वहॉ प्रगट हुई।

"नमस्ते मेरे सुन्दर राजकुमार। तुम इतने दुखी क्यों होते हो। मुझे बताओ तो। तुम इतने उदास क्यों हो जैसे कि बादलों वाला दिन उदास होता है।"

दुखी होते हुए राजकुमार बोला — "सब नौजवानों की एक दुलहिन होती है। केवल मैं ही बिना दुलहिन का हूॅ।"

"बताओ तुम किससे शादी करना चाहते हो? मुझे बताओ शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूॅ।"

राजकुमार गिडौन बोला — "उनका कहना है कि एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है। वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है। उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है।

वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो। क्या यह सच है या झूठ?"

गिडौन बड़ी बेचैनी से उसके जवाब का इन्तजार करता रहा। कुछ देर तक तो वह बर्फ जैसे सफेद पंखों वाली हंसिनी चुपचाप कुछ सोचती रही।

फिर बोली — "गिडौन मैं ऐसी एक लड़की तुम्हारे लिये ढूँढ सकती हूँ। पर ध्यान रहे पत्नी कोई दस्ताना नहीं है कि वह तुम्हारे लिली जैसे कोमल हाथों से बन जाये। अब तुम मेरी सलाह सुनो।

तुम इस मामले पर दोबारा विचार करो ताकि कल जब तुम उससे शादी कर लो तो तुम्हें उससे शादी कर के पछताना न पड़े।

गिडौन ने कहा — "मैंने सोच लिया है। मैंने बहुत दिनों तक इन्तजार किया पर अब मैं शादी कर के ही रहूँगा। इतनी सुन्दर राजकुमारी के लिये तो मैं कोई भी खतरा मोल लेने के लिये तैयार हूँ। मैं उसके लिये मर भी सकता हूँ। मैं उसके लिये नंगे पैर उत्तरी ध्रुव तक भी जा सकता हूँ।"

उसकी यह लगन देख कर वह हंसिनी कुछ सोचने के लिये रुकी फिर बोली — "राजकुमार, इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है। तुम्हारी होने वाली पत्नी यहाँ है। प्रिय, मैं ही वह राजकुमारी हूँ।"

कह कर उसने अपने पंख फैलाये और समुद्र के ऊपर से उड़ कर किनारे पर आ गयी। पेड़ों के बीच जा कर उसने अपने पंखों को मोड़ लिया और फिर एक झटका दे कर वह एक सुन्दर राजकुमारी बन गयी।

उसके बालों में दोयज का चाँद लगा हुआ था। उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा लगा हुआ था। वह बहुत सुन्दर थी और शानदार थी। जब वह बोलती थी तो ऐसा लगता था जैसे संगीत एक नदी के पानी तरह से बह रहा हो।

गिडौन ने उसको तुरन्त ही अपने गले से लगा लिया और उसका हाथ पकड़ कर उसको अपनी मॉ के पास ले गया। उसके पैरों पर झुक कर वह बोला — "मॉ अगर तुम खुश हो तो देखो मैंने अपनी पत्नी चुन ली है। तुम इसको प्यार भी करोगी और इस पर गर्व भी करोगी।

शादी करने के लिये हमें बस अब तुम्हारी इजाज़त की और आशीर्वाद की जरूरत है। हमारी शादी को आशीर्वाद दो ताकि हम कल को प्यार से एक साथ रह सकें।"

यह देख कर मॉ की ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये। उसने मुस्कुराते हुए उन दोनों झुके हुए बच्चों को आशीर्वाद दिया — "भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

राजकुमार गिडौन ने फिर बिल्कुल भी देर नहीं की और उसने राजकुमारी से उसी दिन शादी कर ली। अब बस एक वारिस का इन्तजार था।

समुद्र पर हवाऐं चलने लगीं तो उनसे उसके ऊपर पाल वाली नावें चलने लगी। नाविक और सौदागर नावों के डैक पर इधर उधर मॅडराने लगे। सुन्दर सारस अपनी अपनी गर्दनें उठा कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे। सो उस टापू पर रौनक रहने लगी।

उस नये बने शानदार सुनहरे शहर में एक किला था जिसमें बहुत सारी तोपें लगी हुई थीं जो आवाज करती हुई सौदागरों से यह कह रही थीं कि तुम लोग अपनी अपनी नावें यहॉ किनारे पर ले

आओ। जब उन सौदागरों ने अपनी अपनी नावें किनारे पर लगा लीं तो राजकुमार गिडौन ने उनकी मेहमानदारी की।

उसने पहले तो उनको खूब अच्छी तरह से खिलाया पिलाया फिर उनसे पूछा — "आप लोगों के पास बेचने के लिये क्या क्या है? आप लोग कब चले थे और अब किधर जा रहे हैं?"

सौदागर बोले — "हमने सात समुद्रों की यात्रा की है। हमने ओ राजकुमार इस बार वे चीज़ें बेची हैं जो हमें नहीं ले जानी चाहिये थीं।[93] उनसे हमें फायदा भी बहुत हुआ है।

हम लोगों को पहले ही बहुत देर हो गयी है। हमें बहुत दूर जाना है पूर्व की तरफ। हमारा रास्ता तय है। बूयान टापू के भी उस पार ज़ार सुलतान के पास।"

गिडौन बोला — "जब तुम लोग ज़ार सुलतान के पास पहुँच जाओ तो उनको मेरी याद दिलाना और उनसे कहना कि "उन्होंने एक दिन मेरे राज्य में आने का वायदा किया था। हमको उनकी इस आने की देरी का अफसोस है पर हम अभी भी उनका इन्तजार कर रहे हैं। और उनको मेरा सलाम कहना।"

यह सुन कर वे सौदागर वहाँ से चले गये। इस बार गिडौन अपनी प्रिय पत्नी के साथ ही रहा। उसने उसका साथ कभी नहीं छोड़ा।

[93] Translated for the word "Contraband" items

हवा गाती हुई बह रही थी। समुद्र पर जहाज़ हिलता हुआ जा रहा था बूयान टापू को पीछे छोड़ता हुआ ज़ार सुलतान के राज्य की तरफ। जिस जमीन को वह इतना प्यार करता था वह जमीन दूर बड़ी साफ दिखायी दे रही थी।

इस बार उस नाव का हर सौदागर ज़ार का मेहमान था। ज़ार सुलतान वहॉ अपने शाही कपड़े पहने शाही तरीके से अपना जवाहरात जड़ा ताज पहने बैठा था।

जबकि शाही एक ऑख वाली खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार के आस पास बैठी थीं। हालॉकि वे तीन थी फिर भी उनके केवल चार ही ऑखें थीं। और उसको एक लालची की नजरों से देख रही थीं।

ज़ार सुलतान ने सौदागरों को उनकी जगह पर बिठाया और कहा — "तुम लोग बहुत दूर दूर तक यात्रा कर के आ रहे हो । जहॉ जहॉ से तुम लोग आ रहे हो वहॉ सब ठीक तो है न? तुम लोगों ने वहॉ क्या क्या नयी चीज़ें देखीं?"

सौदागर बोले — "हमने सातों समुद्रों की यात्रा की। दुनियॉ में सब जगह शान्ति है। पर हमने वहॉ एक बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य देखा।

यहॉ से बहुत दूर एक टापू है जिस पर एक बहुत ही शानदार शहर बसा हुआ है। उसके सुनहरे गुम्बद वाले चर्च बहुत ऊॅचे हैं। वहॉ हरे हरे बागीचे हैं और वहॉ के घर भी बहुत शाही हैं।

उसके महल के पास ही एक फ़र का पेड़ है जिसकी छाया में क्रिस्टल शीशे और चॉदी का एक पिंजरा रखा है। उस पिंजरे में एक गिलहरी है जो बहुत ही आश्चर्यजनक और बहुत कम पायी जाने वाली है।

सारे दिन वह बड़े उत्साह के साथ गिरी तोड़ती रहती है और गाती रहती है। वे गिरियॉ जो वह तोड़ती है वे भी बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका सोने का है और उसकी हर गिरी असली पन्ने की है।

सन्तरी दिन रात उसका पहरा देते हैं। जैसे किसी लौर्ड के दास होते हैं ऐसे ही उस गिलहरी के भी हैं। उसके पास एक लिखने वाला भी है जो उसके तोड़ी हुई गिरियों को लिखता रहता है।

उसके आस पास से जो सिपाही निकलते हैं वे उसको अपने ढोल और बाजे से उसको सैल्यूट मारते चलते हैं। जो रत्न वह गिलहरी उन गिरियों को तोड़ कर निकालती है लड़कियॉ उन रत्नों को इकट्ठा कर के ताले में रखती रहती हैं।

गिरी के हर छिलके से सिक्के बनाये जाते हैं और वे सिक्के फिर बाजार में खरीदने बेचने के काम आते हैं। वहॉ के लोग बहुत अमीर हैं। वे झोंपड़ियों में नहीं बल्कि बड़े बड़े मकानों में रहते हैं। राजा गिडौन वहॉ के राजा हैं और उन्होंने आपको नमस्ते भेजी है।

वहीं हमने एक दूसरा आश्चर्य भी देखा कि हर सुबह समुद्र का पानी बिजली की कड़क के साथ ऊपर उठता है और उसके बंजर किनारों पर बिखर जाता है।

और बहुत ज़ोर की गरज के साथ उसके बंजर किनारे पर बिखर जाता है और वहॉ तैंतीस आश्चर्यजनक नाइट्स छोड़ जाता है। वे सब चमकदार कपड़े पहने होते हैं और बड़ी शान से मार्च करते हैं।

हर एक नाइट एक दूसरे से ज़्यादा बहादुर है लम्बा है सुन्दर है और नौजवान है। वे सब इतने एक से हैं कि विश्वास नहीं होता। चरनोमोर उनका नेता है और वे सब उसके पीछे चल रहे हैं।

वह उनको दो दो कर के गिनता है और वे उस सुन्दर टापू की दिन रात चौकीदारी करते हैं। उनको देख कर आपको ऐसा भी नहीं लगता है कि वे नाइट्स असली हों। पर फिर भी वे सब सावधान हैं और निडर हैं। राजकुमार गिडौन वहॉ राज करते हैं। उनकी सब तारीफ करते हैं और उनका गुणगान करते हैं।

उनकी एक पत्नी है जिसकी तरफ देखते देखते आप थकते नहीं। वह एक नौजवान राजकुमारी है जो सबका दिल चुरा लेती है।

वह दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा चमकदार है। वह आधी रात के चॉद से भी ज़्यादा चमकीली है। उसकी चोटी में दोयज का चॉद लगा हुआ है। उसकी भौंह पर एक सितारा जड़ा है।

वह खुद भी बहुत सुन्दर है। वह बहुत शानदार है। जब वह बोलती है तो ऐसा लगता है जैसे संगीत की नदी बह रही हो।

राजकुमार गिडौन ने आपको अपना सलाम भेजा है और हमसे आपसे यह कहने के लिये कहा है कि वह आपका अभी भी इन्तजार कर रहे हैं कि आप एक दिन उनके शहर आयेंगे। उनको आपके इतने दिन तक न आने का बहुत अफसोस है।

अबकी बार ज़ार का धीरज छूट गया। उसने अपने जहाज़ी बेड़े को उस टापू पर चलने का हुक्म दिया।

पर इस बार भी पर वे शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक मॉ ज़ार को उस टापू पर नहीं जाने देना चाहती थीं जो इतनी दूर था।

सो उन्होंने बहुत कोशिश की कि वह ज़ार को उस टापू से दूर रख सकें पर इस बार उसने उनकी एक न सुनी।

ज़ार ने अपना पैर जमीन पर पटका, दरवाजा ज़ोर से बन्द किया और उनसे ज़ोर से कहा — "मैं यहॉ का ज़ार हूँ कोई बच्चा नहीं। हम आज ही जायेंगे। बस अब आगे और कुछ नहीं।"

X X X X X X X

राजकुमार गिडौन अपने घर से समुद्र की तरफ देख रहा था। समुद्र बिल्कुल शान्त पड़ा था। वहॉ एक भी लहर नहीं थी जैसे नींद में शान्ति से कोई लम्बी लम्बी सॉसें ले रहा हो।

तभी उसको समुद्र के नीले क्षितिज पर एक के बाद एक जहाज़ ऊपर आते हुए दिखायी दिये। आखिर ज़ार सुलतान का जहाज़ी बेड़ा समुद्र पर खेता हुआ चला आ ही गया।

यह देख कर गिडौन ज़ोर से चिल्लाता हुआ तुरन्त ही भागा भागा बाहर गया — "मॉ यहॉ बाहर आओ और राजकुमारी तुम भी बाहर आओ। देखो मुझे लगता है कि मेरे पिता जी आ रहे हैं।"

उसने अपनी दूरबीन से देखा कि वह तो वाकई शाही जहाज़ी बेड़ा ही था। उसके एक जहाज़ के डैक पर उसका पिता खड़ा था।

उसके साथ वह शाही खाना बनाने वाली और शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ भी थीं। वे सब आश्चर्य से इधर उधर देख रही थीं।

उनके स्वागत में तोपें छोड़ी गयीं। चर्च के घंटे बजाये गये। ज़ार सुलतान का स्वागत करने के लिये गिडौन किनारे की तरफ भागा गया।

वहॉ से वह उन शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली, उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ और अपने पिता को वह अपने शहर तक बिना एक शब्द बोले ले कर आया।

वहॉ अब उनको महल दिखायी देने लगा था। उस महल के चारों तरफ बहुत सारे सन्तरी चमकीले जिरहबख्तर[94] पहने खड़े थे।

[94] Translated for the word "Armor".

ज़ार सुलतान ने देखा कि वहॉ तेंतीस नाइट्स भी थे जो बहादुरी में बेजोड़ थे लम्बे थे सुन्दर थे और नौजवान थे। उसको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि वे सब कितने एक से थे। चरनोमोर उनका नेता था।

वे आगे बढ़े तो महल के ऑगन में आ पहुँचे। ज़ार ने देखा कि वह ऑगन बहुत बड़ा है। उस ऑगन में एक बहुत ही बड़ा फ़र का पेड़ खड़ा है और उसके साये में एक गिलहरी बराबर गिरियॉ तोड़े जा रही है और गाती जा रही है।

उसकी वे गिरियॉ बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। हर गिरी का छिलका असली सोने का है और हर गिरी पन्ने की है। उसकी गिरियों के वे सोने के छिलके और पन्ने की गिरियॉ उस बड़े से ऑगन के फर्श पर सब इधर उधर पड़े हैं।"

और आगे जाने पर सब मेहमानों को राजकुमारी दिखायी दी। उसके बालों में दोयज का चॉद लगा है और उसकी भौंह पर एक चमकीला सितारा जड़ा है। वह बहुत सुन्दर है। और ज़ार सुलतान की अपनी पत्नी भी उसके बराबर में खड़ी हुई है।

उसने उसको देखते ही पहचान लिया। उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसने आश्चर्य से कहा "क्या मैं सोते में सपना देख रहा हूँ?"

उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और उसने अपनी पत्नी को बड़े गर्व से गले लगा लिया। उसने अपने बेटे और उसकी पत्नी को

गर्व से चूमा। फिर वे सब खाना खाने बैठे। वहॉ तो उनकी हॅसी रोके नहीं रुक रही थी वे सब बहुत खुश थे।

केवल वह शाही खाना बनाने वाली, शाही कपड़ा बुनने वाली और उनकी चालाक धोखा देने वाली मॉ ये तीनों ही खुश नहीं थीं। तीनों वहॉ से भाग निकलीं और सीढ़ियों के नीचे जा कर छिप गयीं।

पर लोगों ने उनको उनके बाल पकड़ कर वहॉ से खींच लिया। रोते हुए उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और उनसे अपने जुर्म की माफी मॉगी।

ज़ार ने उनको माफ करते हुए उनको उनके घर भेज दिया। रात को सुलतान सो गया।

12 बदकिस्मत वासिली[95]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के एक प्रदेश में एक सौदागर रहता था जो किसी से भी सात सौ गुना अमीर था। इसका मतलब यह हुआ कि ज़ार के राज्य में किसी के पास भी इतनी सम्पत्ति नहीं थी जिसके साथ उसकी सम्पत्ति का मुकाबला किया जा सके।

वह जो भी कोई काम अपने हाथ में ले लेता वही काम उसका खूब चलता और उसे पैसा देता। ऐसा लगता जैसे वह सब सोने में बदल जाता। लोग उसको "अमीर मार्को"[96] कहते थे।

भगवान ने उसको कोई बेटा तो नहीं दिया था हॉ एक बेटी दी थी जो बहुत सुन्दर थी। उसने उसका नाम अनास्तासिया[97] रखा हुआ था। वह पॉच साल की थी।

हालॉकि उसके पास इतना पैसा था पर वह एक बहुत ही कंजूस और नीच किस्म का आदमी था। उसका दिल पत्थर का था। वह चर्च और गरीबों को बड़ी मुश्किल से कुछ दिया करता था। अगर कोई भिखारी उसकी खिड़की पर आ जाये तो वह उसको देख भी नहीं सकता था।

---

[95] Wassily the Unlucky. Taken from the book "Russian Wonder Tales" by George Post Wheeler. 1912. From the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Wonder_Tales
This story is given in the book "Russian Folktales" as "Mark the Rich" by Alexander Afanasiev translated in Hindi by Sushma Gupta in her book "Roos Ki Lok Kathayen-Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-5" as "Amir Mark"

[96] Marko the Rich

[97] Anasthasia – name of the daughter of the merchant

वह अपने नौकरों से कह कर उन पर शिकारी कुत्ते छुड़वा देता था। इस वजह से शहर के सारे लोग उससे डरते थे और उससे नफरत करते थे।

एक शाम की बात है कि तीन छोटे बूढ़े जिन्होंने फटे कपड़े पहने हुए थे जिनके सफेद लम्बे बाल थे और जिनकी सफेद लम्बी दाढ़ी थी रोटी और सोने की जगह माँगने के लिये उसकी खिड़की पर आये।

वह उनको देख रहा था तो जैसा कि वह करता था उनके ऊपर अपने कुत्ते छुड़वाने वाला ही था कि तभी उसकी बेटी अनास्तासिया वहाँ आ गयी और अपने पिता से उनको अन्दर बुलाने की इजाज़त माँगी। उसने कहा कि वे कम से कम घुड़साल में ही सो जायेंगे। उसके पिता ने बुड़बुड़ाते हुए उनको अन्दर बुला लिया।

वह उनके आगे आगे उनको रास्ता दिखाने के लिये भाग गयी। घुड़साल में पहुँच कर उसने उनके सोने के लिये साफ भूसे की जगह दिखायी और गुड नाइट कह कर वहाँ से आ गयी।

बच्ची सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही जाग गयी। वह बिस्तर से कूदी कपड़े पहने अपनी प्रार्थना कही और घुड़साल की तरफ भाग गयी। वह वहाँ जा कर ऊपर चढ़ कर नीचे देखने लगी।

उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे तीनों जो फटे कपड़े पहने गरीब भिखारी लगते थे गरीब भिखारी नहीं थे बल्कि वे

तो सिल्क ब्रोकेड[98] के कपड़े पहने हुए थे जैसे बिशप[99] लोग पहनते हैं और उनके सिरों पर ताज रखा हुआ था। उनके हाथों में अजीब सी किताबें थीं।

जब वह उनकी तरफ देख रही थी तो उनमें से एक आदमी ने कहा — "इस समय जो कुछ हो रहा है तुम इसके बारे क्या कहना चाहते हो।"

दूसरा बोला — "भाई। इस गॉव से दूसरे बराबर वाले गॉव में एक किसान रहता है जिसका नाम इवान है। उसके घर में बेटा पैदा हुआ है।"

पहला आदमी बोला — "हम उसको वासिली[100] नाम देंगे और लोग उसको बदकिस्मत पुकारेंगे। पर हम उसको विरासत में क्या देंगे?"

तो तीसरा बोला — "उसको हम अमीर मार्को की सारी सम्पत्ति देंगे जिसकी घुड़साल में आज हम लोग सोये हैं।"

यह कह कर उन्होंने कुछ पवित्र मूर्तियों के सामने प्रार्थना की और वहॉ से चले गये।

बच्ची तुरन्त ही घर भागी गयी अपने पिता को जगाया और उनको वह सब बताया जो वह अभी सुन कर और देख कर आ रही थी। सौदागर यह सुन कर बहुत परेशान हुआ।

---

[98] A very expensive cloth woven with gold and silver threads

[99] A very high rank Church Official

[100] Wassily – name of the son of Ivan – a farmer in the adjacent village

उसने अपने दूतों को उन तीनों बूढ़ों को लाने के लिये उनके पीछे भेजा पर उनका कहीं पता नहीं चला।

यह जानने की उत्सुकता में कि उनके कहे में कितनी सच्चाई थी उसने अपनी शानदार स्ले में शानदार घोड़े जुतवाये और तुरन्त ही पड़ोस के गॉव की तरफ चल दिया।

वहॉ पहुँच कर वह वहॉ के पादरी से मिला और पूछा कि क्या उस दिन उसके गॉव में किसी के कोई बच्चा हुआ है।

पादरी बोला — "जी हॉ। एक लड़का एक बहुत ही गरीब आदमी के घर पैदा तो हुआ है। मैंने खुद ने उसका नाम वासिली रखा है पर अभी उसका बैप्टाइज़ेशन[101] नहीं हुआ है। क्योंकि उसके पिता के बहुत गरीब होने की वजह से किसी ने उसके गौडफादर[102] होने की जिम्मेदारी नहीं ली है।"

अमीर मार्को बोला — "मैं लेता हूँ यह जिम्मेदारी।"

यह कह कर मार्को उस गरीब के घर गया खूब खाने पीने का आर्डर दिया और उनको बच्चे को लाने का हुक्म दिया। सो इवान और उसकी पत्नी बच्चे वासिली को ले कर आये। उसका बैप्टाइज़ेशन हुआ और फिर बहुत बड़ी दावत हुई। सबने खूब खुशियॉ मनायीं।

---

[101] Baptization is a ceremony by which a person is initiated into Chritian religion. It is like Upnayan (Janeoo) ceremony in Hindus.

[102] Godfather and Godmaother work as the child's parents in case they are not there.

अगले दिन मार्को फिर उस किसान के घर आया उससे बहुत नर्मी से बात की और उसको खुश करते हुए बोला — "ओ किसान। तुम तो बहुत ही गरीब हो। तुम्हारे पास तो परिवार को सँभालने के लिये कोई पत्थर या डंडी भी नहीं है। तुम अपने बच्चे की देखभाल कैसे करोगे। तुम इसे मुझे क्यों नहीं दे देते। मैं इसको ठीक से पालूँगा पोसूँगा और तुम्हारे रहने खाने के लिये एक हजार रूबल दूँगा।"

गरीब किसान ने बहुत सोचा फिर मार्को की बात मान ली। मार्को ने उसे एक हजार रूबल दिये बच्चे को उससे ले कर अपने लोमड़ी की खाल वाले कोट में छिपाया अपनी स्ले में बैठा और वहाँ से चला गया।

उन दिनों जाड़ा था। बहुत ज़्यादा ठंड पड़ रही थी। जमीन पर ऊँची ऊँची बर्फ पड़ी हुई थी। जब वे वहाँ से कई वर्स्त[103] की दूरी पर पहुँच गये तो अमीर मार्को ने स्ले रुकवायी बच्चे को अपने भरोसे के ड्राइवर को दिया और उससे उसे पास की गहरी घाटी में फेंकने के लिये कहा जहाँ से वे गुजर रहे थे।

ड्राइवर ने वैसा ही किया। सौदागर ने उस लाचार बच्चे को गहरी घाटी में फेंके जाते देखा और उससे हँसते हुए कहा — "ओ गरीब भिखारी के बच्चे अब तू यहाँ जा। अब तू मेरी सम्पत्ति लेने

[103] A Verst is an obsolete Russian measure of length, about 0.66 mile (1.1 km) about 500 Sazehn.

के लिये और उसे अपनी मर्जी के मुताबिक खर्च करने के लिये कैसे आता है मैं देखता हूँ।

इत्तफाक से तीसरे दिन सौदागरों का एक झुंड उसी रास्ते से गुजर रहा था। उनके ऊपर मार्को का कुछ पैसा उधार था सो वे उसी को देने के लिये मार्को के घर जा रहे थे।

जब वे उस जगह आये जहाँ से सौदागर ने बच्चे को फेंका था वहाँ आ कर उनको लगा कि उन्होंने किसी के रोने की आवाज सुनी है। यह सुन कर उन्होंने अपनी स्ले रोक ली और रुक कर यह निश्चय करने लगे कि वाकई उन्होंने ठीक सुना था या नहीं।

पक्का कर लेने के बाद उनमें से एक आदमी ने ड्राइवर को नीचे देखने के लिये भेजा। वह आदमी बेचारा ढालू पहाड़ी पर से होता हुआ नीचे गया तो वहाँ उसे लोमड़े की खाल में लिपटा हुआ एक बच्चा मिला जिसे वह ऊपर ले आया। वह ज़िन्दा था और ठीक था।

वे सौदागर उसको शहर ले आये और मार्को के घर ले आये।

बच्चे को देख कर अमीर मार्को ने सौदागरों से कुछ सवाल पुछने शुरू कर दिये। सौदागरों ने जब उसे बताया कि वह उनको एक घाटी में पड़ा मिला था तो मार्को तुरन्त ही जान गया कि वह बच्चा वही छोटा वासिली था – उसका गौडसन जिसे उसने घाटी में फेंक दिया था।।

उसने उस बच्चे को अपनी गोद में लिया और कुछ देर खिलाने के बाद अपनी बेटी को यह कहते हुए दे दिया — "यह ले अनास्तीसिया यह तेरे साथ खेलने के लिये है।"

फिर वह अपने मेहमानों के साथ आनन्द मनाने लग गया। जब वे सब खा पी चुके और वह बहुत ज़्यादा हॅसी खुशी की हालत में पहुॅच गये तो मार्को बोला — "तुम लोग बहुत अच्छे सौदागर हो। और इसमें भी कोई शक नहीं है कि तुम लोगों को बच्चों को भी कोई कमी नहीं है। तुम लोगों के तो अपने बच्चे ही काफी हैं।

तुम लोग इस बच्चे को मुझे दे दो यह मेरी बच्ची के साथ ही बढ़ कर बड़ा हो जायेगा। मैं इसको ठीक से पाल पोस दूॅगा।"

वह सौदागर जिसके पास यह बच्चा था पहले तो राजी नहीं हुआ पर जब मार्को ने उससे यह कहा कि अगर वह ऐसा करेगा तो वह उसका सारा कर्जा माफ कर देगा और दूसरों ने भी उससे कहा कि यह तो बहुत अच्छा सौदा है तो वह राजी हो गया।

इस तरह बच्चा फिर से मार्को के पास आ गया, अनास्तीसिया की खुशी के लिये। अनास्तासिया ने तुरन्त ही उसके लिये एक पालना मॅगवा लिया। उसमें नये कढ़ाई किये गये परदे लटकवा दिये और बच्चे की खुद देखभाल करने लगी। वह दिन हो या रात कभी उसको अपने से अलग नहीं करती थी।

एक दिन गुजरा दो दिन गुजरे तीन दिन गुजरे। तीसरी रात को एक तूफान आया। सौदागर मार्को तब तक इन्तजार करता रहा जब

तक उसकी बेटी सोती नहीं। जैसे ही वह ठीक से सो गयी उसने बच्चे को उठाया उसे एक खुली हुई नाव में रखा और उसे समुद्र में बहा दिया।

खैर तूफान चला गया। उसने नाव नहीं तोड़ी और नाव सही सलामत एक चट्टानी टापू के किनारे जा कर लग गयी।

उस टापू पर एक मोनैस्टरी थी। उस दिन उसी समय मौनेस्टरी का एक साधु समुद्र से खारा पानी लेने के लिये एक बालटी लिये आ रहा था। समुद्र में उसने एक नाव लगी देखी तो उसमें से बच्चे को निकाल कर वह अपने गुरू के पास ले गया। उसके गुरू ने उस बच्चे का नाम वासिली रख दिया।

उसके बाद उसने कहा — "क्योंकि हमने इसको इतनी खराब हालतों में पाया है तो हम इसको "बदकिस्मत" पुकारेंगे।"

सो उस दिन से बच्चा "बदकिस्मत वासिली" के नाम से जाना जाने लगा। जब तक वह अठारह साल का हुआ वह वहीं मौनैस्टरी में रह कर पलता बढ़ता रहा। उसने वहॉ रह कर लिखना पढ़ना और अक्लमन्दी सीखी।

सारे साधु उसको बहुत प्यार करते थे खास कर के मौनेस्टरी का गुरू। बाद में गुरू उसके ऊपर इतना विश्वास करने लगा कि उसने उसको मौनेस्टरी का सारा पैसा सौंप दिया। वह उस पर पूरी तरह से विश्वास करता था।

मार्को अपना कर्जा वसूल करने के लिये हर साल दूसरे राज्यों में जाया करता था। एक बार उसके जहाज़ ने इस मौनेस्टरी वाले टापू पर अपना लंगर डाल दिया। सौदागर मार्को ने अपनी रात यहीं गुजारी।

वहॉ लोगों ने उसके साथ वैसे ही बर्ता जैसा वह था यानी एक अमीर आदमी की तरह।

वहॉ के चर्च में बहुत सारी मोमबत्तियॉ जलायी गयीं। गुरू ने सब साधुओं को बुला कर उनसे पूजा करवायी। वहॉ उसको एक ऐसा नौजवान दिखायी दिया जो दूसरों से ज़्यादा आकर्षक और ज़्यादा जवान था।

उसने वहॉ के गुरू से उसका नाम पूछा तो उसने जवाब दिया "हम सब उसे बदकिस्मत वासिली कह कर पुकारते हैं।"

सौदागर बोला — "बड़ा अजीब सा नाम है। उसको ऐसा क्यों कहते हैं।"

इस पर गुरू ने उसको पाने की सारी कथा उसको सुना दी कि उसने सालों पहले एक खुली नाव में पाया था। सुनते ही मार्को समझ गया कि यह उसका अपना गौडसन है जिसको मारने की उसने दो बार कोशिश की पर वह दोनों बार बच गया।

उसने कुछ देर अपने नीच मन में सोचा जब तक पूजा खत्म नहीं हुई। पूजा खत्म होने के बाद उसने गुरू से कहा — "मेरी कितनी इच्छा है कि काश मेरे पास भी ऐसा एक सुन्दर होशियार असिस्टैन्ट

होता जैसा आपके पास है। मैं उसको तुरन्त ही अपना चीफ़ क्लर्क बना लेता और उसको अपना सारा काम सौंप कर उसे एक अमीर आदमी बना देता। क्या आप उसे मुझे नहीं दे सकते?"

गुरू बात को इधर उधर कर के बहुत देर तक सोचता रहा पर मार्को ने जिद कर के उससे जवाब मॉग ही लिया। आखीर में मार्को के पच्चीस हजार रूबल और मौनेस्टरी को दोबारा बनवा देने पर वह राजी हो गया।

मार्को बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। इस तरह से आपके इस बच्चे को मुझे दान में देने से इस मौनेस्टरी को यह मेरा एक तरह का दान हो जायेगा। मैं यह वायदा करता हूँ कि इसे भी एक अच्छा घर मिल जायेगा।"

गुरू ने सारे साधुओं से सलाह ली और यह तय पाया कि बच्चे को इसके साथ जाने देना चाहिये। उसने लड़के को बुलाया और उसको अपना फैसला बताया कि वह उसे इस सौदागर को देना चाहता था। सौदागर ने उससे कहा कि वह उसकी पत्नी के लिये एक खास चिट्ठी ले जाये क्योंकि उसको अभी और जगह भी जाना है।

मार्को ने जो चिट्ठी लिखी थी वह कुछ ऐसे थी — "मार्को की तरफ से उसकी पत्नी के लिये। जैसे ही यह चिट्ठी लाने वाला तुम्हारे पास पहुँचे तुम रसोईघर के पास एक बहुत बड़े बर्तन में पानी में कौस्टिक सोडा मिला कर उबालना और फिर उसे अपने पास

बुलाना। जब वह बर्तन के पास से गुजरे तब उसको उस पानी में धक्का दे देना ताकि यह मर जाये।

यह काम बिना किसी गलती के करना क्योंकि यह नौजवान मेरे लिये कुछ बुरा सोच रहा है। अगर तुमने यह नहीं किया तो तुम इसकी सजा से नहीं बचोगी।"

बदकिस्मत वासिली यह चिट्ठी ले कर मार्को के घर चला। उसने मौनेस्टरी के गुरू और साधुओं को ऑखों में ऑसू भर कर विदा कहा और अपने नये मालिक के काम पर चल पड़ा।

उसको समय ज़्यादा लगा या कम लगा। उसके लिये रास्ता लम्बा था या छोटा सड़क चिकनी थी या फिर बहुत खराब वह चलता रहा तो एक रात एक ऐसे जंगल में आ पहुॅचा जहॉ कोई आदमी नहीं रहता था। कोई बिल्डिंग भी नहीं थी सिवाय गाय रखने के लिये बनाये गये एक शैड के।

वह इस शैड में सोने के लिये घुस गया तो वहॉ उसको तीन भिखारी दिखायी दिये जिनके लम्बे सफेद बाल थे और लम्बी सफेद दाढ़ी थी।

उसने अपने खाने में से उनको भी कुछ खाने को दिया। बाद में वे सब बात करते रहे फिर सो गये।

सोते में वासिली ने एक सपना देखा कि वे तीन भिखारी भिखारी नहीं थे बल्कि बहुत ही शानदार ब्रोकेड के कपड़े पहने हुए थे। उनके सिरों पर ताज रखे हुए थे और उनके हाथों में एक अजीब सी किताब थी।

उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसको लगा कि उनमें से एक आदमी दूसरे से कह रहा है "भाई। यह नौजवान कहॉ जा रहा है।"

दूसरा बोला — "यह तो भाई अमीर मार्को के घर जाता है। यह तो सौदागर की एक चिट्ठी ले कर उसकी पत्नी को देने जा रहा है।"

पहले ने फिर पूछा — "उस चिट्ठी में क्या लिखा है।"

दूसरे आदमी ने कहा — "इस चिट्ठी में लिखा है कि इसको देख कर तुरन्त ही रसोई में एक बड़ा बर्तन भर कर सोडा डाल कर पानी उबालना और इसको उसमें डुबो देना ताकि यह मर जाये। इस कुकर्म को किस तरह से रोका जाये।"

तीसरा बोला — "मैं इसका सन्देश बदले देता हूॅ।"
कह कर उसने नौजवान की जेब से चिट्ठी निकाली और उस पर एक फूॅक मारी और बोला — "अब इसे निडर हो कर यह ले जाने दो क्योंकि भगवान इसको ऐसे ही नहीं छोड़ देगा। वह इसकी रक्षा अवश्य ही करेगा।"

बदकिस्मत वासिली ने सपने में यह सब सुना तो उसकी ऑखों में ऑसू आ गये उसने कहा "मैंने इस सौदागर का क्या बिगाड़ा है जो यह मेरी मौत चाहता है।"

पर जब वह जागा तो वह खुश था कि वह सब तो एक सपना ही था। तीनों बूढ़े वहॉ से पहले ही जा चुके थे। उसने अपनी जेब छू कर देखा तो चिट्ठी तो वहॉ रखी ही थी बस वह अमीर मार्को के घर चल दिया। वह मार्को के घर पहुॅचा और वह चिट्ठी ले जा कर मार्को की पत्नी को दी।

मार्को की पत्नी ने उसको खोला और पढ़ा अपनी बच्ची को भी सुनाया। उसकी बेटी तो वासिली को देखते ही प्यार करने लगी। मार्को की पत्नी ने बढ़िया खानों का शराब और बीयर का हुक्म दिया। घर की सफाई की उसे सजाया। अनास्तासिया को सुन्दर कपड़े और कीमती गहने पहनाये।

यह सब कर के उसने पड़ोसियों और पादरी को बुलाया। उसी दिन बदकिस्मत वासिली और अनास्तासिया दोनों की शादी हो गयी और उनको सुनहरा ताज पहना दिया गया।[104] वे मार्को के घर ही रहे। कुछ महीने बीत गये।

एक दिन खबर आयी कि सौदागर मार्को जहाज़ से घर वापस लौट रहा है। यह सुन कर मार्को की पत्नी बेटी और दामाद तीनों जल्दी से उससे बन्दरगाह पर मिलने के लिये पहुॅचे।

[104] A golden crown is used in the Greek marriage ceremony.

जब अमीर मार्को ने उनको देखा और उसे यह पता चला कि उसकी बेटी की शादी बदकिस्मत वासिलीसा से हो गयी है वह तो बहुत ज़ोर से गुस्सा हो गया।

उसने अपनी पत्नी को एक तरफ बुलाया और उससे पूछा कि उसने उसका हुक्म न मानने की हिम्मत कैसे की। उसने कहा कि उसने कुछ नहीं किया उसने तो बस वही किया जो उसने चिट्ठी में उसे लिखा था है।

यह कह कर उसने उसकी भेजी चिट्ठी उसको दिखा दी। उसको वह चिट्ठी देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। क्योंकि यह चिट्ठी तो वह चिट्ठी ही नहीं थी जो उसने लिखी थी और उससे भी ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह चिट्ठी उसी के हाथ की लिखी हुई थी।

उसको अपना गुस्सा पीना पड़ा। अब उसने यह प्लान करना शुरू कर दिया कि वह अपने दामाद को किसी तरह से मार दे।

वे एक साथ एक महीना रहे दो महीना रहे तीन महीना रहे। तब एक दिन अमीर मार्को ने बदकिस्मत वासिली को बुलाया और उससे तीसवीं जमीन जो सत्ताईसवीं जमीन[105] के उस पार थी जाने के लिये तुरन्त तैयारी करने के लिये कहा।

उसने कहा कि इस राज्य में एक ज़ार रहता है जिसका नाम ज़िमी[106] है। तुम उसके पास चले जाओ और उससे कहना कि वह

[105] Across three times nine countries to the 30th Realm

[106] Zmey named Tsar

मेरा बारह साल का किराया जो उसके ऊपर चढ़ा हुआ है वह दे दे। उसने उस जमीन के ऊपर महल भी बनवा लिया है जो मेरी है।

जब यह काम पूरा हो जाये तो मेरे बारह जहाज़ों के बारे में पता लगा कर लाना जो करीब तीन साल पहले खो गये थे और जिनकी अब तक कोई खबर नहीं मिली है। और हॉ देखो कल सुबह ही निकल जाना।"

जब अनास्तासिया ने यह सुना तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसने अपने पिता से वासिली को वहॉ न भेजने की भी कोशिश की पर सब बेकार।

सो अगली सुबह वासिली ने अपनी प्रार्थना की अपनी पत्नी को विदा कहा अपने थैले में बहुत सारे बिस्किट भरे अपने बढ़िया वाले घोड़े पर चढ़ कर अपनी यात्रा पर चल दिया।

रास्ता लम्बा था या छोटा, ज़ार ज़िमी का राज्य पास था या दूर था आखिरकार वह उसकी सीमा पर आ पहुँचा। यहॉ एक बहुत चौड़ी नदी थी जिसमें बूढ़े नाविक लोग नाव चलाया करते थे। वह उनमें से एक नाव पर चढ़ गया और उससे उसे दूसरी ओर ले जाने के लिये कहा।

नाविक ने पूछा — "मेरे दोस्त तुम उधर कहॉ जा रहे हो।"

वासिली बोला — "मैं ज़ार ज़िमी से मिलने जा रहा हूँ। मैं उससे वह पैसा मॉगने जा रहा हूँ जो उसने मेरे छोटे ससुर से उधार

ले रखा है। उसने मेरे ससुर की जमीन पर अपना महल भी बनवा रखा है तो उसका किराया भी।"

नाविक बोला — "ऐसे काम के लिये तो कोई तेज़ तर्राट आदमी चाहिये। खैर क्या तुम ज़ार ज़िमी से मेरा एक काम कराओगे।"

वासिली बोला "खुशी से।"

नाविक बोला — "जब तुम ज़ार ज़िमी के सामने पहुँचो और तुम्हें मौका मिले तो ज़रा उसको याद दिलाना कि तीस साल से उसने मुझे यह सजा दे रखी है कि मैं लोगों को नाव में बिठा कर यह नदी पार कराऊँ। मेहरबानी कर के उससे यह पूछना कि क्या मुझे इसी तरीके से तीस साल और काम करना पड़ेगा।

और अगर नहीं तो उससे पूछना कि इस काम से फिर मुझे कब छुट्टी मिलेगी। क्या तुम उससे मेरे बारे में यह बात मेरे लिये पूछोगे?"

वासिली ने उससे वायदा किया कि वह उसका यह काम जरूर करेगा। कुछ ही देर में वह समुद्र की एक धारा के पास आ गया जिसके दूसरे किनारे पर एक बहुत बड़ी व्हेल मछली अटकी पड़ी थी।

उसकी पूँछ पर बहुत बड़ा जंगल था और उसकी पीठ पर एक गॉव बसा हुआ था जिसके लोग खेती करने के लिये मछली के इधर

उधर जाया करते थे। वे लोहे का हल इस्तेमाल करते थे और उससे मछली की खाल निकाल लिया करते थे।

उसकी ऑखों के बीच में बच्चों ने अपना खेल का मैदान बना रखा था और उसकी मूँछों से बच्चियॉ मुशरूम चुना करती थीं।

वासिली उस व्हेल मछली पर चढ़ कर उस जगह को पार कर गया। उसके घोड़े के खुर मछली की हड्डियों पर तड़ातड़ बज रहे थे। जब वह इतनी बड़ी व्हेल को पार कर के दूसरी तरफ पहुँचा तब उसने अपना बड़ा सा मुँह खोल कर एक सॉस ली।

वह बोली — "भगवान करे तुम्हारी यात्रा कामयाब हो। तुम कहॉ जा रहे हो।"

वासिली बोला — "मैं ज़ार ज़िमी से वह पैसा वसूलने के लिये मिलने जा रहा हूँ जो उसे मेरे ससुर को देना है।"

व्हेल मछली बोली — "अगर तुम उससे पैसा वसूलने में कामयाब हो जाते हो तो तुम सचमुच में बहुत होशियार लड़के हो। क्या तुम ज़ार से मिलने पर मेरा एक काम करोगे।"

वासिली बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बोलो।"

व्हेल मछली बोली — "जब तुम उससे मिलो और तुम्हें मौका मिले तो उससे कहना कि मैं यहॉ इस हालत में तीन साल से पड़ी हुई हूँ जहॉ रास्ते पर चलने वाले घुड़सवार हो या पैदल चलने वाला सभी मेरे ऊपर चल चल कर मेरी हड्डियॉ तोड़ देते हैं।

मौका मिले तो उससे पूछना कि मेरी यह बेइज़्ज़ती वाली ज़िन्दगी तीन साल की ही है या अभी और भी है और अगर नहीं है तो मैं अपनी जगह पर तैरने कब जाऊँगी। क्या तुम मेरी यह बात उससे कहोगे?"

बदकिस्मत वासिली ने व्हेल मछली से उसकी बात कहने का वायदा किया और वहाँ से चल कर एक हरे घास के मैदान में आ गया। वहाँ एक सफेद पत्थर का घर खड़ा था।

उसके फाटक पर सुरक्षा के लिये कोई सन्तरी नहीं खड़ा हुआ था। उसके दरवाजे पर भी कोई चौकीदार नहीं था सो उसने बाहर घास के मैदान में घास चरने के लिये अपना घोड़ा छोड़ा और उस महल में अन्दर चला गया।

महल के अन्दर सब कुछ शान्त पड़ा था। वहाँ इसको कोई दिखायी नहीं दिया। वह एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता रहा। महल का हर दूसरा कमरा उसके पहले कमरे से ज़्यादा सुन्दर था।

आखिर में वह सबसे अन्दर के कमरे में आ गया। उसने देखा कि वहाँ एक सुन्दर लड़की एक काउच पर बैठी आँसू बहा रही है।

वासिली बोला — "ओ सुन्दर लड़की। भगवान तुम्हें तन्दुरुस्ती दे।"

लड़की बोली — "तुम्हें भी। पर तुम किस तरह के आदमी हो? तुम इस भयानक जगह पर कैसे आये? क्या तुम्हें पता नहीं कि यह

ज़ार ज़िमी का राज्य है? सॉपों के राजा का राज्य जो अपने हर खाने में एक आदमी खाता है।"

वासिली ने तब उसे बताया कि वह वहॉ क्यों आया है। सुन कर लड़की बोली — "अब क्योंकि तुमने मुझे पहले ही देख लिया है इसलिये मैं तुम्हें यह बता दूँ तुमको यहॉ पैसा लाने के लिये नहीं भेजा गया है बल्कि इसलिये भेजा गया है ताकि वह तुम्हें खा सके।

कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बचाऊँगी। पहले तुम मुझे यह बताओ कि तुम किस सड़क से यहॉ तक आये हो और तुमने अपने रास्ते में क्या देखा।"

वासिली ने उसे सब कुछ साफ साफ बता दिया कि पहले उसे कैसे एक नाविक मिला फिर कैसे व्हेल मछली मिली और कैसे उन दोनों ने उससे अपने को आजाद करने की बात की।

जब वे अभी बात कर ही रहे थे कि जमीन बड़ी ज़ोर से हिली। लड़की बोली "सॉपों का ज़ार ज़िमी आ रहा है। तुम तुरन्त ही छिप जाओ।"

कह कर उसने अपने पलंग के नीचे रखा हुआ एक बक्सा दिखाया। उसने उसको उसमें बन्द कर के उसका ढक्कन लगा दिया। फिर बोली "तुम वह सब सुनना जो कुछ भी वह मुझसे कहेगा।"

उसी समय ज़ार ज़िमी एक बहुत बड़े सॉप की शक्ल में उस कमरे में आ गया। वह आते ही बोला — "मुझे यहॉ एक रूसी आदमी की बू आ रही है। यहॉ कौन आया था।"

लड़की हॅसी और बोली — "क्या कोई रूसी महल के इस अन्दरूनी कमरे में आने की हिम्मत करेगा? लगता है कि तुम सारे दिन रूस की जमीन के ऊपर उड़ते रहे हो इसलिये तुम्हारी नाक में रूसी आदमी की बू बस गयी है। तुम खुद उसकी बू यहॉ ले कर आये हो।"

सॉपों का ज़ार यह सुन कर सन्तुष्ट हो गया। वह उसे चूमने लगा और उसके साथ खेलने लगा। फिर वह पलंग पर कुंडली मार कर बैठ गया और लड़की से बोला — "प्रिये मैं बहुत थक गया हूॅ। मेरे सिर की थोड़ी सी मालिश कर दो ताकि मैं सो जाऊॅ।"

सो वह उसके सिर की मालिश करने लगी। मालिश करते करते वह बोली — "मेरे प्यारे ज़ार। जब तुम यहॉ नहीं थे तो मैंने एक सपना देखा। सुनोगे।"

"हॉ हॉ।"

उसने उससे कहा — "मैंने एक सपना देखा कि मैं एक बहुत ही चौड़ी सड़क पर चल रही हूॅ। वह समुद्र से निकली एक धारा के ऊपर बनी हुई है। वहीं पर एक बहुत बड़ी व्हेल मछली पड़ी हुई है। इससे लोगों को वे चाहे पैदल हों या घोड़ों पर उन्हें उसके ऊपर से जाना ही पड़ता है।

उसने मुझसे पूछा कि वह यह सब दुख कब तक झेलती रहेगी। वह इससे कब आजाद होगी।"

ज़ार ज़िमी ने सोते हुए जवाब दिया — "वह वहॉ तब तक इसी हालत में रहेगी जब तक कि वह सारे और पूरे बारह जहाज़ नहीं उलट देगी जो उसने तीन साल पहले समुद्र के बीच में रहते हुए मेरी इजाज़त के बिना ही निगल लिये थे।"

लड़की आगे बोली — "इसके बाद मैंने अपने सपने में देखा कि मैं अब एक बहुत चौड़ी नदी के पास आ गयी हूॅ। वहॉ एक नाविक अपनी नाव में लोगों को बिठा कर नदी पार कराता है। जब उसने मुझे उस नदी को पार कराया तो मुझसे उसने पूछा कि उसे यह काम करते करते बारह साल बीत गये हैं वह यह काम कब तक करता रहेगा।"

ज़ार बोला — "उसको चाहिये कि वह जो भी उसकी नाव में पहला आदमी आये उसको ले ले और फिर खुद उस नाव से बाहर निकल कर उस नाव को नदी में धक्का दे कर बहा दे। इससे वह नया आने वाला आदमी उसकी जगह हमेशा के लिये वह नाव खेता रहेगा।"

और यह कहते कहते ज़ार गहरी नींद सो गया। कुछ ही देर में वह इतनी ज़ोर ज़ोर से खर्राटे मारने लगा कि महल की दीवारें कॉपने लगीं।

लड़की ने उठ कर बक्सा खोला और बदकिस्मत वासिली ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और महल से चला गया। उसने घास के मैदान से अपना घोड़ा लिया उस पर सवार हुआ और उसी रास्ते वापस चल दिया जिस रास्ते वह आया था।

जब वह समुद्र की धारा के पास आया और व्हेल मछली के ऊपर से जाने लगा तो उसने अपनी ऑखें खोलीं और वासिली से पूछा — "मेरे दोस्त क्या तुमने मेरे बारे में ज़ार से बात की?"

वासिली बोला "हॉ की।"

"तो फिर क्या कहा उसने?"

"पहले मुझे तुम्हें पार कर लेने दो उसके बाद ही मैं तुम्हें वह बात बताऊॅगा।"

जैसे ही वह दूसरी तरफ आया तो वह व्हेल की पूॅछ पर चढ़ गया और बहुत तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ गॉव वालों और रास्ता चलने वालो। तुम लोग अचानक ही चौंक न जाओ इसलिये मैं तुम्हें अभी बता रहा हूॅ तुम लोग इस व्हेल के ऊपर से तुरन्त ही उतर जाओ क्योंकि समुद इसे अब पूरा ढकने वाला है।"

यह सुन कर खेती करने वालों ने अपनी खेती छोड़ दी और चलने वाले जल्दी जल्दी चलने लगे। बच्चे और मुशरूम इकट्ठा करने वाले लोग अपने अपने घरों को चले गये।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने गाड़ी में अपना अपना सामान लादा और वहॉ से दूर चले गये। वह व्हेल मछली फिर वहॉ ऐसे पड़ी रही जैसे वहॉ अभी टार्टर्स आने वाले हों।

उसके बाद वासिली बहुत ज़ोर से बोला — "ओ व्हेल मछली। तू यह सब इसी लिये सह रही है क्योंकि तूने जब तू समुद्र में थी तब बारह पानी के जहाज़ बिना ज़ार की इजाज़त के साबुत के साबुत निगल लिये थे। अब तू इससे तभी आज़ाद होगी जब तू उन सभी जहाज़ों को साबुत और पूरे के पूरे बाहर निकाल देगी।"

ऐसा कह कर उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगायी और व्हेल की पूॅछ से किनारे से उस पार कूद गया। उसको जल्दी से वहॉ से भागना था क्योंकि उसने देखा कि व्हेल जहाज़ों को अपने पेट से बाहर निकालना चाह रही थी।

उन जहाज़ों के खेवट इस खुशी में कि वे फिर से दुनियॉ देख सकेंगे खूब बाजे बजा रहे थे बिगुल बजा रहे थे। उन्होंने अपने मस्तूल आदि सब ठीक कर लिये थे। उन्होंने हर मस्तूल पर एक झंडा लगा लिया था।

हर जहाज़ पर एक पादरी भगवान की प्रार्थना कर रहा था। हर जहाज़ पर खुशी का इतना शोर था कि सारा समुद्र जाग उठा था।

जैसे जैसे जहाज़ों ने व्हेल मछली के मुॅह से निकलना शुरू हुआ व्हेल मछली पानी में छपाके मारने के लिये आजाद होती गयी।

फिर वह पानी के नीचे से चिल्लायी — "ओ वासिली तुम्हें इसका बहुत बहुत धन्यवाद। बताओ मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ। मैं इसका बदला तुम्हें कैसे दूँ? क्या तुम कीमती मोती लोगे या फिर चमकीले रत्न लोगे जो जहाज़ पर जाने वाले लोग ले जाया करते हैं?"

वासिली बोला — "अगर तू मुझे कुछ देना ही चाहती है तो मुझे चमकीले रत्न दे दे।"

व्हेल समुद्र की तली में ऐसे चली गयी हो जैसे कोई चाभी चली जाती है और अपने मुँह में दबा कर एक छोटी से सन्दूकची ले आयी। उस सन्दूकची में ऐसे बहुत सारे रत्न थे जिनकी चमक और कीमत ऑकी नहीं जा सकती। वे दुनियॉ भर के सारे ज़ारों के खजानों से भी अच्छे थे।

तब बदकिस्मत वासिली ने एक जहाज़ के कप्तान से पूछा कि वह जहाज़ किसके हैं और किधर जा रहे हैं। कप्तान ने बताया कि वे जहाज़ अमीर मार्को के हैं। जब हम अपना सामान ले कर जा रहे थे तब इस व्हेल ने हमें निगल लिया था।

वासिली बोला — "तो लो यह सब रत्न भी तुम उन्हीं के पास ले जाओ। मैं उनका दामाद हूँ।"

वे तो उसको जहाज़ पर बिठा कर भी ले जाते पर उसने कहा कि वह उसका ज़ार ज़िमी के राज्य की सीमा पर इन्तजार करें। वह

वहॉ पहुँच कर ही उनके जहाज़ में बैठेगा। फिर वह उस नाव वाले के पास चल दिया जिस नाव से वह नदी पार कर के आया था।

वहॉ पहुँचा तो नाव के नाविक ने उससे पूछा — "ओ दोस्त क्या तुम मेरा कुछ काम कर के आये?"

वासिली बोला "हॉ।"

नाविक ने पूछा — "फिर क्या कहा उसने?"

वासिली बोला — "जब तुम मुझे इस नदी के पार छोड़ दोगे तब मैं तुम्हें बता दूँगा।"

सो उन्होंने नदी पार की और जब वासिली दूसरे किनारे पर आ गया तो वह उसके कोने पर चढ़ कर बोला — "ओ नाविक। जब कोई दूसरा यात्री इस नाव पर चढ़े तो तुम खुद उसमें से बाहर कूद जाना और उस यात्री को नाव सहित पानी में धक्का दे देना तब वह नया आदमी इस नाव को ज़िन्दगी भर चलाता रहेगा।"

और ऐसा कह कर वह उस नाव पर से कूद गया। अपने घोड़े पर सवार हो कर नदी के मुँहाने पर पहुँचा जहॉ अमीर मार्को के जहाज़ उसका इन्तजार कर रहे थे। वह अमीर मार्को के शहर पहुँचने के लिये एक जहाज़ पर चढ़ गया।

जब वे मार्को के शहर में जा कर रुके तो दूत मार्को से यह कहने के लिये दौड़े कि वासिली तो सही सलामत खोये हुए बारह जहाज़ों के साथ वापस आ गया है। वह उनमें इतने सारे रत्न भर

कर लाया है जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। यह सुन कर तो वह तो गुस्से से पागल हो उठा।

उसने अपने दामाद का ऊपर ऊपर से तो खुशी से स्वागत किया पर मन ही मन सोचा कि वह उसको फिर से ज़ार ज़िमी के पास भेजेगा। इस बार वह वहॉ से ज़िन्दा बच कर नहीं आ पायेगा। क्योंकि अबकी बार वह इससे पहले ही वहॉ जा कर सब मामला ठीक कर के आयेगा।

सो जैसे ही खुशियॉ खत्म हुई तो सौदागर ने अपने बाहर जाने के प्रोग्राम का ऐलान किया। उसने कुछ घोड़े और सवार बुलवाये और वहॉ से चल दिया।

वह लम्बे रास्ते चला वह छोटे रास्ते चला और आखीर में चौड़ी नदी के किनारे आ पहुॅचा और नाविक को नाव उस पार ले जाने के लिये कहा। जैसे ही वह नाव पर चढ़ा नाविक नाव में से कूद गया और नाव को नदी में धक्का दे दिया।

और चिल्ला कर बोला — "तुम जो कोई भी हो अब इस नाव को हमेशा के लिये खेने का जिम्मा तुम लो। अब तुम हमेशा के लिये यात्री लोगों को यह नदी पार कराते रहना।" यह कह कर वह खुशी खुशी वहॉ से चला गया।

अमीर मार्को को इस शाप के बारे में कुछ पता नहीं था। इस तरह से अमीर मार्को ज़ार ज़िमी के चंगुल में फॅस गया। वह हमेशा के लिये नाव से लोगों को नदी पार कराता रहा।

इधर इस तरह वासिली को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा। वह अपनी पत्नी अनास्तासिया के साथ बहुत दिनों तक हँसी खुशी रहा। वह हमेशा ही उसे बहुत प्यार करती रही। इस तरह से बदकिस्मत वासिली को अमीर मार्को की सारी सम्पत्ति मिल गयी।

List of Stories of “Folktales of Russia-1”

1. An Old Woman and a Small Fir Tree
2. A Fool and a Flying Ship
3. White princess and Seven Dwarves
4. Rumpelstiltskin
5. The Seventh Princess
6. Vasilissa the Wise and Baba Yaga
7. Ivan the Fool and the Magic Pie
8. The Animals' Revenge
9. Snowmaiden
10. Fenist the Falcon
11. Bella and the Bear
12. The Rosy Apple and the Golden Bowl
13. Firebird
14. The Frog Princess
15. The Greedy Old Woman

List of Stories of “Folktales of Russia-2”

1. How the Bee Got His Bumble
2. The Girl in the Moon
3. The White Duck
4. Sister Alyonushka and Brother Ivanushka
5. Marya Morevna
6. The Poor Man's Ruble
7. Creative Division: the Peasant and the Geese
8. The Tale of Cat Bayun or Freya's Chariot
9. Ruslan and Ludmila
10. The Tsarevnas of the Underground Kingdom
11. The Story of the Tsar Saltan
12. Wassily the Unlucky

Some Books of Russian Folktales in English

1873 Ralston, William Ralston Sheddon. **Russian Folktales.** 1873. 51 tales. https://archive.org/details/russianfolktales00ralsrich/page/n6/mode/1up

1903 Blumenthal, Verra de. **Folk Tales from the Russian.** NY : Core Collection Books. 1903. 9 tales. Its Hindi translation is available with Sushma Gupta https://www.gutenberg.org/files/12851/12851-h/12851-h.htm

1974 Riordan, James. **Mistress of the Copper Mountain** : folktales from the Urals.

1976 Riordan, James. **Tales from the Central Russia : Russian tales**. Kestrel. 1976

1979 Riordan, James. **Tales from the Tarter.** 1979.

1980 Chandler, Robert (tr). **Russian Folk-tales.** Random House. 1980.

1985 Raduga Publishers. The Three Kingdoms. Moscow " Raduga Publishers. 1985. 34 tales. https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/61r.pdf

1985 Riordan, James. **Russian Gypsy Tales.** 1985.

2000 Riordan, James (tr). **Russian Folk-tales.** OUP. 2000.

2020 Riordan, James. **The Sun Maiden and the Crescent Moon : Siberian Folk Tales.** Interlink Books. 2020. 224 p.

Some Books of Russian Folktales in Hindi

1960 Pragati Prakashan. **Roosi Lok Kathayen.** New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 1960. 160 p. https://www.scribd.com/doc/110410668/roosi-lok-kathayein-Russian-Folk-Tales-Hindi

2010 People Publishing House. **Heere Moti – Soviet Bhoomi Ki Jatiyon Ki Lok Kathayen.** New Delhi: Peoples Publishing House (Pvt) Limited. 2010. 143 p. https://archive.org/details/HeereMoti-Hindi-CollationOfSovietFolkTales

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Lok Kathayen-1.** Collection of tales.

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Lok Kathayen-2.** Collection of tales.

2022 Gupta, Sushma. **Roos Ki Baba Yaga.** Collection of tales of Baba Yaga

Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series

No 5 Gupta, Sushma (tr). "Russian Folktales" by Alexander Afanasiev. Translated by Magnus. 1916. 73 tales.

No 6 Gupta, Sushma (tr). "Folktales From the Russian" by Verra Blumenthal. 1903. 9 tales

No 26 Gupta, Sushma (tr). "Russian Garland" by Robert Steele. 1916. 17 tales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2021

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022